आदिवासियों के घोटुल

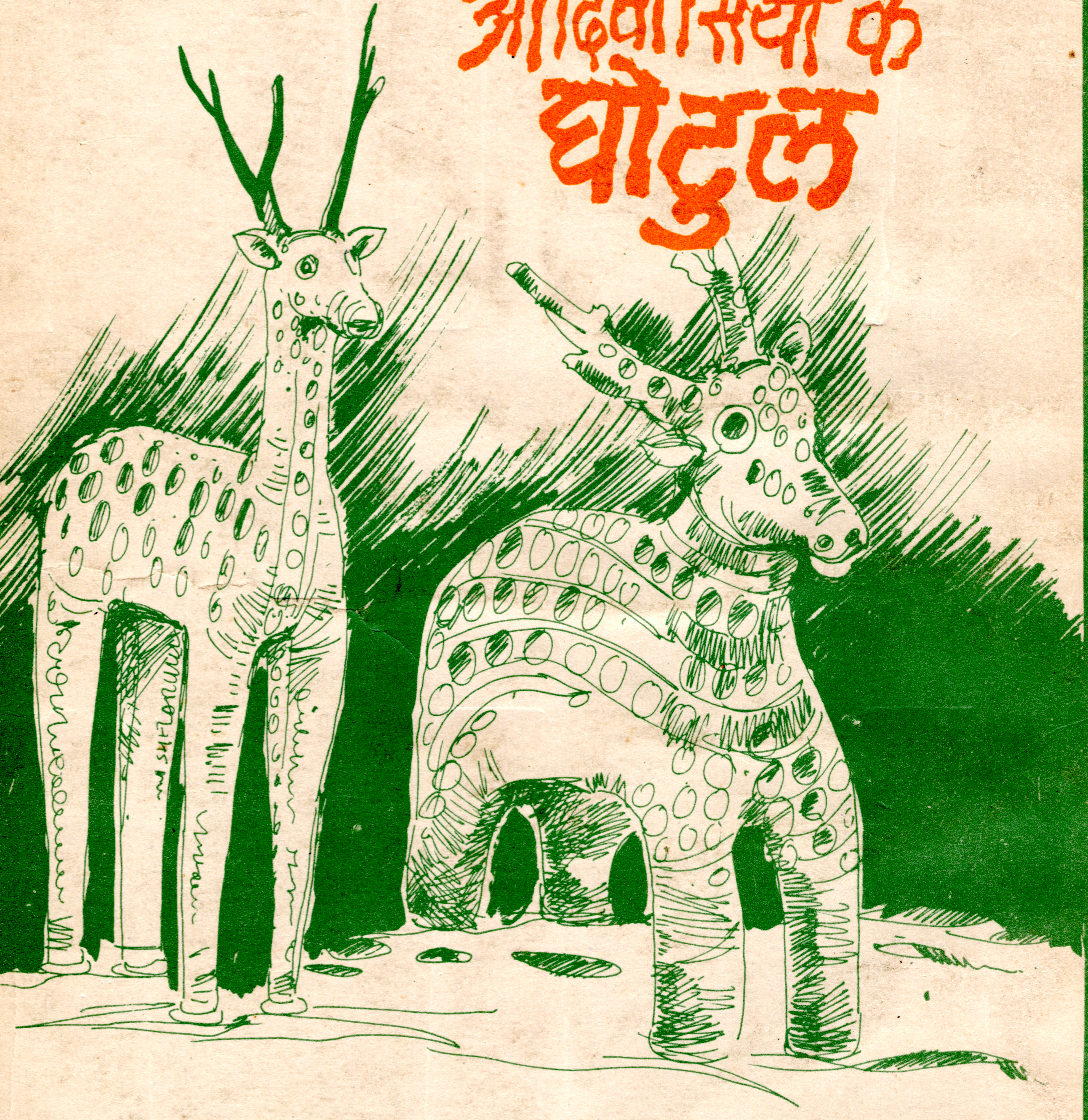

आदिवासियों के घोटुल

लेखक
डा. नारायण चौरे

सम्पादक
चन्द्रशेखर गुप्त
विभागाध्यक्ष,
प्रा.भा.इ.सं.पुरातत्त्व विभाग,
नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर- 440012

306.08954
चौरेना आ
14719

आदिवासियों के घोटुल

लेखक- डा. नारायण चौरे

सम्पादक
डा. चन्द्रशेखर गुप्त

प्रथम आवृत्ति : १९९४

मूल्य
पेपर बैक संस्करण रु. ३० =००
पुस्तकालय संस्करण रु. ६० =००

प्रकाशक
आर.बी. सिंह, विश्वभारती प्रकाशन,
धनवटे चेंबर्स, सीताबर्डी, नागपुर-१२.

अक्षर मेल
अभय हरसुलकर
इन्स्टिटयूट ऑफ कॉम्प्यूटर टेक्नालॉजी
धनवटे चेंबर्स, सीताबर्डी, नागपुर - १२

मुद्रक
श्री. गोपाल भाई, अविनाश आर्ट,
रिसालदार लेन, महल, नागपुर

सम्पादकीय

गोटुल/ घोटुल परम्परा

हमारे आदिवासी समाज की विविध पक्षीय संस्कृति के आकलन तथा उनकी समस्याओं के निरूपण की पहल अंगेजों द्वारा ही हुई। आदिवासियों को अरण्यवासी, वनवासी इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है क्योंकि मूलतः वे वन-प्रदेश में ही रहते थे जहाँ नागरी संस्कृति की पैठ नहीं थी। प्राचीन काल से ही नागरी और अरण्य संस्कृतियों में संघर्ष चलता आया है, जिसकी साक्ष्य हमें सब से प्राचीन ग्रन्थ **ऋग्वेद** से मिलती है। वैदिक ऋषियों ने अरण्यों में आश्रम अवश्य स्थापित किये, किन्तु उनका इन अरण्यवासियों से बहुत कम तालमेल बैठ पाया। हाँ कुछ इक्का-दुक्का उदाहरण जरूर हमें प्रायः सभी प्रमुख कालों में मिल जाते हैं जिनका आधार लेकर कहा जाता है कि दोनों संस्कृतियों में सौहार्द-सम्बन्ध थे। इन उदाहरणों में वृत्र, शबरी, गुह से लेकर मध्यकाल तक के कई पात्र गिनाये जा सकते हैं, परन्तु कुछ अपवादों को छोड़ दें तो यही स्पष्ट होता है कि नागरी संस्कृति ने अरण्यवासियों का शोषण ही किया है। उनकी संस्कृति के उज्जवल पक्षों को उजागर करने की बात ही नहीं थी। इस दृष्टि से अध्ययन करने में जिन अंग्रेज नृतत्त्वशास्त्रियों ने प्रमुख कार्य किया उनमें वेरियर ऑलविन प्रमुख थे, जो बाद में भारत सरकार के नतृत्त्व सलाहकार भी बने।

गोटुल/घोटुल आदिवासी समाज की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्था है जो आदिकाल से चलती आयी। हाल ही में समाचार-पत्रों में पढ़कर दुःख हुआ कि बस्तर जिले का अन्तिम घोटुल भी दम तोड़ गया। अब घोटुल संस्था के दर्शन अथवा प्रत्यक्ष अध्ययन का अवसर सम्भव नहीं। अब तक जो भी लेखा-जोखा इसका प्रकाशित हुआ है वही भविष्य में अध्येताओं का आधार बनेगा। इस दृष्टि से निस्सन्देह सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण अध्ययन वेरियर ऑलविन का **'मुरिया एण्ड देअर घोटुल'** है जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा १९४७ में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात कई भारतीय नृतत्वशास्त्रियों तथा अन्य विद्वानों ने इस विषय पर कार्य किया है। इनमें भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (Anthropological Survey of India) के कर्मचारियों का कार्य उल्लेखनीय है। सर्वेक्षण ने इस विषय पर कई लेख तथा पुस्तकें प्रकाशित की हैं। नागपुर के हिस्लॉप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.टी.एस.विल्किसन ने भी इस संस्था पर गहन अध्ययन कर अपना शोध प्रबन्ध लिखा है। हिन्दी में कुछ लेख मात्र अब तक छपे थे, जिनमें घोटुल का परिचय कमोबेश दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के रूप में पहली बार कुछ विस्तार से घोटुल जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर सामग्री प्रकाश में आयी है यह उल्लेखनीय है।

पुराने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित **श्री रविशंकर शुक्ल के अभिनन्दन ग्रन्थ** (मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागपुर १९५५) के 'विविध खण्ड' में श्री राजेन्द्रप्रसाद अवस्थी 'तृषित' (कादम्बिनी के श्री राजेन्द्र अवस्थी) ने "मध्यप्रदेश के वनवासी" (पृ. ३६-४०) शीर्षक से वनवासियों का परिचय देते हुए घोटुल की चर्चा की है

(पृ. ४२-३) गोटल/घोटुल शब्द की व्युत्पत्ति गोष्ठकुल तथा गोकुल से निष्पन्न हुई प्रतीत होती है। यह सुझाव प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. ए.सी.सरकार (?) ने दिया तथा डॉ.हीरालाल शुक्ल ने अन्यान्य प्रमाणों से पुष्ट किया है। (डॉ. शुक्ल, **लंका की खोज**, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७७, पृ. २७२ ई.। डॉ. शुक्ल द्वारा उल्लिखित संदर्भ सही नहीं है। **इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली**,'मार्च १९४८ के अंक में डॉ. वेरियर ऑलविन की पुस्तक **'मुरिया एण्ड देअर घोटुल'** की ए.सी. सरकार द्वारा समीक्षा मुझे नहीं मिली जिसका उल्लेख डॉ. शुक्ल ने किया है।) डॉ. शुक्ल ने "घोटुल-संस्कृति बनाम गोकुल-संस्कृति" शीर्षक लेख में (**महाकोसल**, दीपावली-विशेषांक, रायपुर, १९७२) प्रतिपादित किया कि डॉ.वेरियर ऑलविन ने घोटुल को विकृत रूप में प्रस्तुत किया है जबकि घोटुल एक प्राचीनतम सामाजिक संस्था है। उन्हीं के शब्दों में-"मुरिया और उनके घोटुल पर एल्विन की पुस्तक (**मुरिया एण्ड देअर घोटुल**) इस शताब्दी में अत्यधिक चर्चित रही है। घोटुल नृतत्त्वशास्त्रियों के लिए एक सम्मोहन का विषय रहा है, किन्तु उसके उद्भव और विकास पर उनकी दृष्टि नहीं गयी। सभी विद्वान एल्विन के ग्रन्थ से ही सामग्री लेकर तद्विषयक विचार करने के अभ्यासी हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस शताब्दी में एल्विन के समान आदिवासी संस्कृति का चितेरा कोई अन्य विद्वान नहीं हुआ, किन्तु यह भी नहीं भूलना होगा कि आदिवासी-संस्कृति को तोड़-मरोड़ कर उसे जितनी विकृत अवस्था में एल्विन ने प्रस्तुत किया है, उतना अन्य किसी ने नहीं किया। यही कारण है कि एल्विन व उसके अनुयायी विद्वान घोटुल को एकमात्र यौन अनुभूति का संस्थान मानते रहे हैं तथा इनके ऐसे कथनों से घोटुल-संस्कृति का उज्जवल पक्ष विद्वानों के सम्मुख नहीं आ सका।"

(**लंका की खोज**, पृ. २६८-२६९।)

डॉ.हीरालाल शुक्ल ने महाकाव्यों और संस्कृत साहित्य के 'गोष्ठी'की चर्चा करते हुए घोटुल को 'गोष्ठी या गोष्ठकुल का सहजरूप में अवशेष' प्रतिपादित किया है। गोष्ठी का उल्लेख **रामायण** तथा **महाभारत** महाकाव्यों के अतिरिक्त **कामसूत्र, शब्दकल्पद्रुम, वाचस्पत्यम्**, प्रभृति साहित्यिक कृतियों में मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि यह विद्वान, सुशिक्षित लोगों के मनोरंजन का एक प्रकार था। इसमें विविध साहित्यिक प्रकार के आयोजनों यथा-काण्यसमस्या, साहित्य-चर्चा इ. के अतिरिक्त चौंसठ कलाओं तथा क्रीडाओं का आयोजन होता था। इस सन्दर्भ में डॉ. शुक्ल ने **रामायण** में वर्णित गृहातिगृहक, क्रीडागृहक तथा कूटागार नामक आमोद-गृहों का उल्लेख किया है जो प्रायः बस्ती से दूर स्थित होते थे तथा जहाँ क्रमशः राजा और राज-अधिकारी, युवक और युवतियाँ जाती थीं। किन्तु ये स्पष्टतः गोष्ठों से भिन्न प्रकार के केन्द्र थे जो समाज के उच्चवर्ग के लिए ही होते थे।

गोष्ठी इसके विपरीत सभी -स्त्री पुरुषों- के लिए होती थी। गोष्ठकुल और घोटुल के समीकरण की दृष्टि से यह भी उल्लेखनीय है कि रामायण के उल्लेखानुसार गोष्ठकुलों में 'चेलिका' नामक एक विशेष वाद्य बजता था और इन क्रीडागृहों में 'मण्ड' (म

'सौवीरक' नामक पेयों का प्रयोग होता था। इन संज्ञाओं को क्रमशः चेलिक, मड़ेया और सौपी से डॉ. शुक्ल ने समीकृत किया है। चेलिक घोटुल के पुरुष सदस्य को कहते हैं। सौवीरक, सौवीर प्रदेश की मदिरा विशेष हो सकती है अथवा सुल्फी नामक मादक पेय जो तन्नामक वृक्ष से रस निकालकर बनाया जाता है ताड़ी की भांति। अथवा यह सौंफ से बनी शराब भी हो सकती है।

चेलिक, पुराणों में तोसल, कोसल और त्रिपुर के साथ चैल्लिक नामक जनपद की भी चर्चा है (**तोसला कोसलाश्च त्रैपुराश्चैल्लिकास्तथा**) जो बस्तर (वस्त्र का अपभ्रंश रूप जो चैल से निकले चैलिक शब्द का समानार्थी है) से अभिन्न प्रतीत होता है। छत्तीसगढ़ में (घोटुल की) युवती सदस्या को 'मोटियार' कहते हैं जो इसी रूप में और इसी अर्थ में पंजाबी भाषा में भी पाया जाता है। इसका क्या कारण है कहना कठिन है। प्रसंगवश एक बात और! छत्तीसगढ़ और पंजाब (हिमाचल प्रदेश सहित) के अधिकांश स्थाननामों में एकरूपता है जैसे बिलासपुर, रायपुर, इत्यादि।

जैन ग्रंथ **बृहत्कल्पसूत्रभाष्य** (खण्ड ४,श्लो. ३४४६.७) में तोसली की 'बिजघरनसाला' से जैन मुनियों को दूर रहने का निर्देश दिया गया है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने डॉ.वेरियन आलविन द्वारा जिज्ञासा किये जाने पर इस विषय में सुझाया था कि तोसली (जिसे उन्होने बस्तर राज्य से समीकृत किया था) की 'बिजघरनसाला' एक बड़ी झोंपड़ी होती थी जो गांव के मध्य बनायी जाती थी और जिसमें हर समय अग्नि प्रज्ज्वलित होती रहती थी। यहाँ विवाहबद्ध होने युवक-युवती आते थे। यहाँ तोसली की पहचान उड़ीसा राज्य के धौली नामक स्थान से करना उचित है। यह भुवनेश्वर के निकट स्थित है। यहाँ से प्राप्त अशोक के अभिलेख में कलिंगदेश की राजधानी के रूप में तोसली का उल्लेख मिलता है।

गोटुल/घोटुल की उत्पत्ति आदिवासियों में प्रचलित मान्यतानुसार लिंगो देवता ने की थी। इसका उद्देश युवक-युवतियों को संस्कारवान बनाना और अन्ततः वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर समाज के योग्य सदस्य की जिम्मेदारी निबाहने लायक बनाना है। इस संस्था को मात्र निर्बन्ध यौनाचार का केन्द्र मानना इसके साथ अन्याय करना है। लंदन की ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन द्वारा बस्तर के घोटुल का विशेषतः रात्रिकालीन दृश्यों का- फिल्मांकन और प्रदर्शित करने पर कुछ वर्षों पूर्व काफी हंगामा बरपा हुआ था। अच्छा होता इस संस्था का संपूर्ण स्वरूप उजागर करती फिल्म भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण तैयार करता? अब भी प्रयत्न किया जा सकता है। हो सकता है धूर अबूझ जंगल में अब भी एकाध गोटुल बच गया हो अथवा पुनः चालू करने कोई राजी हो जाये।

- प्राचीन काल में जब पशु (गो) ही सबसे बड़ी सम्पदा थी, तब उनकी सुरक्षा हेतु गाँव के मध्य बाड़े बनाये जाते थे जिनकी रक्षा हेतु युवा नियुक्त होते थे। यहीं युवतियाँ भी अपने प्रिय से मिलने पहुँच जाती होंगी। इस पर समाज के मुखियाओं ने इन गोठों को एक महत् उद्देश्य से एक विशिष्ठ रूप दे गोष्ठकुल संस्था स्थापित की होगी जो गोकुल,

गोत्र प्रभृति में परिवर्तित होती गयी। आर्ष समाज को आरम्भ में सगोत्र विवाह मान्य थे पर बाद में वर्जित कर दिये गये। यह तथ्य इसी प्राचीन व्यवस्था का परिचायक है।

मराठा काल में इस संस्था को बहुत हानि पहुँची। छत्रपति शाहू के काल में पेशवा और मराठा सरदार शक्तिशाली बने। चार प्रमुख मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र के बाहर राज्य जमाने और चौथ (महसूल का चौथाई भाग) वसूलने का बीडा उठाया। भोंसला नागपुर में पैर जमा कर छत्तीसगढ़, बस्तर और उड़ीसा, बंगाल तक बढ़े। इस मराठा सेना ने घोटुलों को अपने विलास केअड्डों में बदल डाला। इसी का परिणाम घोटुल की पारिभाषिक शब्दावली के रूप में दृष्टिगत होता है। उदाहरणार्थ- घोटुल के मुखिया के लिए प्रयुक्त शब्द 'सिरेदार' जो 'शिलेदार' (फारसी-सिलाहदार)का ही विकृत रूप है। इसका प्रयोग उस घुड़स्वार सैनिक के लिए होता था जिसके पास अपना घोड़ा होता था।

अब जब गोटुल/घोटुल संस्था नामशेष हो गयी है, ऐसे अध्ययनों की आवश्यकता और बढ़ जाती है जिनमें इसका प्रामाणिक और विस्तृत विवेचन हो। इस दिशा में एक कदम के रूप में प्रस्तुत प्रयास प्रशंसनीय है यद्यपि इसमें कई त्रुटियाँ अनायास आ गयी हैं। आशा है हिन्दी जगत में इसका समुचित स्वागत होगा। पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस सम्बन्ध में अपने सुझाव लेखक अथवा सम्पादक को भेजे जिससे अगले संस्करण में उस दृष्टि से सुधार किया जा सके।

चन्द्रशेखर गुप्त
विभागाध्यक्ष
प्रा.भा.इ.सं.पुरातत्व विभाग,
नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

२७ अप्रैल १९९२
नन्दभवन,
नई शुक्रवारी,
नागपुर ४४० ००२

अपनी बात

रिसर्च कार्य के अन्तराल में जब मुझे एक बार फिर आदिवासी क्षेत्र का दौरा करना पड़ा, तब बचपन की मधुर स्मृतियां एक एक कर चलचित्र की तरह सामने आने लगी। कैसा घोटुल, कैसे आदिवासी और कैसा उनका रहन-सहन, नृत्यगान, कैसे कथा-कहानियां। सब बीते दिनों की याद दिलाने लगते। उस समय यही कोई बारह या तेरह वर्ष की अवस्था होगी और मैं कक्षा ७वीं-८वीं में पढ़ता था। मामा उस समय पुलिस आफिसर थे, जिनके साथ मैं अक्सर दौरे पर जाया करता था, वहां हमें थानागुड़ी (विश्रामगृह) में ठहराया जाता, और नृत्य दिखाया जाता। उनमें हाव भाव की भंगिमाओं की याद ताजा बनकर रह गई। कुछ दिनों बाद एक बार फिर मुझे एक ग्रामसेवक के साथ नृत्य देखने का अवसर मिला। मैं उनके साथ चार घंटे पैदल चलकर उनके गांव गया। वही ग्रामसेवक अब रेवन्यू इंसपेक्टर पैगांप माखन (खंडवा)में श्री पाठक के नाम जाने जाते हैं। इन सब स्मृतियों को संजोकर मस्तिष्क में एक कल्पना आयी कि क्यों न "घोटुल" पर कुछ लिखा जाये। परन्तु यह सोचकर विचार स्थागित कर दिया कि इसे फिर कभी लिखा जायेगा। कारण उस समय मेरी पी.एच्.डी. की तैयारी चल रही थी। कहीं गाइड़ महोदय नाराज नहीं हो जाये कहेंगे आए थे- "हरिनाम को ओटन लगे कपास" कहां तो थिसिस "जनजाति प्रथा कत्य" पर लिखना और कहां लिखने का विचार घोटुल पर आया। तब मैंने लिखना स्थगित कर दिया।

सन् १९७३ से १९७९ तक लगातार अध्ययन कर पी.एच्.ड़ी. की उपधि प्राप्त की और फिर मैंने स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य प्रारंम्भ किया। इस बीच सन् १९८१ में निमाड़ के प्रसिद्ध साहित्यकार श्रद्धेय दादा श्री रामनारायण उपाध्याय जी से भेंट हुई और उन्हें अपने साहित्य से अवगत कराया, उन्होने मेरा साहित्य पढ़ा और प्रकाशकों से परिचय करा कर एक के बाद एक चार पुस्तकें मेरी प्रकाशकों के पास भेज दी। इस बीच उनके साथ खुलकर चर्चा की। इस चर्चा के दौरान मैंने उन्हें "घोटुल" के बारे में बतलाया, तब मुझे उन्होने इस पर लिखने की प्रेरणा दी,.बस यही प्रेरणा मेरे लिए सार्थक सिद्ध हुई।

घर आकर घोटुल से संबंधित साहित्य लिखने बैठ गया, प्राप्त तथ्य तो थे ही, केवल उन्हें जमाना भर था इस बीच वाचनालय से मुझे राजेन्द्र अवस्थी की पुस्तक "जंगल के फूल" पढ़ने को मिली जिसने मेरे मन को बहुत ही भावुक बना दिया। पुस्तक लिखने में एवं संकलित तथ्यों को एकत्रित करने में मैं अपनी धीमी गति से काम कर रहा था, वही इस पुस्तक ने मेरे मन को जागृत कर दिया और मन में ठान लिया कि किसी भी सूरत में "घोटुल" पुस्तक लिखना है, बस लिखना है।

इसी संकल्प को लेकर मैंने अपने पूज्य गुरु श्रदेय डा. पी. के. सक्सेना असिस्टेंन्ट प्रोफेसर माधव कालेज, उज्जैन का स्मरण कर दीपावली अवकाश में लिखने बैठ गया। कब दिन बीता, कब रात बीती, कब दीवाली आई, कब फटाके फूटे, कब निमंत्रण पत्र आए, इसका मुझे भान ही नहीं, सब एक-एक कर धड़ाधड़ बीतते गए, पर मेरी लेखनी

थमी नहीं, और आखिर "घोटुल" पर अवलोकन पद्धति केआधार पर, संकलित तथ्यों पर सब संग्रहित सामग्री क्रम से लिख दी।

पुस्तक तैयार होने पर जब पाण्डुलिपि मैंने श्री उपाध्याय जी को दी तो उन्होंने पूछा चौरे जी काफी दिन हो गए मिले भी नहीं, दीवाली की शुभकामना भी न कही उन्हें मैं क्या बतलाता की उनके ही गृहनगर खंडवा केएक कमरे में बैठे-बैठे मैंने दीवाली घोटुल की पुस्तक लिखने में पूरी की।

प्रस्तुत पुस्तक को लिखने में जिन व्यक्तियों ने सहयोग दिया उनमें सर्वप्रथम मेरे गुरु डा. पी. के. सक्सेना उज्जैन, श्रद्देय दादा रामनारायण उपाध्याय, दरबा विकास खंड तहसील जगदलपुर जिला बस्तर के विकास अधिकारी श्री व्ही. आर. डोंगरे, एवं घोटुल केउन सब आदिवासी युवक-युवतियां प्रमुख हैं, जिनके सहयोग से मैं यह पुस्तक लिखने में सफल हुआ। विश्वास करता हूँ कि यह पुस्तक पाठक वर्ग केमन को भा जायेगी। सादा जीवन उच्च विचार की झलक इस पुस्तक में पाठक वर्ग को मिलेगी। कैसे मन को मार लेना, कितना धीरज रखना, कैसे कठिन परिस्थितियों में भी भूखे रहकर नृत्य गान में सम्मिलित होना, कौन कह सकता की यह नर्तक अभावों से ग्रस्त है आदि सब घटनाएं आपको पुस्तक में पढ़ने को मिलेगी।

अंत में, मैं प्रकाशक महोदय श्री आर. बी. सिंह का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिनके सदप्रयास से प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन सुन्दर मुद्रण में हो सका और उन्होने पुस्तक की साज सज्जा तैयार की। बस पुस्तक आपके हाथ में है यदि प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने के बाद, आपकेभावों में आदिवासी भाइयों के प्रति किंचित् भी प्रेम, दया, ममता की भावना जागृत हुई तो मैं अपने आपको पुरस्कृत समझूंगा। बस अब यही तमन्ना है कि आदिवासी भाइयों को पाठक वर्ग अपना ले। ये आदिवासी भाई कोई गैर नहीं अपने ही भाई हैं। हम आगे बढ़गए वे पीछे रह गए। आवो इन्हें हम अपना ले।

धन्यवाद!

लेखक
नारायण चौरे
मूंदी (खंडवा) (म.प्र.)

प्राक्कथन

"आदिवासियों के घोटुल" पुस्तक का अध्ययन मूलतः बस्तर के मूल निवासियों का अध्ययन है, जो जनकल्याण, नृतत्वशास्त्र के अध्ययन के लिए अति महत्वपूर्ण है। इन मूल निवासियों में मारियां, मूड़िया, गौड़ बैंगा जनजातियां निवास करती हैं। जिनकी अनेकानेक सामाजिक प्रथाएं प्रचलित हैं। इन सामाजिक प्रथाओं में "घोटुल प्रथा" का भी अपना एक विशेष स्थान है। इस प्रथा के तहत किशोरावस्था की देहलीज पर कदम रखते ही गांव के युवक युवतियां घोटुल में जाने लगते हैं जहां उनको अनुशासन की, कर्तव्यनिष्ठा की, शिक्षा दी जाती। इसके साथ ही जीवन-साथी का चुनाव करने की इन्हें छूट दी जाती। सच पूछा जाये तो घोटुल किशोर-किशोरियों का एक मनोरंजन केन्द्र है। घोटुल गांव से दूर बसा एक मिट्टी, गारे, लकड़ी, पत्थर, घासफूस का बना एक कच्चा घर है जहां किशोर किशोरियां अपनी रातें व्यतीत करते हैं। नृत्यगान, कथा-कहानियों के माध्यम से वे अपने जीवन में कुछ सीखते हैं जिन्हें भावी जीवन में चरित्रार्थ करते हैं।

शोध अध्ययन के दौरान जिन घोटुलों का अध्ययन किया उसमें बस्तर के देवगांव के घोटुल, नारायणपुर का घोटुल, अबुझमाड़ का घोटुल, तारागांव का घोटुल प्रमुख हैं। ये सभी गांव बस्तर जिले में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त अन्य समीपस्थ घोटुलों का अध्ययन भी किया परन्तु उनकी कार्य प्रणाली प्रायः एक जैसी लगी इसलिए अध्ययन कार्य यहीं तक सीमित रखा।

देवगांव का घोटुल बस्तर जिले की नारायणपुर तहसील में है। रामपुर जगदलपुर रास्ते पर जगदलपुर से लगभग पचास किलोमीटर पर कोण्डागांव पड़ता है पश्चात कोण्डागांव से आठ किलोमीटर आगे ही नारायणपुर है। नारायणपुर से प्रायः छै-सात किलोमीटर की दूरी पर देवगांव आता है। नारायणपुर तक तो रास्ता पक्का है। परन्तु देवगांव तक का रास्ता एकदम उबड़ खाबड़ है। धूल उड़ती-सी नजर आती है। कच्ची गिट्टी की सड़क के साथ ही ऊंचे नीचे रास्ते हैं जिन्हें चढ़कर, उतरकर वहां तक पहुंचना पड़ता है। वहां पहुंचने पर सबसे पहले घास फूस के टप्पर, झोपड़े दिखाई देते। पूरा गांव विरान, पता लगता सब अपनी रोजी रोटी के लिए, वन्य फसल खोजने के लिए, कदमूल फल, प्राप्त करने के लिए, मछलियां पकड़ने, शिकार करने गए। बगल में तूम्बी लटकाए हुए चले जाते इसमें सुल्फी, ताड़ी या शराब भरी रहती। भूख मिटाने के लिए इसे रखा जाता। जब भूख लगी तब एक-दो-चार घूट ताड़ी पी ली। अनाज कहां से लाये। भोर होते ही सूर्य की किरण के साथ में घर से बसियां चांवल खाकर जाते। बसिया रात का बना चावल है। जिसे पानी में भिगोकर रख देते और सुबह उठकर जंगल जाने के पूर्व खा लेते। यही तो है इनका बसिया चावल। बसिया चावल के अभाव में ये लोग चावल का आटा बनाकर उसे घोल लेते और इस घोल को गर्म करके "पेज" के रूप में पी लेते। शाम होने तक ये लोग जंगल में दर-दर भटकते फिरते। शाम होने पर ये गांव की ओर लौटते। तब तक गांव में दो चार वृद्ध और बच्चों के सिवाय कोई नहीं रहता। शाम होते ही गांव में चहल पहल

शुरू हो जाती, गांव के बाहर बसे घोटुल में प्रकाश दिखाई देने लगता। ता ता रे रे के स्वर गुंजने लगते।

जगदलपुर से कोई एक सौ किलोमीटर देवगांव, अबुझमाड़, तारापुर और नारायणपुर तक कोई रेलमार्ग नहीं है जिसके कारण इस क्षेत्र के निवासियों ने अभी तक रेल के दर्शन नहीं किये। इसी कारण इनकी सभ्यता शहरी चमक दमक से परे है। चांदनी की तरह एकदम धूली है, पवित्र है। स्वतंत्रता क्या है, कौन मंत्री, कौन राजा, कौन प्रजा, इन सबसे इनको क्या लेना देना, अपना ही गांव का गायता (मुखिया), राजा हनगुण्डा, सिरहा (गांव के सलाहकार) मंत्री और स्वंय ही प्रजा। विड़ियो, टी.वी. से कोसो परे। अपने ही घोटुलों को विड़ियो, टी.वी. के रूप में देख लेते हैं। सब अपनी मस्ती में मस्त। मिला तो खा लिया नहीं तो फांके ही सही। उबली जंगली पत्तियों पर गुजरा करनेवाले ये भोले आदिवासियों के चेहरे पर दुख का नामोनिशान तक नहीं। जब मैंने अपने साथी झाडूराम, वीरसिंह के माध्यम से एक वयोवृद्ध से इसका कारण पूछा तो वह बूढ़ा गायता कहने लगा "अरे बाबू, जीना है तो दुःख को पहले अपना लो जब सब दुख से दूर भागोगे तो दुख को कौन पूछेगा। जिन्दगी जिंदादिली का नाम है। सुना चकित हुआ कहां से एक सत्तर साल के बूढ़े में यह विचार आए, अपने अनुभव से, या गम की ठोकरे खाने से।

जन्म से मृत्यु तक कर्ज, भूखमरी की ठोकरे खाते हैं और सहन करते रहते हैं। परन्तु सहन कब तक करे। निमाड़ी भाषा में एक कहावत है "जी गम खाए ऊब मोठो अर्थात् संतोषी नर सदा सुखी" पर ऐसी कहावत किस काम की। यह कहावत तो शहरी सभ्यता के लोगों पर लागू होती, जिन्हे मारधाड़ लूट खसोट, शोषण करने, धूर्तता करने, नम्बर दो के गोरख धन्धे की कला में विश्वास हो वहां व्यक्ति "मोठा" (धनी) कहलाता है। पर ये लोग तो आदि अनादि से गरीब हैं, गरीब बन रहे, बनते जायेंगे। धनी बने तो कैसे पहले हमारा पूंजीपति वर्ग तो धनी हो जाये। प्रशासकीय तंत्र बन जाये तो काफी है। जिनकी इच्छाएं सुरसा के मुख के समान दिनों दिन बढ़ती जाती तब इनके सामने ये भोले-भाले आदिवासी भाई कहां लगे। इसी दृष्टिकोण को मद्दे नजर रखते हुए "घोटुल" पुस्तक लिखी, जिसमें पाठकों को आदिवासी भाइयों के प्रति किंचित् सहानुभूति जागृत हो सकेगी। अभावों की जिन्दगी में गूजर बसर करते हुए भी ये सुखी हैं, मनमौजी हैं, जिन्हें कल की चिन्ता नहीं।

प्रस्तुत पुस्तक जनमानस के लिए, पाठकों के लिए, शिक्षाविदों के लिए, नृतत्य शास्त्र के शास्त्रियों के लिए एवं विद्यार्थी वर्ग के लिए उपयोगी होगी यही मेरी शुभ मंगल कामना है।

नारायण चौरे

१. आदिवासियों में मुझे बहुत से ऐसे गुण मिले हैं, जो मैदानों, नगरों तथा भारत केअन्य भाग के निवासियों में नहीं मिलते। इन्हीं गुणों के कारण में उनकी ओर आकर्षित हुआ हूँ।

२. "हमें आदिवासियों के पास प्रेम तथा मित्रता की भावना के साथ जाना और उन्हें स्वतंत्र बनाने में सहायक होना चाहिए। हमारा यह कर्तव्य है कि जब हम उनकेपास जाएं तो वे यही महसूस करें कि हम उनको कुछ देने केलिए ही आए हैं, उनसे छीनने या उनका शोषण करने केलिए नहीं।"

जवाहर लाल नेहरू
भूतपूर्व प्रधानमंत्री
(१९५२ में जनजाति सम्मेलन में
दिया गया भाषण का अंश)

विषय सूची

अपनी बात

प्रस्तावना (भूमिका)

अध्याय	१	पृष्ठभूमि / १
अध्याय	२	मध्यप्रदेश के घोटुल / १०
अध्याय	३	घोटुल की लोककथाएं /२६
अध्याय	४	घोटुल के लोकगीत / ३६
अध्याय	५	घोटुल के त्योहार / ५२
अध्याय	६	घोटुल की प्रथाएं / ५६

परिशिष्ट

१.	घोटुल की शब्दावली / ६२
२.	संदर्भ ग्रन्थ हिंन्दी, अंग्रेजी / ६९
३.	चित्रावली / ७१

अध्याय १

पृष्ठ भूमि

१. घोटुल क्या है
२. घोटुल के नाम
३. घोटुल का क्षेत्र
४. घोटुल की बनावट
५. घोटुल के नियम
६. जीवन साथी का चुनाव

अध्याय १

पृष्ठ भूमि

१. घोटुल क्या है

विश्व भर के आदिम जनजातियों में किशोर-किशोरियों का भावी जीवन उन्नत बनाने के लिए, उन्हें उचित अवसर दिये जाते हैं। भारतीय आदिम समाज में भी कुछ ऐसे ही रीति नीति है, जिसमें जनजाति समाज के युवा जीवन की झांकियाँ मिलती हैं, जिसमें "घोटुल" के दर्शन होते हैं। डा. हार्डसन के अनुसार " घोटुल का अर्थ युवा वर्ग का एक साथ समुदाय में रहना है।"[१] शेक्सपीयर के मतानुसार "जब समुदाय के सभी लोग संभोग के लिए एकान्त चाहते थे, तब ऐसी स्थिति में "घोटुल" जैसी संस्था का निर्माण हुआ।[२] इसी मत से मिलती जुलती कल्पना डा. ग्रियसन ने की जिसमें उस समय की तात्कालीन परिस्थितियों में सहवास करना वर्जित माना जाता था। तब ऐसी स्थिति में घोटुल की कल्पना की गई, जिसे साकार किया गया।[३]

घोटुल क्या है? इसकी व्याख्या नृतत्व शास्त्रियों ने भी अपने अपने तर्क से की हैं। एम.ई. पील के अनुसार "घोटुल कुंवारे लड़के लड़कियों के सोने के लिए विशेष भवन होते हैं"[४] ए. सी. हडन ने घोटुल का दूसरा नाम "कुमारगृह" कहा, जहां उन्हें सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन यापन करने की शिक्षा मिलती है।[५]

इसी शिक्षा को प्राप्त करने के लिए यहां कुमार कुमारियाँ घोटुल में सोते हैं, घोटुल की देखभाल करते हैं, उसकी सफाई करते हैं , वहाँ साथियों के लिए पानी लाते, आग जलाने के लिए लकड़ियाँ लाते, और अपने से बड़ों को रामजुहार प्रणाम करते हैं। उन्हें वह सब कुछ करना पड़ता जो उनके बड़े साथी उनसे चाहते हैं।

एस.सी. राय ने अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि "घोटुल भोजन खोजने के प्रयोजनों के लिए एक कारगर आर्थिक संगठन है।"[६] नवयुवकों को सामाजिक और अन्य कर्तव्यों का प्रशिक्षण देने के लिए एक उपयोगी पाठशाला है। इतना ही नहीं आखेट में सफलता प्राप्त करने के लिए नवयुवकों की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रकल्पित कर तिलस्मी धार्मिक रीति- रिवाजों की संस्था है। शेक्सपीयर ने घोटुल का अर्थ समाज में व्यभिचार को रोकने से बतलाया है

महान नृतत्व शास्त्री एलविन के अनुसार"भारत के आदिवासियों में वैवाहिक जीवन के बाहर भी कामवासना की तृप्ति की जाती है"[७]इन आदिवासियों में विवाह

१,२,३. देखिए साप्ताहिक हिन्दुस्तान २६ मई ६९ ४. एलविन "दि मुरियाज एण्ड देअर घोटुल" पृष्ठ ३३३ ५. ए.सी. हडन "आदिवासी किशोर-किशोरियों के नाइट क्लब्स" ६. उमिल्स "आओ नागाज" पृष्ठ २१२ संदर्भ ७. एलविन "दि मुरियाज एण्ड देअर घोटुल" पृष्ठ ३३३ "आदिवासी" सूचना प्रकाशन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली सन् १९५८ पृष्ठ १०३.

के पूर्व यौन विषयक पवित्रता बनाए रखने पर बहुत जोर नहीं दिया जाता। जैसे कि बस्तर जिले के मुरिया, गोण्ड जनजाति में गांव के अविवाहित स्त्री और पुरुष एक ही घर में रात बिताते हैं जहां ये अपनी इच्छानुकूल साथी चुन लेते हैं। ये साथी कभी कभी या नियमित रूप से बदल लिए जाते हैं और यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक ये विवाह करके इस संस्था को नहीं छोड़ देते। इस प्रकार यह संस्था "घोटुल" कहलाती है। "घोटुल" में रहनेवाले सभी युवा स्त्री पुरुषों में परस्पर विवाह बहुत कम होते हैं।

मिल्स के अनुसार आदिम जातियों में वैवाहिक जीवन के पूर्व कामवासना तुष्ट करने की स्वच्छता से यह निष्कर्ष निकलता है कि घोटुल का मुख्य उद्देश्य वही मैथुन ही नहीं है। अपितु घोटुल का मुख्य आधार आर्थिक सहयोग है। इसी के आधार पर शिकार करना, कृषि करना, एवं वन्य उपजों का संग्रह करना है।[१]

उपरोक्त तर्कों और नृतत्व शास्त्रियों के विचारों के अनुसार जहां घोटुल एक सामाजिक और स्वस्थ कामवासना से संबंधित संस्था है वहीं घोटुल के बारे में एक मुरिया वृद्ध के भी अपने विचार है। "घोटुल हमने इसलिए आरंभ किये थे कि हम अपने बालकों को उचित शिक्षा दे सकें। क्योंकि हम कहां तक उनके रोजमर्रे के झगड़ों को निपटाते। हम उनके झगड़ों से त्रस्त हो उठे थे। तंग आ गए थे। परेशान थे। इसलिए हमने घोटुल जैसी संस्था का निर्माण कराया। और अपनी सन्तान से कहा "जाओ घोटुल में और रात वहीं व्यतीत करो"।

२. घोटुल के नाम

"घोटुल" शब्द को स्थान विशेष के अनुसार अलग अलग नामों से जाना जाता है। उदाहरणार्थ बस्तर में निवास करनेवाली "मारिया", "मूरियाँ", "गौंड" जनजाति इसे "घोटुल" कहती है। असम की गारो जनजाति इसे "कुमारगृह" उंराव, नागा, और मोटियाओं में भी प्रचलित है। पूर्वोत्तर भारत के ब्रम्हपुत्र नदीवर्ती आदिम क्षेत्र में निवास करनेवाली जनजाति "घोटुल" शब्द के बदले "मौरुंगा" शब्द का प्रयोग करती है। नागाओं के घोटुल दो अर्थो में जाना जाता है पहला "इखुइंची" तो दूसरा "इलुइची"। जो क्रमशः लड़कों का घोटुल और लड़कियों के घोटुल से संबंधित है। हिमालय प्रदेश में निवास करनेवाली भेदिया जनजाति में ऐसे कुमारगृहों को "रंगबंग" कहते हैं। तो छोटा नागपुर क्षेत्र में निवास करने वाली "मुण्डा" और "हो" जनजाति इन्हें "गितिओरा" कहते हैं। उडीसा की "उंराव" जनजाति ऐसे कुमारगृहों को 'जोख', 'एरया' या "धुमकुरिया" कहते हैं। इसी प्रकार अबुझमाड के आदिवासी का घोटुल "कोस घोटुली" कहलाता है। परन्तु यह "कोस घोटुली" अन्य घोटुलों से थोड़ा भिन्न है। यहां लड़कियां तो नाचेगी, गायेगी, परन्तु रात्रि शयन अपने घर पर ही करेगी। जबकि अन्य घोटुलों में लड़के लड़कियां घोटुल में ही विश्राम करते हैं।

असम के आओ नागाओं में "घोटुल" आयु वर्ग के अनुसार भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है। उदाहरणार्थ प्रत्येक तीन वर्ष के बाद बारह से चौदह वर्ष की आयुवाले

---

१. मिल्स "आओ नागाज" पृष्ठ २१२

लड़कों का एक नया वर्ग "मोरुंग" (कुमारगृह) में प्रवेश करता है। ये कुमारगृह "नोजबरीहोरी" (अपरिपक्वदल) कहलाते हैं। इन्हें "मोरुंगा" में सोना पड़ता है। और इन्हें बडे लड़कोंकी सेवा करनी पड़ती है। तीन वर्ष बाद इनके स्थान पर नये लडके आ जाते हैं। और ये "तुरुप बहोरी (परिपक्व द्दल)" में बन जाते हैं। अब ये लड़के नवागंतुक लड़कों से उसी प्रकार परिश्रम कराते हैं, जैसा स्वंय इन्होंने किया था। ये लोग "मोरुंग" में सोना अनिवार्य नहीं समझते। तीन वर्ष की अवधि समाप्त होने पर यदि ये चाहे तो विवाह भी कर सकते हैं। तुरुप बहोरी घोटुल के सदस्यों का यह काम होता कि वे अपना कर्तव्य निभाते हैं। इस कर्तव्य में एक स्थान से दूसरे स्थान को सन्देश ले जाना और गांव के लिए सामान्य कार्य करना है। "तुरुपबहोरी" में तीन वर्ष पूरे होने के बाद ये सदस्य "चूचेनबहोरी" (मोरुंगनेतादल) बन जाते हैं। अब ये मोयंगा के नेता हैं और प्राचीन काल में इस स्थिति में ये नरमुण्डों के शिकार के लिए जाया करते थे।

"चूचेनबहोरी" में तीन वर्ष रहने के बाद यह सदस्य "ओकचगशमीचरीबोरी" में प्रवेश करते हैं। यहां इन्हें मोरुंगा की दावत के लिए मारे गए सुअरों की टांग खाने को दी जाती है। ताकि ये परीक्षा में खरे उतरते या नहीं। यहां भी इन सदस्यों के कर्तव्य यथावत रहते जैसे शिकार करना।

"ओकचगशमीचरी बोरी" में तीन वर्ष रहने के बाद में सदस्य "किदोंगमबाग" (जातिनेता) में प्रवेश करते हैं। यहां ये सदस्य गांव के सम्मानीय व्यक्ति समझे जाते हैं। और इनका "मोरुंगा" (घोटुल) से कोई संबंध नहीं रहता।

'किदोगमबाग" के तीन वर्ज बाद ये सदस्य "खोनरी" में प्रवेश करते जहां ये बोझा ढोने का काम करते, और बलि के लिए बोझा ढोने वाले मजदूरों का प्रबंध करते। इस समय इन्हें पार्षद के भ.ग़ा में से कुछ भाग मांस का दिया जाता है।

"खोनरी" में तीन वर्ष व्यतीत करने पर ये लोग "ततारी" में प्रवेश करते, जिन्हें पार्षद की उपाधि से विभूषित किया जाता है। यहां ये लोग वृद्ध लोगों के परामर्श से गांव का प्रबंध करते। इस समय इन्हें मांस का सबसे बड़ा भाग खाने को मिलता। ये लोग सामुहिक रूप से गांव का प्रशासन चलाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक नागा पुरुष धीरे-धीरे स्वतः गांव के सर्वोच्च वर्ग का सदस्य बन जाता है। न किसी मतदाता सूची की जरूरत, न किसी मतदाता की। मतदान, मुंशी, अमीन, चुनाव अधिकारी, पीठासीन अधिकारी, नाव आयोग की जरूरत नहीं, सब काम अपने आप उम्र के साथ हो जाते हैं, काम करो तो आगे स्तर पर जाओ अन्यथा रुके रहो। वास्तव में नागाओं की ऐसी विचित्र घोटुल प्रथा सराहनीय है जिसमें प्रशासनीक तंत्र का ढांचा, राजनीति तंत्र का रूप सबसे अलग थलग देखने को मिलता है।

"ततारी" (पार्षद) के तीन वर्ष बाद यह सदस्य "माओजम्बातेलकम्बा" में प्रवेश करते जहां ये पार्षद के सलाहकार बन जाते है। इन सलाहकारों को "माओजम्बातेलकम्बा" कहा जाता है। ये समय समय पर पार्षदों को उचित मार्ग निर्देशन देते हैं। और संकटपूर्ण स्थिति में संचालन की बागडोर स्वंय संभालते हैं।

अंत में माओजम्बातेलकम्बा में तीन वर्ष रहने के बाद इनमें से कुछ सदस्य अपनी स्वेच्छा से या तो पातिर बने सदस्य पुरोहित का कार्य करते हैं। और शेष जीवन इसी वर्ग में रहकर व्यतीत करते। इस प्रकार आओ जनजाति का जीवन चक्र इन संस्थाओं में रहकर व्यतीत होता है।

बिहार के रांची जिले के ओरांव जनजाति में भी घोटुल तीन वर्गों में पाया जाता है। इनमें पहला वर्ग 'पुना जोखार" अर्थात् नवागन्तुक कहलाता है। यहां किशोर अवस्था की देहलीज पर कदम रखते ही लड़के लड़कियों को" पुनाजोखार" जैसी संस्था में प्रवेश लेना पड़ता है। यहां इन्हें तीन वर्ष रहना पड़ता है। इन सदस्यों को अपने से बड़ों की सेवा चाकरी करनी पड़ती है। और उनकी देखरेख में काम करना पड़ता है।

दूसरे प्रकार का घोटुल "मझतुरिया जोखार" कहलाता है। इसमें "पुनाजोखार" में तीन वर्ष रहने के बाद सदस्यों को प्रवेश मिलता है। तब ये सदस्य भी "पुनाजोखार" के सदस्यों से कार्य कराते और उनकी देखरेख करते और अपने से बड़ों का अनुसरण करते।

तीसरे प्रकार के घोटुल "कोहाजोखार" अर्थात् अधिकतम आयु का घोटुल कहलाता है। उसमें "मझतुरिया" घोटुल में तीन वर्ष रहने के बाद प्रवेश मिलता है। इस घोटुल में सदस्य जब तक रहते हैं जब तक कि वे विवाह करके अपना घर नहीं बसा लेते।

यहां ये सदस्य अपने निश्चित कर्तव्यों को निभाते और अधिनस्त घोटुलों "पुनाजोखर" और " मझतुरिया-जोखार" के सदस्यों की देखरेख करते है।[१]

असम की गारो जनजाति में भी घोटुल दो प्रकार के नामों से जाना जाता है। पहला "नोकपन्धे" दूसरा "कुमारगृह"। नोक पन्धे में अल्प आयु वर्ग के किशोर प्रवेश लेते हैं। जिनकी आयु ७ वर्ष होती है। इस अवस्था के किशोर 'नोकपन्धे" घोटुल में सोते हैं। यह "कुमारगृह" में किशोर आयु वर्ग के सदस्य रहते है। कुमारगृहों को ये किशोर स्वंय ही बनाते हैं।

असम की आओ जनजाति में लड़कों की भांति लड़कियों का भी एक घोटुल होता है। जिसे "राशेग" नाम से जाना जाता है। यह घोटुल गांव के मध्य में बना होता है। और केवल कुंवारी लड़कियां ही इस राशेग में रात्रि विश्राम करती हैं।

३. घोटुल का क्षेत्र :-

देहाती घोटुल दूर दूर तक सारे विश्व में कैसे हैं। इस संबंध में नृतत्व शास्त्रियों के अनुसार तीन प्रकार के मत प्रचलित हैं। पहले मतानुसार घोटुल भूटान से लेकर न्यूजीलैण्ड तक, और मरक्वीसस से लेकर नाश्जर तक सर्वत्र पाए जाते हैं। इन घोटुल गृहों में युवा कुंवारे लड़के-लड़कियों के सोने के लिए विशेष कमरे होते हैं।

---

१. तारकचन्द्रदास "सामाजिक संगठन आदिवासी प्रमाणत विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार दिल्ली सन १९५८

दूसरे मत के अनुसार घोटुल भारत की अनेक जनजातियों में प्रचलित हैं। जिसमें अनेक प्रांतों की जनजातियों के लोगों में ये घोटुल एक बहुत बडी संख्या में व्याप्त है।

तीसरे मतानुसार घोटुल का प्रचलन मलेशिया, आस्ट्रेलिया, बर्मा, अफ्रिका, मलाया, और न्यू गाइना में निवास करने वाली जनजातियों में है। जहां अविवाहित लडके लडकियों के लिए यह एक सामाजिक प्रथा का रूप लिये है। इनके अतिरिक्त जापान, चीन, दक्षिण अफ्रिका, और यूरोप के कुछ भागों में भी ऐसी संस्था के चिन्ह दिखाई पडते हैं।

४. घोटुल की बनावट :-

घोटुल की बनावट स्थानीय परिवेश के आधार पर की जाती है। घोटुल के लिए एक विशेष स्थल होता है जो गांव से सबसे अलग थलग होता है। उदाहरणार्थ नागा जनजाति के मेरुंग (घोटुल) गांव के एक कोने में एकान्तवास में बनाया जाता है। इस घोटुल का भीतरी भाग काफी खुला होता है जिसका उपयोग ये लोग नृत्य गान के लिए करते हैं। और बाहर वाले कमरों में एक बडा शयन मंच होता है। इसकेअतिरिक्त यदा कदा "मेरुंग" में बरमदे के उपर ऊंचे ऊंचे मचान बने होते हैं। उरांव जनजाति के घोटुल जो "धुमकुरिया" कहलाते हैं, गांव के मध्य भाग में बसे होते हैं। उसी प्रकार आओ जनजाति के घोटुल जो लड़कों, लडकियों के अलग अलग होते हैं जो क्रमशः "मेरुंग और राशेग" कहलाते हैं गांव के मध्य में बसे होते हैं।

इन घोटुलों में एक वर्गाकार कमरा होता है और हर कमरे में आग जलाने की जगह होती है! इन कमरों में न तो कोई दरवाजा होता न फर्श । मात्र लकड़ियों के सहारे घास पूस की छत से टिका रहता है। घोटुल के साथी इन्हीं कमरों में रात्रि व्यतीत करते हैं, कई प्रकार के किस्से कहानियां, नृत्यगान कर अपना मनोरंजन करते हैं। इनमें भोले स्वभाव के अनुसार इन्हें कल की चिन्ता नहीं रहती। सब अपनी अपनी धुन में मस्त रहते हैं ।

५. घोटुल के नियम :-

भारत में स्थिति घोटुल के सदस्यों से संबंधित नियम प्रायः एक जैसे ही हैं। फिर भी स्थान विशेष और वातावरण के आधार पर यदा कदा इन नियमों में परिवर्तन, विभिन्नता आ जाती है। उदाहरण के तौर पर बस्तर के घोटुलों में सात वर्ष से १६ वर्ष की आयु तक के ही किशोर किशोरियां प्रवेश ले सकते हैं । बीच में यदि उनका विवाह घोटुल की किसी प्रेमिका या अन्य लडकी से कर दिया जाता है। दूसरे यदि कोई लड़की घोटुल में ही गर्भवती हो जाती है तो उसके प्रेमी का नाम पूछा जाता है और उन दोनों का विवाह कर दिया जाता है। तीसरे विवाह के बाद विवाहित दम्पति का घोटुल में रहना वर्जित है। परन्तु घोटुल का सरदार उनसे यह वचन जरूर ले लेता की वे भी अपनी संतान को घोटुल में अवश्य भेजेंगे। चौथे यदि घोटुल में उसका कोई प्रेमी हो तो वह उसे सदा के लिए भूल जावे, इसी प्रकार प्रेमी से भी यह वचन ले लिया जाता है कि तुम्हारी प्रेमिका भाग्यवश तुम्हारी पत्नी न बनकर दूसरे की बन गई। अतः अब तुम उसे सदा के लिए भूल जाओ। जो हो गया सो हो गया और सच पूछा जाये तो वे दोनो उन्हें ऐसे भूलते

हैं जैसे उनका कोई साथी ही नहीं । पांचवे छोटे आयु के लड़कों को घोटुल में आवश्यक काम काज करना पड़ता है उदाहरण के लिए आग जलाने के लिए लकड़ी की व्यवस्था करना, सन्देश वाहक का कार्य करना, घोटुल की साफ सफाई करना, बड़ों की आज्ञा मानना आदि है।

छटवें घोटुल में सरदार का पद अत्यन्त ही सम्मानीय होता है। इसी नियम के तहत यदि कोई घोटुल का सदस्य सरदार का अपमान करे तो घोटुल के सभी सदस्य उस सदस्य का बहिष्कार कर देते हैं और उससे अपने सामाजिक संबंध तोड लेते हैं। ऐसी स्थिति में उसे सरदार से क्षमा याचना मांगनी पड़ती है। सातवे घोटुल में यदि कोई लड़की, घोटुल के सदस्य से विवाह करना चाहे तो वह उसे तम्बाकू नहीं बांट सकती। इस प्रथा को "छुइंगा प्रथा" कहते हैं । आठवें घोटुल में "दोरीलो की सजा" का सदस्यों के लिए मानना आवश्यक हो जाता है इस प्रथा के तहत यदि कोई घोटुल का सदस्य चोरी करता है तो घोटुल का सरदार उस सदस्य को "दोरीलो सजा" सजा देता है। इस सजा में अपराधी लडके के पैरों में डंडा फंसा दिया जाता है। और लडका या लडकी जमीन की ओर उस समय तक झुके रहते हैं जब तक की दो गाने नहीं हो जाते। नववें घोटुल के सभी सदस्यों को अपने से बडों के प्रति प्रणाम करने का नियम है यह नियम के तहत "रामजुहार" प्रथा कहलाती है। दसवें निर्धारित तिथि पर घोटुल के देवी देवताओं की पूजा में सबको सम्मिलित होना आवश्यक है। असम के आओ नागाओं के लडकियों के "रासेग" (घोटुल) में यह नियम है कि गांव की कुंवारी लडकियों को ही इन घोटुलों में सोना पड़ता है। इसके साथ ही उन्हें अपने साथ शाम को लकडियाँ लाना, काम करने के लिए कताई बुनाई का सामान लाना, अनिवार्य होता है। यह "राशेग मोशुप" (घोटुल) एक वरिष्ठ लडकी की देख-रेख से चलता है। छोटी लडकियों से यह आशा की जाती की वह बडी लडकियों का सम्मान करें। इस प्रकार इस घोटुल में उन्हें एक अनुशाशित जीवन में रहना सिखाया जाता है।

राशेग की तरह ही लड़कों का घोटुल "मोरुंगा" में भी छोटी आयु के सदस्यों को सम्मानित जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए यह सिखाया जाता है। किस प्रकार मोरुंगा के सदस्यों को नोजबहोरी, तुरूपबहोरी, चूत्रेनबहोरी, ओकचगशमीचरीबोरी, के सदस्यों से व्यवहार किस प्रकार करना सिखाया जाता है। सच पूछा जावे तो घोटुल एक अनुशाशित जीवन की प्रथम पाठशाला है। जहां वह अपना भावी जीवन को आदर्श बनाने की शिक्षा प्राप्त करता है।

६. घोटुल में जीवन साथी का चुनाव :-

जीवन साथी का चुनाव करना आदिवासियों में बहुप्रचलित है। जिसके कारण इन्हें किसी प्रकार की अडचने नहीं आ पाती। जीवन साथी के चुनाव से संबंधित कई रीतियां नीतियां हैं, जिनमें एक विवाह प्रथा, लमझेना प्रथा, वधूमूल्य प्रथा, भगोरिया प्रथा, ढाठिया प्रथा, अस्या विवाह, घरघुसी विवाह, आदि प्रचलित हैं। जिनके आधार पर ये लोग जीवन साथी का चुनाव करते हैं।

जीवन साथी के स्वस्थ चुनाव की परम्परा आदिवासियों के घोटुल में भी देखने को मिलती है। जिसके कारण बलात्कार जैसी घटनाएं देखने को नहीं मिलती। न ही

किसी प्रकार की हाथपाई, लड़ाई झगडा, गरमा गरमी, खून खराबी का वातावरण। सीधे से लडके को लड़की मिल जाती और लडकी को लड़का। न तो किसी प्रकार का बाह्य आडम्बर, न ही दिखावा। लडकी भी बहुत अधिक विरोध किये बिना अपने प्रेमी के साथ रहने लगती है। इसी प्रकार असम की गारों जनजाति में भी जब कोई घोटुल का लडका किसी लडकी का चयन करता है तो सबसे पहले वह लड़की के रूप और आकार पर आकर्षित होता है। लडका प्रायः चमकीले, सीधे या सपाट केशयुक्त श्याम नयनवाली लडकी को पंसन्द करता है। उसकी इच्छा होती की उसकी प्रेमिका का चेहरा बहुत ही मनमोहक, गोलाकार हो, चेहरे की हड्डियां उभरी नहीं हो, नाक चेहरे की तुलना में सपाट नहीं हो। इसके अतिरिक्त गारो युवक लडकी के वृत्त और नितम्बों से क्षीण कटि वाली लडकी पर अधिक मुग्ध होता है।

गारो जनजाति में सौन्दर्य के अपने मापदण्ड हैं। नृत्यों के अन्दर ही रोमांस आरम्भ और प्रगाढ होता है। उनमें खुलकर बातचीत होती है। यदि लडकी मुस्करा - मुस्कराकर सुमधुर उत्तर देती है तो समझ लिया जाता है कि वह आकर्षित हो गई है। इसके बाद लडका अपनी प्रेमिका को बीडी, या तम्बाकू (पत्ते की बनी चिलम) पीने को देता है। यदि लडकी इस चिलम को स्वीकार कर ले, तो यह मान लिया जाता है कि वे दोनों आपस में प्रेमी प्रेमिका बन जावेगे। जब लडके द्वारा तम्बाकू देने के बाद लड़की भी लडके को प्रेमोपहार स्वरूप कोई चीज देती है, जिसे लडका स्वीकार कर लेता है। जब दोनों एक दूसरे की चीज स्वीकार कर लेते हैं तब लडका और लड़की दोनों साथ-साथ गाते हैं, नाचते हैं और साथ ही धूम्रपान करते और वे यह मान लेते की उनका भावी जीवन सुखी और आनन्दमय होगा। उनके लिए प्रेम की राह में न कोई कुण्ठा है न भय, न अपमान और न ही प्रेम करने के लिए कोई दण्ड जिस पर भी यदि प्रेमिका विवाह के पूर्व गर्भवती हो जाती है तो भी प्रेमी में इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता और वे हंसी खुशी विवाह सूत्र में बंध जाते हैं।

पूर्वोत्तर भारत के नागाओं में जीवन साथी का चुनाव उस समय होता है जब बालक किशोर बन जाता है। तब इसे सजा धजा कर दूलहा बनाया जाता है। फिर इस दूलहे को लड़कियों के मोरुंगा (घोटुल) में भेजते हैं। वहां वह अपनी जीवन संगिनी का चुनाव कर लेता है। इनमें कुछ मोरुंगा ऐसे होते हैं, जिसमें नवयुवकों के लिए छोटे छोटे कमरें बना दिये जाते हैं और उन कमरों में यह नवयुवतियां अपने प्रेमी को आमंत्रित करती हैं। वहीं रात बिताती हैं। इस प्रकार इनमें किशोरावस्था के बाद प्रणय क्रीडा पर कोई प्रतिबंध नहीं होता। लडकी जब किशोरावस्था में पहुंच जाती है तब वह अपने मां बाप को छोड देती है, और जहां कहीं भी स्वेच्छा से जा सकती है, वह अपने जीवन साथी के चुनाव में, समूह नृत्यों में भी भाग लेती है। जहां वह लडकों के साथ मिलती जुलती है। और अपनी इच्छानुसार किसी एक युवक को चुन लेती है। न फलदान, न सगाई, न लग्न, न दहेज का चक्कर बस नयनों के माध्यम से प्यार की मुस्कराहट से ही जीवन साथी बन जाते हैं। नृत्य गान के बाद रात्रि के दो पहर बितते ही मोरुंगा (घोटुल) के जवान लडके अपने छोटे-छोटे साथियों को मोरुंगों (अन्यमित्रों) के साथ सोता छोडकर लडकियों के सदनों में चले जाते हैं। लडकियाँ भी अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में पलके बिछायें बैठी रहती हैं। अब जैसे ही वे लड़के आते, तैसे ही जेष्ठ लड़कियाँ, उनका स्वागत करती,

उन्हें खाने के लिए कोई चीज देती, और बातचीत करती। इस बातचीत के दौरान युवक भी अपनी अपनी प्रेयसियों पर दृष्टि डालते, भावों का आदान प्रदान करते, और क्षण भर में प्रत्येक लडका अपनी प्रेयसी को चुन लेता। तब वे स्वच्छन्द होकर प्रेमालाप करते, उन्हें कोई रोकने टोकने वाला नहीं होता।

जीवन-साथी का चुनाव बस्तर की गोंड, मडिया जनजाति में भी प्रचलित है। इसमें यदि कोई लडका किसी लडकी को चाहने लगता, और लडकी को नहीं मालूम पडता तो वह लडका अपना प्रेम जताने के लिए बांस की सुराही में सुरा भरकर अपनी प्रेमिका के दरवाजे पर जाता है। और अपने आने का मंतव्य प्रगट करता है, तथा तम्बाकू लडकी से मांगता है। तम्बाकू मांगने का अर्थ है लडका लडकी से प्रेम करता है। अब यदि लडकी भी अपना सिर हिला कर तम्बाकू दे दे तो, यह मान लिया जाता है कि लडके का प्रस्ताव लडकी को स्वीकार है। उनका प्रेम पवित्र है और फिर उन्हें जीवन सूत्र के बंधन में बांध देते हैं। इस प्रकार जीवन -साथी का चुनाव करने की प्रक्रिया इनकी अत्यंत ही सादगीपूर्ण है।

उरांव जनजाति के घुमकुरियाँ (घोटुल) में ग्यारह वर्ष की लडकी जीवन के तौर तरीके सीखने के लिए प्रवेश करती है। और वह घुमकुरियाँ को तब ही छोडती है जब वह उरांव समाज की एक उपयोगी सदस्या हो जाये। और वह वहीं अपने एक अच्छे से जीवन -साथी का चुनाव कर ले।

जीवन-साथी की तलाश ये घोटुल के किशोर-किशोरियां मेलों में भी कर लेते हैं। विभिन्न गांवों के मेले में खरीद फरोख्त के समय इन्हें आपस में मिलने जुलने का सुखद मौका मिल जाता है और लडके लडकियों को उपहार स्वरूप कंघी भेंट करते, उन्हें पान खिलाते हैं। अंगूठी और घुंघरू देते हैं। यदि रुपये पैसों की कमी होती तो ये लोग सस्ते में ही निपट लेते हैं। ऐसी स्थिति में ये मात्र "फूल भेंट" कर अपने जीवन - साथी को प्राप्त कर लेते हैं।

****

अध्याय २

मध्यप्रदेश के घोटुल

१. अर्थ, घोटुल की रचना
२. घोटुल के पदाधिकारी
३. सदस्यों के आभूषण
४. गुदना आभूषण के रूप में
५. मोटियारियों का श्रृंगार
६. घोटुल के नृत्य
७. घोटुल की चित्रकला
८. घोटुल के वृक्ष, देवी देवता, अतिथि
९. मोटियारी की बिदाई
१०. घोटुल की कार्यवाही
११. घोटुल के चेलिकों के द्वारा शिकार
१२. घोटुल के सदस्यों के वस्त्र
१३. भोलापन

मध्य प्रदेश के घोटुल

मध्य प्रदेश के प्रमुख जिलों में बस्तर का नाम उल्लेखनीय है। जहां के अधिकांश निवासी " आदिवासी" कहलाते हैं। इन आदिवासियों में गौड़, बैगा, मारिया, मूड़िया, प्रमुख हैं। इन की सबकी अलग-अलग प्रथाएं हैं, कल्प हैं, रीतिरिवाज हैं। इन प्रथाओं के अंतर्गत इनकी एक और सामाजिक प्रथा है जो " घोटुल प्रथा " से सर्व विख्यात है। "घोटुल" मनोरंजन का केन्द्र है जहां अविवाहित युवा लड़के-लड़कियां अपना मनोरंजन करते, अच्छी शिक्षा प्राप्त करते और अपने भावी जीवन को आदर्श बनाने के लिए जीवन-साथी का चुनाव करते हैं। अनुशासन, कर्तव्य निष्ठता का पाठ घोटुल में ही पढ़ाया जाता है। जो अन्यत्र कहीं नहीं देखने को मिलता है ।

१. घोटुल की रचना

घोटुल की रचना प्रायः तीन हिस्सों में बंटी रहती है। पहला आंगन का भाग, दूसरा परछी का भाग और तीसरा हालनुमा कमरे का भाग । आंगन वाले भाग में मात्र एक खंबा गड़ा होता है और नृत्य करने के लिए पर्याप्त खुली जगह होती है। परछी वाले भाग में तीस चालीस चेलिकों के लिए स्थान होता और अलाव जलने का स्थान होता है । इस अलाव में ढेर सारी लकड़ियों के "ठूंठ" जलते रहते है। यहीं बैठकर चेलिक मोटियारियां अपनी देह को सेंकते रहते हैं, आपस में हंसी मजाक, कहानी किस्से कहते रहते, बतियाते रहते हैं। कथा कहानियों, का यह सिलसिला तब तक चलता रहता जब तक आधी रात नहीं हो जाती ।चांद, तारों की हिरनी [१] ग्वालझुमका [२] या सफरिश [३] सिर पर नहीं आ जाते या ये ढल नहीं जाते। कथा समाप्ति या आधीरात के बाद शेष चेलिक, मोटियारियां अलग अलग होकर क्रमश परछी और हालनुमा कमरे में सो जाते। और शेष युग्म जोड़ी के चेलिक मोटियारियां,अपनी अपनी गिकी [४] में बंध जाते। हालनुमा कमरे के दूसरे भाग में केवल युग्म जोड़े ही सोते हैं वे वहां थोड़ी देर आपस में बतियाते, प्रेमालाप करते और सो जाते हैं। उनकी नींद तब ही खुलती जब मुर्गे की बांग उन्हें सुनाई पड़ती और तब सब एक-एक कर घोटुल से जाने लगते हैं। इस प्रकार घोटुल की प्रत्येक रात इनके लिए सुहावनी सुनहरे सपने लेकर आती है। तीसरा हालनुमा कमरा भी तीन भागों में बंटा रहता है। पहला मुख्य कमरा जिसमें प्रेमी चेलिक मोटियारियों के निजी स्थान होते हैं, जो केवल प्रेमी प्रेमिका का शयन कक्ष रहता जहां कुछ अन्तरे पर सब प्रेमी युग्म अपनी-अपनी गिकी बिछा देते हैं। इस कक्ष में इनके नृत्य संबंधी गहने भी रहते, प्रसाधन से संबंधित आभूषण भी रहते, फूल, वेणी,

---

१. तीन तारे त्रिभुज जैसा. २. तारों का समूह. ३. सातहोर इनको देखकर रात का अनुमान किया जाता है । ये क्रमशः शीत, वर्षा ,एवं ग्रीष्म ऋतु में दिखाई देते है. ४. स्थानीय ताड़ या सींधान (खजूर) या वृक्ष के पत्तों की गुथी चटाई या कास रोशा घास की गुथी चटाई, जिसे घोटुल की मोटियारी बडे जतन से, प्रेम से, रूचि से अपने प्रेमी के लिये गुथती और भेंट स्वरूप प्रेमी को देती। प्रेमी अथवा चेलिक इसे प्रतिदिन घर से शाम को घोटुल में लाता और सुबह घर ले जाता है.

पड़िया, ढगरपोल आदि और वाद्य यंत्र भी होते हैं। दूसरे कमरे में कम आयु की मोटियारियां शयन करतीजिनके प्रेमी नहीं बने होते है। और तीसरे कमरे का उपयोग उस समय किया जाता है जब कम आयु के चेलिक जिनकी प्रेमिका नहीं होती, परछी में सोते हैं। परन्तु बरसात होने पर इन्हें इस कमरे में सोना पड़ता है। इस प्रकार पूरा घोटुल लकड़ी के हाते से घिरा होता है। बीच में एक छोटा-सा दरवाजा बना दिया जाता है जिसका उपयोग आने जाने के लिए किया जाता है। जो फाटकनुमा दो खूंटों के बीच एक लकड़ी लगाकर करते हैं। लकड़ी परछी और कमरों की दीवारें बांस के खूंटे, ढांचे पर मिट्टी छाप कर बनाई जाती है। इस पर चूना, खड़िया या " घुई " मिट्टी की सफेदी पोती जाती है। छप्पर, बांस और खपरेल की या घास फूस सागवान पत्तों की बनी होती है जो दूर से झोपड़ी, कुटिया जैसी लगती है। छत का मुख्य आधार इमारती लकड़ी की मजबूत ' बीम ' पर टिका रहता है।

इस छत पर घोटुल के सदस्य अपने हथियार, फरसा, टंगिया, हंसिया, खन्ता, कुल्हाड़ी, वसूला, बींधना, सब्बल, रांफी, बांस निर्मित टोकानियां, झांपी, सूपा, सिकोसी, सिका,मोरा, डाली, घुटी, दोरा, टुकना, पिटला, बिजनी, चुटकी, घालटी, खोंसते है। इस प्रकार 'घोटुल' एक गांव की सम्पत्ति मानी जाती है। जो गांव से थोड़ी दूर पर खुले मैदान में बसा होता है। इसका निर्माण गांव के लोगों की मेहनत से होता है।

२. घोटुल के पदाधिकारी :-

घोटुल में सरदार का पद अत्यन्त ही सम्मानीय होता है। इसे " सिरदार " [१] नाम से जाना जाता है। इसका चुनाव कारापाण्डुम त्योहार [२] पर करदेंगल [३] की पूजा के समय वर्ष में एक बार घोटुल के सदस्यों की राय से मौखिक रूप में किया जाता है। एक व्यक्ति कई बार सरदार के पद के लिए चुना जा सकता है। दूसरा सरदार तभी नियुक्त किया जा सकता है, जब सदस्य उसे न चाहे या उसका विवाह हो चुका हो। और घोटुल ने उसे बिदा कर दिया हो । सरदार की इच्छा सर्वोपरि ईश्वर तुल्य समझी जाती है। उसका हर कार्य उसकी मर्जी से होता है। प्रत्येक सदस्य को सरदार की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। वह बिना सरदार की अनुमति के कोई कार्य नहीं कर सकता। सरदार के चयन के बाद सरदार अपनी इच्छा से घोटुल के सदस्यों को निम्नलिखित अनुसार कार्य सौंपता है।

१. झरिया :-

इसका काम घोटुल की सफाई करना, आग जलाने के लिए जंगल से लकड़ियां एकत्रित करना, शाम को आग जलाना, और बरांड़ों, मैदानों, कमरों की सफाई करना।

२. मुसवान :-

घोटुल की साज सज्जा करना, लिपाई पोताई दीवारों पर कराना व चित्र बनवाना। इन चित्रों को स्थानीय सफेद मिट्टी या खड़िया से बनाना। दीवार पर बननेवाले चित्रों

१. सरदार या मुखिया २. चैत या फरवरी माह में मनाया जानेवाला त्योहार
३. घोटुल का देवता.

में चिड़िया, पुरुष, पुतला, पर्वत, गेंद, चौक, फूल, घोड़ा, हाथ, बिच्छू, टोकनी, चन्द्रमा, कुंडली, ध्वजा, तीर, त्रिशूल आदि प्रमुख है।

३. दीवानः-

इसका काम सदस्यों पर निगरानी रखना, कुमार सदस्य कहीं बहक न जाये, इस पर कड़ी नजर रखना और अपराधी या चोर सदस्य की शिकायत सरदार से करना, सरदार ऐसी शिकायतों पर अपराधी को दण्डित करता है।

४. कोटवार और चलान :-

ये पदाधिकारी सबकी उपस्थिति रखता, कुल कितने सदस्य आए, कौन अनुपस्थित है, उसकी अनुपस्थित का क्या कारण है, इसकी सब जानकारी वह सरदार को देता है। और दूसरे दिन न आने पर वह सदस्य से कारण पूछता है। यह सब जानकारी वह मौखिक रूप से रखता है।

५. जमादार :-

इसका काम यह देखना है कि घोटुल की मोटियारी (लड़की) बिना पड़िया (कंघी) के तो नहीं है।

६. चालकी :-

यह घोटुल के सभी सदस्यों को तम्बाकू बांटता, और समय समय पर उत्सव आयोजित करता, और उसमें भाग लेकर अपने पद की भूमिका निभाता है।

७. सिपाही :-

इनकी जिम्मेदारी रात में गांव की गस्त लगाना है और फसल, खेत खलिहान की देख रेख करना, अपराधी व्यक्ति को पकड़ना और सरदार के सामने उपस्थित करना। बाहर के किसी अजनबी की प्रथम भेंट इनसे ही होती है। ये ही सब जानकारी लेकर उन्हें गांव में प्रवेश करने देते हैं।

८. बैद :-

घोटुल के सदस्य एवं गांव के पीड़ित व्यक्तियों का उपचार करता है। स्थानीय जड़ी बूटियों के आधार पर वह रोग को दूर करता है। इसके अतिरिक्त मंत्र तंत्र का उपयोग भी करता है। जिनके माध्यम से वह प्रेतादि बाधाओं को दूर करता है।

९. दीवान या मुखवानः-

ये घोटुल के बुद्धिमान सदस्य होते हैं, और हर सदस्य के अच्छे बुरे कार्यों की जांच करते, उन्हें उचित निर्देशन देते और उनमें सुधार करते।

१०. रानियाँ :-

घोटुल की कुछ लड़कियों को रानी का पद दिया जाता है। इनका काम घोटुल की सफाई करना, दीवारों को लिपना, पोतना, और उन पर चित्र बनाना। इसके

अतिरिक्त ये पत्तों के दोने बनाती हैं, जिनका उपयोग घोटुल के सदस्य मद्यपान में करते हैं।

११. सारगुती :-

घोटुल की प्रत्येक लड़की सारगुती (सहेली) कहलाती है। ये ही अपने मन तन की बात अपनी सारगुती से करती है।

१२. मोटियारी :-

घोटुल के प्रत्येक सदस्य की अपनी एक प्रेमिका होती जिसे "मोटियारी" कहते है। प्रत्येक मोटियारी अपने प्रेमी को घास के बीज या मूंगा की बनी माला भेंट करती है।

१३. चेलिक :-

घोटुल की प्रत्येक मोटियारी का एक "प्रेमी" होता जो चेलिक कहलाता है, जो प्रत्येक शाम अपनी मोटियारी के लिए गिकी (चटाई) लाता। इसे मोटियारी अपने खाली समय में गुंथती व चेलिक को भेंट करती। इस प्रकार घोटुल के हर कार्य बटे रहते हैं। सच पूछा जावे तो अनुशासन की पाठशाला के दर्शन हमें घोटुल में ही होते हैं। सब अपने अपने काम में व्यस्त, कोई शिकवा शिकायत नहीं, वहीं न्यायालय, वहीं फैसला, वहीं "दोरिका प्रथा" जिसके अनुसार अपराधी के पैरों के बीच में एक लकड़ी का डंडा फंसा दिया जाता और दो गाने समाप्त होने तक उसे झुकी अवस्था में खड़ा रहने को कहा जाता। न देर न सबेर।

सच पूछा जावे तो घोटुल की सेवा गांव के लिए सराहनीय होती है। इसी कारण तो हर मां बाप अपनी संतान को यौवनावस्था की देहलीज पर पैर रखते ही घोटुल की ओर भेज देते हैं। उनकी इच्छा होती की, उनकी संतान भी हमारे समान घोटुल में रहकर अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठता का पाठ पढ़े और घोटुल की सदस्यता उन्हें तब तक प्राप्त होती है जब तक की वह सदस्य विवाहित न हो जावे। विवाहित होते ही घोटुल इन्हें फौरन अलग कर देता है।

३. घोटुल के सदस्यों के आभूषण :-

घोटुल के चेलिक (प्रेमी) अपने गले में मालाएं पहनते हैं जिन्हें 'डगरपोल' कहते हैं। ये डगरपोल घास के बीजों की बनी मूंगों की बनी मनको मनखिया (सर्प के दांत की बनी), या हाथी दांत की बनी होती है जिस चेलिक के गले में जितनी अधिक मालाएं होती है, उसकी उतनी ही अधिक प्रेमिकाएं होती हैं। परन्तु वास्तविक प्रेमिका वही होती है जो " गिकी " (चटाई) देती है और गिकी पर सोती है।

इसी प्रकार घोटुल के चेलिक भी मोटियारियों को भेंट स्वरूप घास या कांस की बनी एक कंघी देता हैं जिसे "पड़िया" कहते है। जिस मोटियारी के बालों में जितनी अधिक पड़िया होगी वह उतनी ही अधिक अपने को भाग्यशाली समझने लगती है। परन्तु वास्तविक चेलिक वही होता जिसे वह " गिकी " देती है।

डगरपोल और पड़िया के अतिरिक्त घोटुल की लड़कियां, लोहे या पीतल के बने छोटे छोटे घुंघरू जो घुंघराई (माला) में गुथा करता है कमर, पैरों में पहनती है।

घुंघरू के अतिरिक्त पैरों में पीतल के पायल, सिर में फूलों की माला, कौड़ियों की माला, जो रेशमी पट्टी में जुड़ी होती है पहनती है गले में रंग बिरंगी मोतियों, मूंनगों, पोत की, घास बीज की मालाएं, कौड़ियों की मालाएं इतनी होती की उनका पूरा गला भर जाता है, और ये मालाएं स्तन तक झूलने लगती हैं। ये मालाओं के दाने बाजार में खरीदती हैं, और उन्हें वे अपनी रुचि व कलात्मक ढंग से धागों में पिरो पिरोकर आकर्षक मालाएं तैयार करती हैं। घास और चमकीले बीजों, कौड़ियों आदि की सुन्दर मालाएं पहिनकर घोटुल के सदस्य यह कहना चाहते हैं कि शारीरिक सज्जा केवल सोना चांदी जवाहरतों से नहीं होती वरनः साधरण से साधारण चीजों में भी सौंदर्य प्रसाधन हो सकता है। आवश्यकता है केवल कलात्मक रुचि और भावुक हृदय की।।

४. गुदना आभूषण :-

घोटुल की मोटियारियों का प्रिय आभूषण गुदना है। इनका ऐसा विश्वास है कि गुदने के बिना उनके जीवन का सौन्दर्य अधूरा रह जावेगा। गुदने से उनके अंगों का सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है। इसी कारण जो स्त्री गुदने से रह जाती है उसके लिए उसे बहुत लज्जित होना पडता है। गुदना एक ऐसा आभूषण है जो स्थाई होता है, जो मृत्युपरात भी शरीर के साथ रहता है। गुदवाने से प्रेमी युवक की दृष्टी प्रेमिका पर हरदम रहती है। इन सब कारणों के कारण घोटुल की लड़की गुदवाने में विश्वास रखती और अपनी इच्छा, कीमती आभूषणों को न पहन कर उन्हें गुदवा कर पुरी कर लेती हैं। ये लडकियां कपाल, छाती, बाहू, कलाई, हथेली का पृष्ठ भाग, घुटनों के उपर, गुप्तांगों, पैर की अंगुलियों, पिंडली, हाथ, स्तन, पैर पर गुदवाती हैं।

गोदने का कार्य गोंड जनजाति की स्त्रियां करतो जिसे "गुदनारी" कहते हैं। यह अपने साथ सुईयां रखती जिन्हें धागे में बांधकर प्रकृति प्रदत्त पत्तों के रस में डूबों डूबों कर शरीर पर टोचती (चुभाती) है। इससे लडकी को पीड़ा तो अवश्य होती परंतु एक स्थाई गहने बन जाने की ललक से वह यह पीड़ा सहन कर लेती है।

गुदने में मोर, सांकल, पटली बिछियां, मस्सी, पौधा, सर्पाकार आकृतियां, फुल, पत्तियां, रेखांए, लालचिंटे, जांघ पर बिन्दी, रेखाएं, छाती पर मछली, कण्ठहार, हाथी, कुम्हडा, सींकरी, चरुगा, भौंरा, चाउर(चावलदाने) माघी, गुरा कुलसेर, मुडी, टिपमा, जट आदि चित्र गुदवाती है। ये घोटुल कन्याएं इतने सारे आभूषणों को एक साथ न गुदवाते हुए किस्तों में हर साल मडई (मेले) में गुदवाती हैं।

घोटुल की लड़कियों के गुदना से संबंधित गीत भी है, जिसे गुदना गुदवाते समय बड़े ही चाव से गाती हैं।

इली ओझिल गोदालि बांहां।
इज्जत गेली मरजद गेली
घांडी दे महां रे।

हे प्रेमी गोदने वाली
तू उनका नाम बांह पर गोद दे,

इससे सगे सहोदर हंसेगें
पर वे मुझ से छूट नहीं सकते

रस्ता रेरेगें हलाले कोहनी
तोरा आंरपं में सवोनी
खोपा में मोहनी
रस्ता रेरेगें हलाले मोहनी

हे रास्ते चलने वाले प्रेमी
क्या तुझें मेरा गुदना दिखाई नहीं देता।
देखो गुदने से मेरी आंखे सलोनी हो गई।
क्या अब भी मेरा रूप तुझें नहीं भाता।

हे मां हमारी प्रार्थना सुन लो,
तुमने वचन दिया था,
हे मां पीड़ा हो रही है,
सुई की जलन मिटा दो।

घोटुल के सदस्यों के श्रृंगार

घोटुल के लड़के लड़कियां दिन भर तो कैसे तो भी रह लेते हैं, परन्तु शाम होते ही वे सब घोटुल में जाने के लिए तैयार होने लगते हैं। इसके लिये घोटुल की लड़की विशेष रूप से सजती संवरती है। वह बालों में प्यार के 'लहरियां' डालती है, मांग निकालती है, और बालों में पड़िया (कंघी) खोंसती है। गले में रंग बिरंगी, लाल सपेद घुंघचियों की माला, मोतियों की, कांच की, रंगीन गुरियों की, लाख या कौड़ी की, घास के बीजों की मालाएं पहनती है। इनके स्तन खुले रहते हैं। इसका कारण वे अपने प्रेमी को अपना बना लेना चाहती हैं। घोटुल की मोटियारी के मतानुसार स्तन को वे लड़कियां ढके रहती हैं जिन्हें प्रेम करना नहीं आता, जो प्रेम को पाप समझें, प्रेम ऐसों के लिए गिरगिट की तरह होता है, जो उससे भूत की तरह भागे या भय खाए। प्रेम देवता है, प्रेम उनकी जिन्दगी है। पहाड़ के पत्थरों को वे दिन भर ढ़ोती है, कोसों मील पैदल चलना पड़ता है, और इस सब परिश्रम को घोटुल की लड़कियां अपने श्रृंगार, साज सज्जा, नृत्यगान में भुला देती हैं । श्रृंगार में वे हाथों को गोरा बनाने के लिए नहाने के साबुन का उपयोग नहीं करती किंतु उसके बदले ये गोल पत्थरों, कवेलू का टुकड़ा या टूटे फूटे मिट्टी के बर्तन के टुकड़े से वे अपने शरीर का मैल साफ करती हैं। स्नान ये प्रायः शाम को तालाब में ही प्रतिदिन करती हैं। स्नान के बाद ओंठों की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए खैर या छींद की पत्तियां चबाती हैं जिससे उनके ओंठ लाल हो जावे।

आंखों के लिये ये लड़कियां काजल का उपयोग करती हैं, जिसे ये अपने घर पर ही बनाती हैं। गुल्ली के तेल के दिए के उपर एक बर्तन रख दिया जाता है। तब बर्तन के जिस भाग में लौ लगती है, वहां पर घी लगा दिया जाता है। फिर जब लौ का धुंआ वहां जम जाता है तो उसे मिलाकर काजल बना दीया जाता है। काजल लगाने के बाद ये अपने सिर को विशेष प्रकार से गुंथती हैं।

श्रृंगार से संबंधित दृश्य उस समय और भी आकर्षक होते हैं जब घोटुल की लड़की घोटुल के परछी के एक कोने बैठी हाथ में दर्पण लिए या दर्पण के अभाव में पानी, थाली या लोटा लिए तल्लीन होकर श्रृंगारं करती हैं। इस समय वह जूड़े में पड़िया, गुलाब, गेंदा, तिवड़ा, टेसू कोई भी मौसमी फूल खोंसती हैं। और ऐसे अवसर पर जब कोई अजनबी उसे लगातार घूरता तो वह अपने को अपनी साइगुती (सहेली) की ओट में कर लेती और वह तब तक नहीं हटती, जब तक की वह अजनबी उससे परे न हट जावे। और वह अपने को स्वतंत्र महसूस नहीं कर ले। बालों में लगाने वाली कंघियों को ये घास के सीरों या बांस की सींकों से मजबूत धागों द्वारा गूंथ लेती हैं। सिकों के सिरों को नुकीला कर लिया जाता है। जिससे कंघी आसानी से बालों में धस सकें।

घोटुल की मोटियारियां जहां श्रृंगार में रत रहती वहीं घोटुल के चेलिक भी कम नहीं। वे भी कानों में पीतल के कुंण्डल पहनते। गले में लम्बी लम्बी लरकेन वाली मालाएं पहनते। ये मालाएं " डगरपोल" कहलाती है। जो कौड़ियों, मूंगों, मनके की होती है। सिर पर मोरपंख या किसी भैंसे का सिंग बांधकर श्रृंगार करते हैं। शरीर पर किसी वृक्ष की छाल या एक प्रकार का विशेष मोटा कपड़ा पहनते हैं। जो शरीर से घुटनों तक पैरों में बंधा होता है। विशेष अवसर के लिए लोक नर्तक दल उत्तम किस्म के आकर्षक रंग बिरंगे वस्त्र आभूषण पहनते हैं। परन्तु इनकी वेश-भूषा में स्थानीय छाप अवश्य रहती है। इनके श्रृंगार के आभूषण भी प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर रहते हैं। इनमें फूलों, जंगली पत्ते, बेलों, वनस्पतियों, पशु की खालों और पक्षियों के पंखों के पर रहते हैं। इनका उपयोग करने से नर्तक की सजावट में चार चांद लग जाते हैं।

घोटुल के नृत्य :-

नृत्यगान घोटुल का प्राण है। बिना नृत्यगान के घोटुल का वातावरण गमगीन-सा बन जाता है। घोटुल की प्रत्येक रात नृत्यगान से भरपूर होती है। हर रात घोटुल का आंगन युवा लड़के लड़कियों के नृत्य गीतों से मुखर होता है। मिल जुलकर जहां सदस्यों को व्यावहारिक ज्ञान सिखाया जाता है, वहीं इस ज्ञान का स्रोत नाच और गीत से जुड़ा होता है। इसी कारण तो घोटुल में नृत्यों की परम्परा को बनाये रखने के लिए आनेवाली पीढ़ी को नृत्यगान से परिचित कराया जाता है। घोटुल में होनेवाले प्रमुख नृत्यों में सींग माड़िया, गौर, हुलकी, गेड़ी, करमा, रेवा, सेला, रीना, गिरत नृत्य, सुआ नृत्य प्रमुख हैं।

सींग माड़िया नृत्य :-

"सींग माड़िया" नृत्य में पुरुष नर्तक अपने सिर पर " भैंसे का सींग" लगाकर नृत्यगान करते हैं। इन नर्तकों के पास बड़े बड़े ढोल भी होते हैं जिनकी ध्वनि पर इनके

पैरों की थिरकन बढ़ती है। इनके पास ही नर्तकियों का भी एक गोल घेरा होता है और नृत्य करती हैं। प्रत्येक नर्तकी अपने हाथ में एक ऐसी लकड़ी लिए होती जिसके ऊपरी सिरे पर लोहे की पत्तियों का झुमका लगा होता। अब इस लकड़ी को जैसे ही जमीन पर ठोंका जाता वैसे ही सिरे पर लगी लोहे की पत्तियां आपस में टकराकर ध्वनि पैदा करती। यही ध्वनि ताल का काम देती। सच पूछा जावे तो यह नृत्य अत्यन्त ही आकर्षक होता है।

गौर नृत्य :-

इस नृत्य में जहां भैंस के सींग बांधे हुए नर्तक अलग अलग होकर नाचते हैं वहीं नर्तकियां नर्तकों का हाथ पकड़कर गोलाकार नृत्य करते हैं। एक पैर आगे, एक पैर पीछे उठा-उठाकर नृत्य करना, चार कदम आगे चार कदम पीछे चलना, उछलना, कूदना, तालियों की ध्वनि करना आदि मुद्राएं इस नृत्य की विशेषता है। मादल की ध्वनि पर नृत्य की गति में परिवर्तन होता रहता है। जब नृत्य की चरम सीमा होती, तब ऐसा लगता जैसे सारे नर्तक एक हो गए।

हुलकी नृत्य-

इस नृत्य में सभी लड़के और लड़कियां अपनी अलग-अलग पंक्तियां बनाकर खड़े हो जाते हैं और जैसे ही मृदंग की थाप पड़ती और गीतों के बोल गूंजते वैसे ही लड़कों का दल अपने अपने शरीर को आगे की ओर झुकाने लगते। तो लड़कियों का दूसरा दल अपने शरीर को पीछे की ओर इतना अधिक झुका लेती की उनके नितम्ब जमीन से टकराने का प्रयत्न करते। यह स्थिति ऐसी लगती जैसे कमल की पंखुड़ियां खुली हो और भौंरा उसनें प्रवेश कर रहा हो या सपेरा बीन बजा रहा और नाग नृत्य कर रहा हो। फिर उसी अवस्था में शरीर को आजू बाजू, आगे पीछे मोड़कर नर्तकियां अपनी पूर्व स्थिति में आ जाती हैं। तब नर्तक भी अपनी पूर्व स्थिति में आ जाते हैं। इस प्रकार यह नृत्य वाद्य, ध्वनि और गीत पर बहुत ही लुभावना मनमोहक लगता। जैसे कोई निरन्तर करवटें बदल रहा हो। कितनी मस्त हंसी है, कितना इनमें अल्लड़पन है। कौन इन्हें कहे की ये दरिद्रनारायण हैं, अभावों से घिरे हैं। इनकी ऐसी हंसी बिरलों में ही होती है। जो जी भरकर के हंस ले, सो ले, वही तो सबसे बड़ा धनी है। और ऐसे धनी हमें घोटुल के चेलिक मोटियारी दिखाई देते हैं, जिन्हें कल की चिन्ता नहीं है।

गेड़ी नृत्यः-

यह नृत्य लकड़ी या बांस के दो लम्बे डंडों पर किया जाता है। डंडों के निचले सिरों से कुछ दूरी पर बांस की खपच्चियोंसे रस्सी या जड की छाल बांध दी जाती है। इन पर नर्तक पुरुष अपने पैर के अंगूठों को फंसाकर और लड़की को हाथ से पकड़ कर खड़े होते हैं और फिर पैर जमने के बाद ये धीरे-धीरे चलने लगते। और ढोलक, टिमकी की ध्वनि पर नृत्य आरम्भ होता, ध्वनि की तीव्रता के साथ ही नृत्य की गति बढ़ती जाती। नृत्य गोल घेरे में किया जाता जो काफी चित्ताकर्षक होता है।

करमा नृत्यः-

करमा नृत्य करमा कहानी की यादगार में किया जाता है। इस नृत्य में घोटुल के सभी नर्तक नर्तकियां अपने सिर पर करमा वृक्ष की छोटी छोटी टहनियां बांधकर नृत्य करते हैं। किसी किसी घोटुल में करमा वृक्ष की बड़ी टहनी के आस पास यह नृत्य किया जाता है। नृत्य गोल वृत्त में होता और नृत्य वाद्य ध्वनि के साथ होता है। गीत भी समवेत स्वर में गाए जाते हैं। कहीं कहीं यह नृत्य गेरी नृत्य जैसा भी किया जाता है। जिसमें दो गोल घेरे होते हैं। बीच के गोले में मोटियारियां नृत्य करती और बाहर के घेरे में गेडी लिएचलिक नृत्य करते हैं।

रेवा नृत्य :-

रेवा नृत्य उछल कूद का एक आकर्षक नृत्य है। इस नृत्य में वाद्य ध्वनि के साथ सभी नर्तक एक पैर से कूदने का अभ्यास करते हुए नृत्य करते हैं। नृत्य जब ध्वनि और गीत के बोल पर तीव्र गति पर होता है, तब नर्तक दल एक टांग से नृत्य करते, कूदते फांदते नर्तकियों के दल की ओर बढ़ता है। तब नर्तकियां भी अपने अपने पैरों की ऐड़ियों को अपने नितम्बों पर मारती हुई ठीक वैसी ही ध्वनियां निकालती जैसे तालियों की ध्वनि निकलती। ऐसी स्थिति में यह देखने लायक होता है। तरह-तरह के दृश्य, मुद्राएं इस नृत्य की विशेषता होती हैं।

सेला नृत्य :-

सेला नृत्य घोटुल में पौसी (जनवरी) पूनम के अवसर पर किया जाता है। इस दिन घोटुल में काफी चहल पहल रहती है। सभी सदस्य उमंगों से भरे हुए उत्साहित से दिखते हैं। और बड़ी उतावली से सुबह का इन्तजार करते। पौ फटते ही घोटुल के सभी चेलिक " छेर छेरा कोठी के धनला हेरते हेरा" चिल्लाते हुए अपनी अपनी टोलियों में छोटी छोटी टोकरियां लिए गांव की ओर निकल पड़ते। उनके साथ ही लड़कियों का दल भी "छेर छेरा कोठी के धनवा हेरते हेरा" (हे भाई कुछ अनाज दो, माई कुछ अनाज दो), की आवाजें देता निकल पड़ता । गांव में पहुंचते ही जहां लड़कों का दल " छेर छेरा " की पंक्ति दुहराता है, वहीं लड़कियां "कोयल की ध्वनि कुह कुह" निकालती हैं। इस ध्वनि के साथ ही लड़कों का दल छोटे छोटे डंडों की ताल पर, घर के सामने के आंगन में नृत्य करने लगता है । जो सेला नृत्य कहलाता है। यह नृत्य मंडलाकार में किया जाता। नर्तकों की वेशभूषा भी काफी आकर्षक होती है। सिर पर मोरपंख की कलगी, हाथों की कुहनी पर लटकती कौड़ियों के बाजूबंद और कमर में बंधे कमर पट्टे होते हैं। चुस्त वेशभूषा, सटा सलखा, कसा हुआ पंछा (साफा) घुटने तक धोती व गले में रंगीन डगरपोल (मालाएं) और कौड़ियों के झूल से लगता है की नर्तक अपनी सम्पूर्ण साज-सज्जा से नृत्य करना चाहता है।

यह नृत्य करते समय सबसे पहले लड़कों का दल गुरु और ईश्वर की वन्दना करता। जिसकी पंक्ति निम्नलिखित है। " तरी नरी नाना रे, तरी नरी ना मोरि नाना बिन्डो गुरु तरी नरी रे, बिन्दो भगवान तरी नरी " फिर डंडे की ताल बनाए रखने पर पद संचालन किया जाता है। जिससे नृत्य में द्रुतगति, चापल्य और वेग की उत्पत्ति

होती है। इस नृत्य के अवसर पर जिन वाद्यों का उपयोग किया जाता है उनमें मादर, टिमकी, बांसुरी, ठिसकी मुख्य है। जिनकी ध्वनि पर डंडे की ताल पर नृत्य देखने योग्य होता है।

रीना नृत्य :-

जहां एक ओर सैला नृत्य में डंडों की ताल पर नृत्य में तीव्रता आती है। वहीं रीना नृत्य धीमी गति से चलने वाला, थिरकन से भरा एक नृत्य है। जिसमें सभी लड़कियां समवेत स्वर में ती, ता ता नी की धुन पर नृत्य करती हैं।

गिरदा नृत्य :-

जब घोटुल के चेलिक सैला नृत्य करते हुए किसी अन्य गांव में जाते हैं और वहां नृत्य करते हैं, तब यह नृत्य गिरदा नृत्य कहलाता है। अब जिस गांव में लड़के यह गिरदा नृत्य करते वहां के घोटुल की मोटियारियां गिरदा करनेवाले नर्तकों का स्वागत करती । और बड़े प्रेम से विदाकरती। उन्हें गांव के मुखिया से मिलाती, परिचय कराती है।

सुआ नृत्य :-

सुआ नृत्य " नुना नारे दाना पाण्डुम " के अवसर पर किया जाता है (दीपावली के समय) इस अवसर पर प्रत्येक घोटुल में मोटियारियों की धूम मची होती है। चूंकि इस अवसर पर घोटुल की नर्तकियों को पास पड़ौस में नृत्य करने का मौका मिलता है। गिरदा नृत्य में जहां केवल पुरुष वर्ग ही पास पड़ौस के गांवों में जाकर नृत्य करता वहीं सुआ नृत्य में घोटुल की मोटियारियों को ही पास पड़ौस में जाने का अवसर मिलता। इस कारण सुआ नृत्य की प्रतीक्षा घोटुल की मोटियारियां बड़ी ही उतावली से करती हैं।

सुआ नृत्य जैसे की उसके नाम से प्रगट होता है तोता नृत्य । तोता जैसे अपनी गर्दन इधर उधर घूमाता है वैसे ही नर्तकियां भी अपनी गर्दन नाचते समय इधर उधर घूमाती हैं। इस नृत्य में मोटियारियां धान से भरी बांस की टोकरियों को सिर पर रखकर चलती हैं। फिर एक लड़की की टोकरी में मिट्टी या लकड़ी का बना तोता रखती है। जिस लड़की के सिर पर यह सुआ रखी टोकरी होती है उसे " सुग्गी " कहते हैं जिसे बीच में खड़ा कर दिया जाता है।

अब नृत्य दो दलों में बट जाता। एक दल नृत्य करते हुए गीत उठाता है तो दूसरा दल उसी गीत की पंक्ति को दोहराता है। अब जिस दल की नर्तकियां गीत की पंक्ति को गाती हैं, तो "सुग्गी" बनी लड़की अपना मुंह उसी ओर फेर लेती है। इस प्रकार प्रत्येक गीत की पंक्ति पर इधर-उधर गर्दन घूमाने से ऐसा लगता मानों कोई 'सुआ' अपनी चोंच घुमा रहा हो। लड़कियों के पद संचालन में तालियों की ध्वनि में एकरूपता नजर आती है। और सुग्गी के साथ ही नर्तकियां भी अपनी गर्दन इधर-उधर मोड़ती हैं। गर्दन मोड़ने के साथ ही जब ये नर्तकियां पैर पर घुमाव देती हैं तब उस समय एक टांग नर्तकी ऐसे उठाती है जैसे तोते को हम अक्सर देखते हैं। गीत की हर टेक पर तोते की तरह ध्वनि

करने का प्रयत्न यह नर्तकियां करती हैं। जब गांव में यह नृत्य हो जाता तब यही सुआ नृत्य आस पड़ौस के गांव में जाकर किया जाता और अनाज, पैसा एकत्रित करती हैं।

दूसरे गांव पहुंचने पर सुआ नर्तकियों का स्वागत घोटुल के चेलिक बड़े प्रेम से करते हैं। उन्हें गांव के मुखिया से मिलाया जाता है, जो उनके सम्मान में चावल चटनी का भोज देता। पश्चात चेलिकों द्वारा देवी-देवताओं का दर्शन कराया जाता, नदी पहाड़ियों से अवगत कराया जाता और सांझ होने तक उन्हें बिदा करते। इस बीच इस आवन जावन पर जब रास्ते में अन्य मोटियारियां आपस में टकराती तो वहीं थोड़ी देर के लिए रुक जाती और नृत्य करने लगती। फिर एक दूसरे से गले मिलकर बिदा होती हैं।

इस प्रकार सुआ नृत्य युवा स्त्रियों का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है। जो दीवाली पर्व से जुड़ा है। सुआ नृत्य में गाये जानेवाले गीत प्रायः सुआ गीत कहलाते हैं।जो पारिवारिक प्रसंगों और प्रेम के विविध अनुभवों पर आधरित होते हैं। जिसमें विरह की मारी प्रेमिका की अपनी भारी तड़फ होती है, तोते जैसे प्रखर बोली होती है, मीठास होती है। इन नृत्यों के अतिरिक्त रेला नृत्य भी प्रमुख है।

६. कला चित्र :-

घोटुल की दीवारों पर जो भीत्ति चित्र अंकित रहते हैं उनमें से मुख्य रूप से निम्नलिखित हैं। पर्वत, डंका, टोकनी, हाथ के छापे, पुतला, खिड़की, सीढ़ी, चौके, कुंडली, बिच्छू, देव के पत्थर, देवता के दूत, चौंक, पक्षी, घोड़ा, त्रिशूल, गाथा (मृतक, स्मारक) इत्यादि।

गुदना चित्र :-

कुमड़ा, फूल, पत्ती, रेखा, कन्हार, सर्प, चुरवा, भौरा, चावल दोन, एम.व्ही. आदि।

७. घोटुल के वृक्ष :-

घोटुल के आस पास उगनेवाले पेड़, पौधे, बेल में महुआ, साल, अर्क, कोहा, सागौन, छित्ती, इमली, पीपल, मार्का (आकाव), अर्मा, (आम) छ्वा का पेड़, बेरी की झाड़ी, कदम्ब की घनी घाया, सेमर, कुकुरमुत्ता, कनेर, ईतुमरा, कुरूल, छिलवा, टेसू, चम्पा, गेंदा, चमेली इत्यादि है ।

देवी देवता :-

घोटुल के सदस्य जिन देवी-देवताओं की पूजा करते हैं उनमें मुख्य रूप से कोरी देवी गेवड़ा, लिंगो देवी, करेदंगल, नारायणदेव, कारापाण्डुम (वनदेव), मातुल देवी, कोरता पाण्डुम (वर्षा देव या इन्द्रदेव), कोरे पंडुम (भूमिदेवता), ईराड (इमली देव), मर्कादेव, (आमवृक्ष में निवास करने वाला देव), नंदी, दंतेश्वरी, अन्नमदेव (बस्तर के प्रथम भूतपूर्व राजा), बरियापेन इत्यादि है ।

घोटुल के अतिथि :-

घोटुल के उत्सवों, पर्वों में भाग लेने के लिए जिन लोगों को अतिथि के बतौर आमंत्रित किया जाता है उनमें गायता (ग्राम का मुखिया), परगना मांझी (दूसरे क्षेत्र का मुखिया), पेड्गा-पेड़गी (दूसरे घोटुल के आमंत्रित जवान लड़के लड़कियां), पेकी (नवयुवक), पेरमा (गांव के धार्मिक कार्यों को करने वाला नेता), पेदा (गांव का उपमुखिया), मेइदो (दुल्हा), सिरहा (जादूटोना जानने वाला), इनगुण्डा (मृतक संपर्क करने वाला) ।

घोटुल ग्राम :-

घोटुल के समीपस्थ आने वाले ग्रामों में बिसेल, गढ़बंगाल, नारायणपुर, मटमंद, बेनूर, मयनार, नयानार, नेतनार, राऊघाट, दंतेवाड़ा, जगदलपूर, देवगांव, अबूझमाड़, मोवाड़ी, कोड़ागांव, धवडई, परसगांव, बिजली गांव, धनोरा, कांकेर, ओरछा, मोंगापाल, नयानार। तारागांव, कोडागांव, बिजली गांव, मरकामेडा, बेनूर, बिजुरी, एडका, आमगांव, फरसगांव आदि।

घोटुल के सदस्यों के नामः-

बिज्जू, संगलू, पेडूराम, रामधर, मंगलू, रामू, हबका, गूण्डा धूर, हरगूण्डा, हनगूण्डा आदि।

भाषा :-

यहां बोली जाने वाली प्रमुख बोलियों में "हल्बी", "छत्तीसगढी", "गौन्डी" बोली प्रमुख है।

मद्यपान :-

घोटुल का प्रत्येक सदस्य मद्यपान करता है। मद प्रायः महुआ के फूल के रस की, ताड़ी की, सूल्फी की या चावल की बनी होती है। सूल्फी एक वृक्ष के फल की बनी होती है, ताड़ी नीरा या जै से।

८. मोटियारी की बिदाई :-

घोटुल में यदि कोई मोटियारी गर्भवती होती या विवाह योग्य हो जाती, तब उसका विवाह घोटुल से संबंधित "चेलिक से" या किसी अन्य युवक से कर दिया जाता है जो अन्य किसी घोटुल का होता है। ऐसी स्थिति में उसे बहुत ही भावभीनी विदाई दी जाती। ।नत्यगान, मद्यपान, भोज जैसे सभी आयोजन घोटुल में किये जाते और मोटियारी को बिदा करते। दुल्हन के जूड़े में अन्य मोटियारियां अनगिनत कंघियां खोंसती। अंतिम विदा के लिए उसके प्रेमी को बुलाया जाता और कहा जाता की अब वे दोनो एक दूसरे को भूल जावें। अब तुम्हारी प्रेमिका का दूसरा पति हो गया और प्रेमिका को भी कहा जाता अब तुम भी अपने प्रेमी को भूल जावें। अब घोटुल इन्हें विदा करता है और हम यह आशा लगाकर रखेंगे की तुम भी अपनी संतान को शीघ्र ही बड़े होने पर घोटुल में भेजना।

विरह और प्रेमालाप के बाद घोटुल के सब सदस्य वर-वधू को गांव के गेवड़े (सीमा देव) तक पंहुचाने आते हैं। वहां नवदम्पत्ति से गेवड़े की पूजा करवायी जाती है। आटे की लकीर खींचकर चौक बनाये जाते हैं। उन चौक पर लोहे या ताम्बे के छल्ले रखे जाते हैं। जब चौक पर सब छल्ले रख दिए जाते हैं तब दूल्हा दुलहिन को इन छल्लों पर से पार करने के लिए कहा जाता है। दूल्हा दुलहिन दोनों एक दूसरे की कमर में हाथ डालकर बिना पीछे देखे, रेखा, चौक और छल्ले पार करते हैं।

छल्ले पार करने बाद घोटुल के सब साथी घोटुल आ जाते हैं। उस रात घोटुल में कोई कार्यक्रम नहीं रहता। सब अपनी साइगुती(सहेली) की याद में दुखी रहती और इस प्रकार वह रात मोटियारी की बिदाई के गम में व्यतीत होती है।

९. घोटुल की कार्यवाही :-

गांव के पास बना घोटुल दिन भर तो सूना रहता है, ऐसा लगता है मानो घोटुल भी अपनी रात की जागरण को पूरा करने के लिए सोया हो। शाम होते ही घोटुल का सूनापन धीरे-धीरे दूर होने लगता है। सूरज के ढलने के साथ ही घोटुल में चहल पहल शुरू हो जाती है, घोटुल के भाग्य जाग जाते हैं, उसकी नींद टूट जाती है। झोरिया अपने तीन चार साथियों के साथ आता है और खरहरा (तुवर काठी की या ताड़ी के पत्तों की बनी झाडू) से घोटुल का कोना कोना साफ करता। अलाव की लकड़ी को प्रज्ज्वलित करता। तब अलाव के उजाले में एक एक कर घोटुल के साथी आने लगते । वे अपनी बगल में गिकी दबाये आते हैं।

घोटुल में पहुंचनेवाला पहला सदस्य देर से आने वाले दूसरे साथी का द्वार पर इन्तजार करता, उसका स्वागत करता, झुककर रामजुहार करता और इस क्रम से दूसरा तीसरे का, तीसरा चौथे का स्वागत करता है। जब सब घोटुल में पहुंच जाते हैं तब सब घोटुल के सिरदार को रामजुहार करते। कोटवार और चलान के पास अपनी उपस्थिति देते और अलाव के पास बैठकर नृत्यगान कथा कहानियों को कहने की तैयारी करते हैं।

नृत्यगान, कथा कहानियों का यह सिलसिला देर रात तक चलता रहता और जब गांव के लोग गहरी नींद में सोये रहते तब आधीरात के बाद घोटुल का नृत्य संगीत भी बंद हो जाता। एक एक कर सदस्य घोटुल के बरांडे अलाव के पास, परछी में सोने लगते, तब घोटुल के चेलिक (प्रेमी) और मोटियारी (प्रेमिकाएं) अपने अपने युगल जोड़ों के साथ गिकी (चटाई) में बंध जाते हैं। प्रत्येक प्रेमी की एक प्रेमिका होती है।

उन दोनों के बीच काफी देर तक बात-चीत होती और इसी बातचीत के दौरान कब उन्हें नींद लग जाती इसका उन्हें भान ही नहीं रहता। उनकी नींद तो तब टूटती है जब अति सुबह मुर्गे की बांग के साथ घोटुल में हल चल मचने लगती और एक एक कर घोटुल का प्रत्येक सदस्य अपने घर की ओर रवाना होने लगता है। सुबह होते होते घोटुल फिर एकदम सुना हो जाता और इस प्रकार इनका क्रम चलता रहता है।

घोटुल में सम्मेलित सदस्य अपनी-अपनी रुचि के अनुसार घोटुल के कार्यक्रम में भाग लेते हैं। उदाहरणार्थ कोई नृत्य गान, कोई बंसी बजाने में, कोई टोलियां बनाकर पहेलियां पूछने में, कोई लोक कथाएं सुनने में, तो कोई चित्र बनाने में रुचि रखता है।

इस प्रकार अपनी रुचि को प्रगट करने के लिए वह बड़ी व्यग्रता से शाम होने तक इन्तजार करता है।

१०. चेलिकों द्वारा शिकार करना :-

घोटुल के सभी साथी वर्ष में एक बार शिकार सामूहिक तौर से करते है। यह शिकार मार्च अप्रेल के महिने में किया जाता है। जब करापाग्डुम त्योहार आता है इस त्योहार पर करदेंगल की पूजा की जाती है। नृत्यगान होता और घोटुल में सभी चेलिक शिकार करने की तैयारी करते। सभी शिकारी विशेष प्रकार से सजे धजे होते हैं। और वे जंगल जंगल भटक कर छोटे से बड़े जानवर तक का शिकार करते हैं। शिकार पर रवाना होने के पूर्व सभी घोटुल की मोटियारियां उन्हें गांव के गेवड़े तक बिदा करती और उन्हें शिकार अच्छा मिले इसकी वे कामना करती हैं। सभी शिकारी शिकार करने दूरस्थ स्थानों तक जाते। शिकार के बाद वे अपनी शौर्यता का बखान घोटुल में अपनी मोटियारी से करते हैं। दूसरे दिन मोटियारी अपने चेलिक की शिकार कहानी अपनी साइगुती से करती है । तो साइगुती भी अपने चेलिक की वीरता का बखान करती है। इस प्रकार शिकार की यह एक लम्बी श्रृंखला बन जाती जो कई सप्ताह कई माह तक गूंजती रहती है। सच पूछा जावे तो ये मोटियारियां अपने प्रेमी के कार्य से खुश हो जाती हैं।

शिकार के हथियारों में धनुष बाण, कमठा, ठूढी, बल्लम, बर्छी, कुच, चिमटी, कुरूपा, फंदे प्रमुख हैं। जिन्हे ये घोटुल के शिकारी प्रयोग करते हैं। कुछ पक्षियों को बड़ या ऊमर (गूलर) के दूध में फंसाकर पकड़ते हैं। यह चिपकने वाला दूध शिकारी डालियों या पत्तियों पर लपेट देते हैं। अब जैसे ही पक्षी वहां बैठता वैसे ही उसके पर उस दूध में चिपक जाते और इस प्रकार वे पकड़ लेते हैं।

बड़े पशुओं के शिकार में तीर, भाला और फन्दों का प्रयोग करते हैं। तीर द्वारा भागते हुए जानवरों को मारने में ये चेलिक बड़े सिद्धहस्त होते हैं। इनका निशाना इतना अचूक होता कि जानवर बच ही नहीं पाता। यह शिकारी प्रायः झाड़ी में छिपकर बैठ जाते और निशाना मारते हैं या कभी-कभी झाड़ों की टहनियाँ, घास, पत्ते, अपने शरीर में बांधकर वे स्वयं वृक्ष या झाड़ी बनकर घंटों तक बैठे रहते और जैसे ही कोई जानवर गुजरा उस पर ये निशाना लगा देते हैं . या पशुओं के आवागमन से मार्ग में बाजू से निशाना लगा कर चुपचाप खड़े रहते, तीर या भाले की नोक विषैली होने से जानवर शीघ्र ही निष्क्रिय हो जाता। तब पीछा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शिकार करने का सबसे सुन्दर एवं सरल साधन इनका फन्दा है। इन फन्दों में चूहे से लेकर सांभर, चीतल, शेर जैसे बड़े बड़े जानवर तक फंसाये जाते हैं। मोटी रस्सी द्वारा बनाये 'जालनू' फन्दे में तो सांभर, चीते आदि इस तरह फंस जाते हैं कि उनका सारा शरीर अकड़ जाता है। दो, दो, चार चार, जानवर फंस जाने पर भी कोई भाग नहीं पाता। 'मलन्दा' फन्दा में जानवरों के नित्य आवागमन के मार्ग के बाजू किसी बड़े झाड़ की लचीली डाली को बड़ी बुद्धिमता से झुकाकरउसमें पतली किन्तु काफी मजबूत रस्सी बांधते हैं। और उसके आखरी छोर में सरफून्द (हाफाहिच) गांठ लगाकर खोदे हुए गड्ढे के किनारे से खूंटियों के सहारे पक्का बैठा देते है। जानवर ठीक वहीं से निकले इसके लिए खुली जगह को झाड़ कांटों से ढंक देते हैं। अब सुबह शाम जब जानवर वहां से

निकलते हैं, तो अचानक गड्ढे में पैर उनका चला जाता है और रस्सी पांव से कस जाती है। उधर डाली का झटका एकदम उपर लगने से जानवर कई मीटर ऊपर उछलकर कई मीटर नीचे पटका खाता है। इस प्रकार ज्यों ज्यों वह उसमें से निकलने की कोशिश करता त्यों त्यों वह उसमें फंसता जाता है, और वह अधमरा सा हो जाता है। तब, बाद में शिकारी उसे मार डालते हैं। इस प्रकार यह फन्दा बहुत कठिन किन्तु अचूक होता है। इसमें सांभर, चीतल व कभी कभी शेर भी फंस जाता है। सामूहिक शिकार में घोटुल के चेलिक 'हांका' लगाकर जानवरों को फन्दों की तरफ भगाते हैं। भागते जानवरों में कुछ तो रास्ते में ही तीर, भाले आदि के द्वारा निशाना बन जाते हैं तो शेष बचे हुए जानवरों में से कुछ इन फन्दों में फंस जाते हैं। इस प्रकार एक साथ काफी शिकार इनके हाथ आता है।

११. वस्त्रः-

सभी घोटुल के सदस्यों के वस्त्र नाम मात्र के होते हैं। पुरुष वर्ग के वस्त्रों में एक दुप्पटा जो घुटनों तक का होता है। जिसे 'फटका' कहते हैं। सिर पर एक कपड़े का टुकड़ा जिसे पगड़ी नुमा बांध लिया जाता है। स्त्रियों की वेशभूषा में नाम मात्र की एक साड़ी होती, जिसे गर्दन से घुटनों तक पहने होती। चोली ब्लाऊज की इन्हें आवश्यकता नहीं। अपनी निर्धनता के कारण घोटुल की ये मोटियारिने प्रायः एकवस्त्रा रहती हैं। जिसका साक्षी पहाड़ी नाला है। जो नीले पानी से भरा रहता है। जिसमें ये घोटुल कन्याएं वस्त्र की कमी के कारण निवस्त्र स्नान करती हैं। शर्म और लज्जा उन्हें हो, जिनके मन में खोट हो, जिसकी नियत बुरी हो, इसलिए घोटुल के चेलिक भी उधर से नहीं गुजरते। ये घोटुल की कन्याएं अक्सर दोपहर को इस नाले में स्नान करती फिर सूर्य की धूप को टावेल बनाकर बैठ जाती थोड़ी देर देह सूखने पर फिर वही एकमात्र साड़ी पहनकर अपने काम में लग जाती हैं। गरीबी के कारण वे दूसरी साड़ी भी नहीं खरीद पाती । देश स्वंतत्र हुआ, संविधान बना, आदिवासियों के कल्याण के लिए प्लान बने, पर घोटुल कन्या की हालत ज्यों की त्यों रही।

१२. भोलापन :-

शोध अध्ययन के आधार पर एवं जिज्ञासु लेखकों के लेख पर घोटुल के सभी सदस्य कितने सरल मृदुल स्वभाव के है यह निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट होता है। जब घोटुल के सदस्य से उसकी आयु के बारे में पूछा जाता है तब उसका उत्तर बड़े ही सरल ढंग से सुनने को मिलता है। "पैदा तो हो गया पर अब उम्र जानने से क्या लाभ" जब उससे यह पूछा जाता भाई तुम घोटुल में क्यों जाते हो? तो उत्तर मिलता "जब गांव के सब लड़के, लड़कियां वहां जाते तो मैं भी वहां जाता"। सुबह-सुबह जब घोटुल का युवक कंधे पर ताड़ी या सुल्फी (शराब) की हंडी या तूंम्बी लटकाए मजदूरी या शिकार की टोह में निकलता है तो उससे पूछा जाता मित्र तुम कब लौटोंगे तब वह सामने क्षितिज की ओर देखकर, हाथ से नीचे उतरने का इशारा करता अर्थात् "जब सूरज नीचे उतर जाएगा" यानी शाम हो जायेगी । तो क्या तूम्बी की शराब ही उसके लिए भूख मिटाने को काफी है, तरस आता है, नेत्र अश्रुपूरित हो उठते हैं। एक वह भी इन्सान है, जिसके कुत्ते काजू किसमिस खाते, मखमल के बिस्तर पर सोते। तो एक यह भी इन्सान हैं जिसे दोजून भरपेट रोटी भी नहीं। यह वर्ग विषमता कब तक चलेगी। क्या देश की स्वतंत्रता कागजों, फाईलो, कार्यालयों में मिली है। विकास किनका फाईलों का या इन आदिवासियों का।

अध्याय ३

"घोटुल की लोककथाएं"

१. पवित्र प्रेम
२. तन वहां मन तेरे पास
३. तांत्रिक हनगुण्डा
४. वीर गुण्डाधूर
५. नंदी और राजकुमार
६. राजा पुरुषोत्तम देव
७. वीर सिरदार
८. करमा की कहानी
९. चतुर बहू
१०. सीधा मनुष्य चतुर सियार

अध्याय ३

"घोटुल की लोककथाएं"

घोटुल के चेलिक और मोटियारियों के जनजीवन में उनकी लोककथाएं और गाथाओं का भी अपना महत्व है। इनकी लोकगाथाएं हिन्दुओं की भांति ही पौराणिक हैं। इन्हीं में इनका इतिहास अंकित है। इनमें सुनने और कहनेवाले दोनों को ही घोटुल के स्वपनिल अतीत की रोमांचक झांकियां मिलती हैं। घोटुल में प्रचलित लोककथाएं प्रायः प्रणय मिलन, वियोग, सरस कल्पनाएं, अतृप्त आकांक्षाओं से भरपूर होती है।

घोटुल में लोककथाएं प्रायः अलाव के पास बैठकर कही जाती है। कथा प्रारंभ होने से पहले एक हुंकारी भरनेवाले को चुन लिया जाता है जो कहानी के हर वाक्य पर "हां या हूँ' कहता है। इस हुंकारी भरनेवाले में एक अन्य विशेषता यह होती की वह कथा के कुछ अंशों को सुनाते समय जोर जोर से हुंकारी भरता है।

कथा का कथानक एक लम्बी भूमिका के साथ प्रारंभ होता है। जैसे राम साहूकार था, उसके चार पुत्र थे, बाप बेटों में किसी दिन कहासुनी हो जाती और वे चारों बेटे चारों दिशाओं में व्यापार के लिए निकल जाते। उनमें से एक चलते-चलते ऐसे व्दीप में पहुंचता है, जहां के राजा की कन्या अपने अनुपम सौन्दर्य के लिए प्रसिध्द थी। काफी प्रयासों के बाद उस लडके को वह राजकुमारी मिल जाती है। इस प्रकार हर कथा के अन्त में कथा कहने वाला यह कहता है कि जैसे उसकी इच्छा पूरी हुई वैसी सतकी पूरी हो। और कथा समाप्त होती है।

१. पवित्र प्रेम

किसी गांव में एक गायता[1] की बहुत बडी झोपड़ी थी। वह झोपड़ी कई दिनों से सुनसान पडी थी। कुछ दिनों बाद उस झोपडी में दो अजनबी आए। और उन्होंने झोपडी में रहने का निश्चय किया। वे दोनों उस झोपडी में काफी दिनों तक रहे। अन्त में उनमें से एक व्यक्ति चला गया। और जो अजनबी बचा था, उसने अपने व्यवहार के कारण ग्रामवासियों को अपना बना लिया। धीरे- धीरे उसका प्रेम गांव की एक लडकी से भी होने लगा। जब गांववालों को इस राज का पता लगा तो उन्होंने गांव में एक पंचायत बैठायी और यह तय किया की लडकी की शादी अन्यत्र कर दी जावे अन्यथा लडकी और उसके परिवार को जाति से बहिष्कृत कर दिया जावेगा। तब ऐसी स्थिति में उस लडकी का संबंध उसके पिता ने अन्यत्र कर दिया। जब लडकी ने यह सुना तो उसने खुदखुसी कर ली। जब यह घटना लडकी के प्रेमी को मालूम हुई तो उसने भी अपने गले में फंदा डाल लिया। इस प्रकार दो प्रेमियों की आत्मा एक साथ विलीन हो गई। तब से इस 'पवित्र प्रेम' की गाथा प्रत्येक घोटुल में प्रसिद्ध हो गई।

---

१. ग्राम का मुखिया

२. तन वहाँ मन तेरे पास

एक राजा था, वह अपनी रानी को बहुत चाहता था। रानी भी राजा को दिल से चाहती थी। एक समय राजा शिकार करने गया। जब काफी समय हो गया तो रानी को बहुत चिन्ता होने लगी और वह राजा की याद में दिन रात आँसू बहाने लगी। वह अपना मन और दिल बहलाने के लिए हंस, कबूतर, तीतर से बातें करने लगती, उन्हें अपना दुखडा कहने लगी। तब कबूतर को दया आयी। वह उडते उडते जंगल जंगल भटकने लगा। काफी समय के बाद कबूतर ने एक रोज राजा को पा ही लिया। पर जैसे ही कबूतर राजा के पास पहुंचा तो उसने देखा की राजा एक अन्य स्त्री से प्रेमालाप कर रहा है। तब तो कबूतर को काफी दुख हुआ, पुरुष कितना स्वार्थी होता है। वापस आकर उसने सारा किस्सा रानी से कहा, जिसे सुनकर रानी को भी बहुत दुख हुआ। उसने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि राजा उसके साथ ऐसा धोखा कर सकता है ।

अन्त में जब काफी समय हो गया तो राजा अपने सदल, बल, समेत अपनी राजधानी आया। रानी ने बडे ही बुझे मन से उसका स्वागत किया। जब राजा ने इसका कारण पूछा तो रानी ने सविस्तार कबूतर वाली घटना कह दी। जिसे सुनकर राजा ने रानी से कहा, हे रानी जो कुछ भी मैंने किया वह परिस्थितिवश किया। फिर मैंने तो वहाँ तन ही दिया, आत्मा और मन तो तेरे पास है। जिसे सुनकर रानी ने कहा, राजा साहब एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती। और राजा के देखते-देखते उसने अपने पेट में कटार चुभा ली। हे चेलिक [१] (प्रेमी) तू भी कहीं स्वार्थी राजा के समान मुझे धोखा मत देना।

उक्त कहानियां प्रायः जलते अलाव के सामने गोल घेरे में बैठकर की जाती है, या घोटुल के प्रेमी अपनी गिकी [२] में बंधकर कहते हैं। ऐसी ही प्रेम संबंधी कथाएं, उनके भावी जीवन का मार्ग प्रर्दशित करती हैं। ये लोककथाएं क्रम से नयी पीढी को हस्तांतरित हो जाती हैं। इन लोककथाओं से पति पत्नी के प्रति पवित्र प्रेम बनाये रखने की शिक्षा मिलती है। राजा-रानी के माध्यम से अपने दैनिक जीवन की झांकी का चित्रण इन लोककथाओं में मिलता है वह वास्तव में अपने आपमें अनूठापन है।

३. तांत्रिक हनगुण्डा [३]

तंत्र विद्या का विकास इस पृथ्वी पर कैसे हुआ, इससे संबंधीत घोटुल में अनेकानेक लोककथाएं प्रचलित हैं। इन लोककथाओं में निम्नलिखित लोककथाएं बहुत प्रचलित है।

एक समय स्वर्ग में देवताओं [४] ने आपस में यह विचार किया की हमें सब विद्याओं का ज्ञान तो हो गया परन्तु तंत्र विद्या हमसे परे है, अतः इस विद्या को भी सीखना

१.एवं २. घोटुल की मोटियारी का प्रेमी, जिसके साथ मोटियारी रात में घोटुल की गिकी (चटाई) पर सोती है। वहीं वे दोनों लोककथाओं के कल्पना लोक में डूबकर गमगीन हो जाते हैं। ३. मृतक संबंधी कर्म करनेवाला व्यक्ति। या जादू संबंधी ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति। ४. मारिया, मूरिया के जनजाति के देवता, नारायण देव मातुल, पाण्डुम, बनियापन, गेवडा, लिंगो देव है।

अनिवार्य है। यह सोचकर वे सब मृत्यु देवता के पास पहुंचे। और उन्हें अपने मन की बात कही। तब मृत्यु देवता ने उन देवताओं में से सात देवताओं का चुनाव किया और उन्हें लेकर कलियुग में आए। कलियुग में आकर उन्होंने एक बियाबान कोकिस्तान (एकदम सूने) जंगल का चुनाव किया और देवताओं को मंत्र सिखाने लगे। उस जंगल में घोटुल का एक चेलिक भी घोटुल के लिए लकडियां और जडे लेने गया था ।जब वह जडे खोद रहा था तब उसे चारों ओर से कुछ आवाजें सुनने को मिली। उसने चारों ओर देखा पर उसे कोई नहीं दिखाई दिया।

इस प्रकार उसे प्रतिदिन सात दिनों तक आवाजें सुनाई देती रही। सात दिनों बाद जब सारे देवता जादू, मंत्र तंत्र की विद्या सीख गए तो मृत्यु देवता ने उस जंगल में एक समारोह मनाया। इस समारोह में अराध्य देव की पूजा की गई। भेंट स्वरूप मुर्गे, चूजें अंडों की बलि चढ़ाई गई। पश्चात् गुरु ने बलि के प्रसाद को सात भागों में बांटा, परन्तु तभी एक चमत्कार हुआ। वह प्रसाद सात की जगह आठ भागों में बंट गया। तब तो मृत्यु देवता को शंका हुई। और उसने अपने सातों चेलों को बुलाकर कहा कि " जाओ, सारा जंगल खोज डालो कहीं न कहीं भूत, प्रेत, जानवर या मनुष्य तो नहीं छिपा है, उसने कहीं हमारी विद्या तो नहीं सीख ली।

तब सातों चेले जंगल की ओर निकल पड़े । काफी खोज बीन करने के बाद उन्हें एक पेड़ की डाल पर एक घोटुल का चेलिक बैठा मिला। उसे चेलों ने पकड़कर अपने गुरु के सामने उपस्थित किया। तब गुरु (मृत्युदेवता) ने उससे कहा, तुमने हमारी विद्या सीख ली, इसलिए तुम हमे भेंटस्वरूप अपने पुत्र और पुत्रवधू की बलि देना स्वीकार करो? अन्यथा तुम्हारा पूरा परिवार नष्ट कर दूंगा। तब काफी सोच- विचार के बाद चेलिक ने कहा महाराज अभी तो मैं कुंवारा हूँ फिर बलि का प्रश्न ही नहीं उठता। तब मृत्यु देवता ने कहा मुझे यह वचन दो कि जब भी तुम्हारी शादी होगी, और जो भी सन्तान होगी उसकी भेंट तुम्हें देनी होगी ।तब चेलिक ने सोचा एक भेंट की जगह परिवार और तंत्र विद्या तो सीखने को मिल रही है और उसने भेंट देना ही स्वीकार कर लिया।

भेंट स्वीकार कर लिए जाने के बाद मृत्यु देवता ने वह बलि का प्रसाद सबको खिलाया जिसके खाते ही सातों देवता और घोटुल का वह चेलिक तंत्र, मंत्र, जादू, टोने की विद्या से पारंगत हो गए।

कहते हैं कि तभी से तांत्रिक विद्या का प्रचलन कलियुग में हुआ। टोने, टोटके, जन्तर मंतर का तभी से प्रचलन हुआ। और जादू-टोने वाला व्यक्ति गुनिया, जाण, ओझा, हनगुण्डा कहलाए। इनसे सब कोई भय खाते हैं। तब से चेलिक की सन्तान पीढ़ी दर पीढ़ी हनगुण्ड़ा कहलाने लगी.

४. वीर गुण्डाधूर और तांत्रिक हनगुण्डा

एक समय गुण्डाधूर नाम का सज्जन और वीर पुरुष किसी गांव में रहता था। उस गांव में हनगुण्डा नाम की एक दुष्ट स्त्री रहती थी । वह हमेशा गांववालों को बिना किसी कारण के तंग किया करती थी। जिसके कारण गांववाले उससे काफी परेशान हो गए थे। एक दिन सब ने तय किया कि किसी न किसी तरह इस दुष्टा को मार दिया जावे

जिससे सब को सुख चैन मिले। परन्तु कौन उससे मुकाबला करे? कौन बिल्ली के गले में घंटी बांधे? तब सबने एक मत होकर गुण्डाधूर को इस कार्य के लिए चुना। और गुण्डधूर ने उन सबकी बातें सुनी और हनगुण्डा को मारने का संकल्प किया। उसने अपने साथ ग्राम के गायता (मुखिया) को इस कार्य के लिए चुना।

अब गायता और गुण्डाधूर दोनो हनगुण्डा की खोज पर निकल पड़े। जब हनगुण्डा को इस बात का पता लगा तो वह और भी भयंकर अत्याचार करने लगी। वह तरह-तरह के रूप रखकर गांववालों को डराने लगी। उनके पशुओं को मारने लगी। परन्तु सिरहा और गुण्डाधूर ने हिम्मत नहीं छोड़ी और उसकी खोज लगातार करते रहे। एक दिन लोगों और गुण्डाधूर ने देखा की वही तांत्रिक स्त्री एक भारी शेर का रूप धर कर गांव में आयी है। और सिरहा (पटेल) का जानवर उठाकर ले भागी। सिरहा और गुण्डाधूर ने काफी तीर चलाए पर उसे एक भी नहीं लगा, सब व्यर्थ ही रहे।

दूसरे दिन फिर वही शेर आया और उसने फिर सिरहा का एक लमझेना (नौकर) गायब कर दिया। फिर भी उनके सारे प्रयास व्यर्थ रहे। तीसरे दिन उसने गायता का बैल साफ कर दिया। जब वह बैल लेकर जाने लगा तो गुण्डाधूर और गायता भी उसके पीछे हो लिए। वह शेर बैल को एक गुफा में ले गया था। वहां उसने बैल को पहाड़ पर से नीचे पटका, उसकी गर्दन मरोड़ी और खून पीने लगा। खून पी चुकने के बाद शेर ने अपनी पीठ पीपल के झाड़ से रगड़ी तो वे क्या देखते हैं की वही शेर आदमी का रूप बनता जा रहा है। जब वह आधा आदमी बन गया तो गायता ने गुण्डाधूर को इशारा किया और गुण्डाधूर ने दौड़कर अपनी "टांगिया" (कुल्हाडी) से उसकी गर्दन उड़ा दी। परन्तु जैस ही उसने उस शेर रूपी तांत्रिक की गर्दन उड़ाई वैसे ही वह चीख उठा, यह तो उसकी मां थी। वह खूब रोया, खूब पछताया पर क्या करता। जब गांववालों ने भी यह सुना तब वे भी बड़े हक्के बक्के रह गए। वे सोचने लगे क्या हनगुण्डा के दो रूप थे या अनेक, कभी-पुरुष, कभी-स्त्री, कभी शेर। गुण्डाधूर को भी लोगों ने काफी समझाया। कहते हैं तब से गुण्डाधूर का नाम अमर हो गया। और घोटुल के सभी सदस्य ऐसे वीर पुरुष का गुनगान करते हैं, की गुनी बनो, नेक बनो तो ऐसे जिसने अपने ग्राम के लिए अपनी भूमि के लिए अपनी मां को भी माफ नहीं किया।

इस प्रकार घोटुल में साहस, त्याग, तपस्या, प्रेम, दया, कर्तव्यनिष्ठता की कहानी घोटुल के चेलिक, मोटियारी से लेकर सरदार तक से कहते हैं और इस प्रकार की कहानियों से शिक्षा ग्रहण करते हैं।

५. नंदी और राजकुमार

एक समय बस्तर के महाराजा[१] ने अपनी विवाह योग्य पुत्री के वर के लिए देश विदेश[२] में अपने राजदूत भेजे, वे दूत घूमते-घूमते एक नगर की नदी किनारे आए।

---

१. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर बस्तर के प्रथम राजा अन्नमदेव, द्वितीय पुरुषोत्तम देव, तृतीय दलपतदेव, चतुर्थ भौरामदेव, पंचम रुद्रप्रतापदेव और अंतिम षष्ठम राजा प्रवीण चन्द्र भंजदेव हुए। अंतिम राजा की मृत्यु १९६६ में हुई। उपरोक्त लोककथा प्रथम राजा अन्नमदेवके कार्यकाल से घटित है। जो अत्यन्त ही कुशाग्र प्रशासक थे। वे प्रजा के लिए थे, प्रजा उनके लिए थी। २. देश विदेश अन्य प्रान्तों में, रियासतों में भेजना १९४७ के पूर्व देश छोटी छोटी रिसायतों में बंटा था।

वहां उन्हें एक नंदी [1] पर बैठा एक सुन्दर-सा राजकुमार दिखा । जब उन्होंने उससे पूछा तो उस राजकुमार ने संक्षेप में अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं न तो राजकुमार हूँ , न गांव का मुखिया, मैं तो घोटुल का एक चेलिक हूँ, और अपने नंदी के साथ घूमता रहता हूँ । तब दूतों ने उससे पूछा क्या तुम्हारी कोई घोटुल में मोटियारी(प्रेमिका) नहीं है।

तब उसने कहा मैंने न तो अभी तक किसी मोटियारी को पड़िया (कंघी) दी और न ही किसी मोटियारी ने मुझे गिकी (चटाई) दी, न घुइंगा (धुम्रपान) किया। बस दूतों को अपने प्रश्नों का उत्तर मिल गया और उन दूतों ने अपना मन्तव्य उस चेलिक से प्रगट किया और उससे विनती की कि वह इस कार्य में हमारी मदद करे। तब चेलिक उनके साथ हो लिया।

राजधानी आकर दूतों ने सविस्तर से चेलिक के बारे में विवरण राजा से कह सुनाया । राजा भी चेलिक की वाक्पटुता और सुन्दरता से प्रभावित हुआ । फिर भी उसने चेलिक की परीक्षा लेने का विचार किया कि इसका ज्ञान और कितना है। उसने चेलिक से कहा-सुना है तुम्हारे पास एक सुन्दर-सा नंदी है, जो काफी शक्तिशाली है। क्या तुम उसे मेरे हाथी से लड़ा सकते हो, मैं उसकी ताकत तोलना चाहता हूँ । तब राजकुमार को बड़ी चिन्ता हुई की "कहां तो एक बड़ा हाथी और कहां एक साधरण नंदी " फिर भी उसने राजा से हाँ कर दिया और अपने घर आ गया ।

घर आकर चेलिक उदास बैठ गया । शाम को जब नंदी जंगल से चर कर आया तब उसने अपने मालिक को उदास बैठे देखा और उससे उदासी का कारण पूछा (लोककथाओं के आधार पर जब कोई गंभीर बात होती है तब मूक पशु में भी देव वाणी होती, वह भी बोलने लगता है।) तब राजकुमार ने उसे राजा की शर्त बतला दी । नंदी ने हाथी से लड़ने का वचन राजकुमार को दिया।

दूसरे दिन घोटुल का चेलिक नंदी को राजा के हाथी के पास ले गया। हाथी ने नंदी को देखकर एक हुंकार भरी । जिसे सुनकर नंदी ने अपना एक कान हिलाया, जिसमें से कीमती चावल [2] बिखरने लगे। तब उन दोनों [3] ने भरपेट चावल खाए और नंदी ने देखते-देखते हाथी को पछाड़ दिया ।राजा को अपनी हार माननी पड़ी परन्तु फिर भी राजा ने दूसरे दिन के लिए नंदी को भेड़िये से लड़ने की शर्त रखी और दूसरे दिन भी नंदी ने भेड़िए को पछाड़ दिया। तब राजा ने चिढकर नंदी के पास एक भूखा शेर भेजा। और शेर ने एक झपाटा नंदी को मारा परन्तु उसी समय एक चमत्कार हुआ, नंदी का पूरा शरीर लोहे में बदल गया। अब बेचारा शेर क्या करता, जितने पंजे मारता, मुंह मारता, उतना दर्द शेर को होता। हार कर शेर लस्त पड़ गया और राजा को नंदी की ताकत

१. भगवान शंकर का वाहन बैल

२. बस्तर के आदिवासियों का भोजन चावल ही है। चावल ही यहां की प्रमुख उपज है। चावल ही बारहो माह, वार, त्योहार पर सुबह-शाम प्रतिदिन शाम को चावल, सब्जी (कंद, जमीकंद) खाते व प्रातः शाम के चावलों को खाते है। जो 'बसिया चावल' कहलाता है। इसको इमली की चटनी के साथ खाते हैं।

३. राजकुमार व नंदी

और राजकुमार की बुद्धि का लोहा मानना पड़ा। उसने अपनी हार स्वीकार कर ली। और बदले में अपनी सुन्दर-सी कन्या का विवाह घोटुल के उस चेलिक के साथ कर दिया। चेलिक उस राजकुमारी को लेकर घोटुल में आया।

तब घोटुल के सभी साथियों ने मिलकर उत्साह किया, नृत्य गान किया, चेलिक और राजकुमारी को बिदा किया। चेलिक राजा के पास आकर घरजमाई के रूप में रहने लगा। थोड़े दिनों बाद राजा जब वृद्ध हो गया तो उसने अपना पूरा कारोबार अपने दामाद को सौंप दिया। तब तो दामाद ने भी प्रजा की भलाई के लिए अनेक नेक कार्य किये, थाना गुडी (विश्राम गृह) बहुत सुन्दर घोटुल गृह बनवाये।

६. राजा पुरुषोत्तम देव

राजा अन्नमदेव की मृत्यु के बाद, उनका पुत्र पुरुषोत्तमदेव चक्रकोट(बस्तर का पुराना नाम) के राजा बने। वे भी पिता के समान धीर वीर और प्रजा को चाहनेवाले थे। एक बार उन्हें देवी (बस्तर की देवी दंतेसरी) ने स्वप्न दिया की वह उसकी स्थापना अपने राज्य में करें और पहाड़ पर स्थित रथ लावे। दूसरे दिन राजा ने स्वप्न की बात अपने मंत्रियों को कही। तब सब ने देवी की स्थापना करने का निर्णय लिया। राजा समेत सब लोग पहाड़ पर गए वहां से रथ लाये और राजा ने एक सुन्दर-सा मंदिर बना दिया परन्तु देवी की स्थापना नहीं की।

जब मंदिर बन गया तब देवी ने उसे फिर स्वप्न में दर्शन दिया और कहा " हे राजन् मैं तेरे कार्य से बहुत खुश हूँ, अब मैं तुम्हारे राज्य में आना चाहती हूँ। परन्तु शर्त यह रहेगी की तुम पीछे मुड़कर मत देखना, जितनी ही लम्बी तुम्हारी यात्रा होगी उतनी ही दूरी तक तुम्हारा राज्य रहेगा "। दूसरे दिन राजा फिर पहाड़ पर गया और देवी को प्रणाम कर चलने लगा। देवी भी उसके पीछे पीछे चलने लगी। उसे देवी के पैरों में बंधी पायल की मधुर आवाज आती रही। इस प्रकार राजा निरन्तर कई दिन और कई रात तक चलता रहा। परन्तु एक समय राजा जब नदी (बस्तर की डाकती नदी) पार कर रहा था। तो पानी के कारण उसे मधुर आवाज सुनाई नहीं पड़ी। बस राजा को यह शंका हुई की देवी कहीं रुक गई। और उसने पीछे मुड़कर देख लिया। उसके देखते ही देवी जहां की तहां खड़ी हो गई। और कहने लगी "राजन तुमने अपना प्रण तोड़ दिया। अब मैं यहीं रहूंगी। तुम जावो और पन्द्रह दिनों की अवधि तक, जहां-जहां तुम जा सकते हो, वहां-वहां तक अपना राज्य जमा सकते हो, स्थापित कर सकते हो"।

जब राजा ने देवी की बात सुनी तो राजा ने दौड़-दौड़कर सैनिकों को उत्साहित कर, जल्दी-जल्दी सारे चक्कर कोट (बस्तर) में अपना राज्य जमा लिया। देवी के प्रताप से राजा की हमेशा जीत ही होती रही। जब राजा का पूरा राज्य स्थापित हो गया तब देवी जहां ठहरी थी वहीं उसने एक सुन्दर-सा मंदिर बनवा दिया। उसी में देवी की स्थापना की। यही देवी 'दंतेसेरी मइया' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

७. वीर सिरदार

घोटुल की लोककथाओं में सरदार का भी महत्वपूर्ण भूमिका और पद रहता है। इसी से संबंधित निम्नलिखित प्रचलित लोककथा है। जिसमें जैसा पद वैसा कार्य का वर्णन किया गया है।

एक घोटुल में " परेमा " नाम का एक सरदार रहता था । उसने अपने मिलनसार स्वाभावानुकुल घोटुल के सभी साथियों को अपना मित्र बना लिया था। घोटुल के भी सभी चेलिक, मोटियारी, साइगुती का वह ख्याल रखता था, उनके दुखः सुख का साथी बनता था, उनकी समस्याओं का निदान करता था ।

एक समय जब घोटुल का "सिपाही" (गांव की एवं घोटुल की देखभाल करने वाला) बीमार पड़ गया तो उसने यह बीड़ा उठाया । सिपाही को आराम करने दिया, और खुद एक पहारेदार की तरह तैनात हो गया और पहरा देने लगा । योग से थोड़ी देर बाद एक चीता जब घोटुल के पास से गुजरा तो, घोटुल के सरदार की निगाह उस पर पड़ी। उसने देखा की चीता मुंह में दबाये एक गाय के बछड़े को ले जा रहा है। तब घोटुल के सरदार ने चीते पर घोटुल की छपरी फेंकी और अपनी टंगिया (कुल्हाड़ी) और जलती लकड़ी चीते पर फेंकी । छपरी के पड़ते ही चीते ने समझा कोई जानदार चीज हाथ लगी और उसने बछड़े को छोड़ छपरी पर लपका । तभी उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी लगी । जिससे वह सरदार की ओर मुड़ा। तब सरदार ने जलती लकड़ी उस पर फेंकी, जिससे उसके बाल और आंखे जलने लगी और वह भयभीत होकर भाग गया ।

दूसरे दिन घोटुल के सामने मरा बछड़ा दिखा, चीते के पंजों के निशान दिखे, तब घोटुल के सभी सदस्यों ने इसका राज पूछा । तब सरदार ने संक्षेप में रात वाली घटना का जिक्र किया । जिसे सुनकर सभी ने घोटुल के सरदार की प्रशंसा की । यह कहा की यदि सरदार उस समय नहीं होता तो घोटुल के सिपाही का जीवन संकट में पड़ जाता । जब गांववालों ने भी यह सुना तो वे भी काफी प्रसन्न हुए। उस दिन से सरदार के नाम के आगे " वीर " शद्ब लगाया। कहते हैं उस दिन से वह सरदार " विर सरदार" के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

८. करमा की कहानी

एक गांव में सात भाई रहते थे । उनमें से छः बड़े भाइयों का विवाह हो चुका था। छोटे का नाम वीरसिंह था, उसे करमा नाच का बहुत शौक था । वह रात भर एक गांव से दूसरे गांव में नाचने जाया करता था। घर के कामों में उसका मन नहीं लगता था ।

अब बड़े भाइयों को उसकी यह आदत अच्छी नहीं लगी । वह सिर्फ भोजन करने घर आता था । सब ने तय किया कि उसे घर से निकाल दिया जाये । तब वीरसिंह को घर से निकाल दिया गया। वह जंगल में चला गया, फिर भी उसने नाचना नहीं छोड़ा । वह पास पड़ोस में गांववालों को एकत्रित कर करमा नाच करने लगा । जिससे ग्रामवासी बहुत प्रसन्न हुए और उसे अपने गांव में रहने की जगह दे दी ।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और वीरसिंह अपनी मेहनत मजदूरी से काफी धनी हो गया परन्तु उसने नाच गान नहीं छोड़ा। उधर वीरसिंह के चले जाने से घर में दरिद्रता आने लगी, सभी भाई लकड़ी बेचने दूर-दूर के गांवों तक जाने लगे ।

संयोग से एक दिन उसके सब भाई भाभियां उसी गांव में लकड़ी बेचने गए जहां वीरसिंह रहता था । वहां उसने अपने भाइयों भाभियों को पहचान गया । उन्हें घर लाया, भोजन कराया । तब वीर सिंह ने अपना परिचय दिया। तब तो सभी ने उसे घर चलने

को कहा । तब वीरसिंह ने कहा की मैं उसी शर्त पर घर चलूंगा जब तुम सब करमा नृत्य करोगे । तब सब ने उसकी बात स्वीकार कर ली । वीरसिंह जंगल में गया वहां से करमा (एक वृक्ष की डाल) की एक डाल काट लाया और सातों भाइयों भाभियों को टुकड़े कर-करके दी । तब सातों भाइयों भाभियों ने करमा नाच किया । नृत्य गान करने के बाद दूसरे दिन करमा को नदी में प्रवाहित कर दिया । उस दिन के बाद से वे फिर अमीर होने लगे ।

९. चतुर बहू

एक गांव में गिन्डू नाम का एक गरीब आदमी रहता था । उसका एक लड़का था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने कर्ज लेकर जैसे-तैसे अपने बेटे की शादी कर दी । बहू घर आयी और उसने घर का सारा कार्य संभाला । पति और ससुर की सेवा करने लगी । उसे जमीन में गड़ा धन का पता लगाने की विद्या मालूम थी ।

एक समय जब सब सोये थे तो उस बहू को कुछ आवाजें सुनायी दी । वे आवाजें सियारों की थी । बहू उनकी बोली समझ गयी जिसका अर्थ था बरगद के वृक्ष के नीचे धन गड़ा है जो कोई उस धन को निकाल देगा और सांप को मार डालेगा वह मालामाल हो जायेगा । वह स्त्री उसी समय कुदाल लेकर उस स्थान की ओर गई और गड्ढा खोदने लगी । गड्ढा खोदते खोदते उसे काफी समय लगा और सुबह हो गई । उसने दूसरे दिन आने की सोची और घर की ओर मुड़ गई । रास्ते में उसे लोगों ने देख लिया और ससुर से शिकायत की कि उसकी बहू डायन है उसे निकाल दे ।

जब ससुर ने बहू से वस्तुस्थिति की जानकारी चाही तो बहू ने वस्तुस्थिति से ससुर को अवगत करा दिया । उसको भी लोभ आ गया । वह अपने बेटे को लेकर उस स्थान पर गया और लगा खोदने । उसी समय एक भयंकर सर्प उस पेड़ में से निकला। जिसे ससुर ने मार दिया और धन का घड़ा प्राप्त कर लिया । उसे लेकर वे खुशी से घर की ओर लौटे । यह देखकर गांववाले ऐतराज करने लगे तब ससुर ने कहा की उसकी बहू डायन नहीं है वह तो बुद्धिमति है बरगद में धन था, यह उसने जान लिया । मैं उसे घर से नही निकालूंगा ।तब गांववालों को भी ससुर की बात माननी पड़ी और वे आराम से रहने लगे।

१०. सीधा मनुष्य चतुर सियार

एक समय पेरमा नाम का सीधा सच्चा व्यक्ति जंगल में शिकार खेलने गया । वह जंगल जंगल भटका, परन्तु उस दिन उसे कहीं शिकार नहीं मिला । अतः भूख प्यास से व्याकुल पेरमा एक नदी के किनारे आया, वहां उसने भरपेट पानी पिया । जब वह पानी पी चुका तभी उस की दृष्टि जमीन में फंसे एक मगर पर पड़ी । उसने पेरमा से कहा भाई मुझे निकाल दो, बड़ा ऐहसान होगा । इस पर पेरमा ने कहा तुम्हारा क्या भरोसा तुम मुझे ही खा जाओ ।

तब मगर फिर गिड़गिड़ाने लगा तो पेरमा को उस पर दया आ गई और उसने दरार खोद कर मगर को आसानी से निकाल दिया। मगर ने भी जी भर कर पानी पिया

और पेरमा के पास आया और उसे पकड़ लिया और कहने लगा मैं तुम्हें खाऊंगा।इस पर पेरमा उसे छोड़ देने की प्रार्थना करने लगा। परन्तु मगर पर कोई असर नहीं हुआ। तब पेरमा ने कहा तुम मुझे जरूर ही खाना पर पहले तीन जगह तुम्हे फैसला करना होगा। मगर ने पेरमा की शर्त मान ली और पंच फैसले के लिये निकल पड़े।

रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा बैल मिला। उसने दोनों की बात सुनी और कहा मगर ठीक ही कहता है। मनुष्य बेईमान होते हैं। युवावस्था में मुझे खूब खिलाते रहे, पूजते रहे। अब अंत समय में मुझे कोई नहीं पूछता। सुनकर मगर खुश हुआ फिर वे दोनों आगे बढ़े। अब उन्हें रास्ते में एक बछड़ा मिला, उसे भी सारे बातें बतायी गयीं। बछड़े ने कहा कि मनुष्य वास्तव में बेईमान है। उसे बांधकर उसकी मां का दूध खुद पी जाते हैं। इस कारण मगर का कहना उचित है। मगर फिर खुश हुआ और वे आगे बढ़े।

अंत में उन्हें एक भूखा सियार मिला उसने भी उनकी सारी बातें सुनी और कहा यह कैसे हो सकता की जल का प्राणी और जमीन में फंस जावे। भाई जब तक मैं पूर्व स्थिति नहीं देखूं तब तक मैं कोई फैसला नहीं कर सकता। तब वे तीनों उस जगह पर आए जहां मगर फंसा था। वहां मगर दरार में गया। सियार ने पेरमा से कहा अब क्या देखते इस पर मिट्टी डाल दो। तब सीधे साधे पेरमा ने उस पर मिट्टी डाल दी। अब सियार ने कहा इस मिट्टी को ठोंक दो। पेरमा ने वैसा ही किया। तब सियार ने कहा अब क्या देखते हो उठावो कुल्हाड़ा और मगर की गर्दन काट दो। दुष्ट को सजा तो मिलनी ही चाहिए। दुष्टों के साथ कोई मुरव्वत नहीं। तब पेरमा ने ऐसा ही किया और घर आ गया। उधर सियार भी प्रसन्न हो उठा क्योंकि उसे कई दिनों का भोजन मिल गया था।

****

अध्याय ४

घोटुल के लोकगीत

घोटुल के नृत्यों और लोकगीतों पर स्थानीय प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव में तलरूपीय भौगोलिक और प्राकृतिक स्थितियों का प्रभाव भी सम्मिलित होता है। इन गीतों में किसी पर्व समारोह, अपनी आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों की दयनीय झांकी मिलती है। इसके अतिरिक्त रात्रि जागरण से संबंधित गीत जिन्हें 'रातजगा गीत' कहते हैं, भी सम्मीलित है। इन गीतों में अनुत्तेजित और तापहारी की छाप मिलती है। इन सब से यह स्पष्ट होता है की घोटुल में गाए जानेवाले गीतों में सामुदायिकता की भावना होती है। सामुदायिकता की भावना से भरे गीतों के अतिरिक्त घोटुल में प्रणय गीतों की भी अपनी कुछ विशेषता होती है जिन्हें सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

घोटुल के गीतों में घोटुल के युवक युवतियों के गीत जहां श्रोता का मन मुग्ध कर देते हैं, वहीं घोटुल के साथियों कि आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यंजना और उनकी जीवन पद्धति देखने को मिलती है। प्रत्येक गीत को प्रारम्भ करने के पूर्व

तेर, ना, नी, न, ओ
तेर ना ना ना ने नांव रे
ती ना ना मु र ना नारे नाना
ना मुर ना ना हो........

की धुन या शब्द कहे जाते ही यह ध्वनि ढोल नगाड़ों की ध्वनि के साथ, बांस की बनी तुरही के साथ निकाली जाती है। सच पूछा जावे तो तेर ना नी.....की धुन श्रोता का मन बरबस आकर्षित कर लेती है। इनके गीतों की पंक्तियां प्रायः चार या छः होती है।

१. दासत्व गीत

भोले-भाले आदिवासियों का लाभ जहां देश के राजे, महाराजाओं, जमींदार, मालगुजार, पटेल ने उठाया, वहीं अंग्रेजों ने भी इन गरीब आदिवासियों का जी भर शोषण किया और इन्हें दबाते रहे। इतना ही नहीं जब कभी भी इनके केम्प लगते तब इन्होंने आदिवासियों को भी नहीं बक्शा, सीधे स्वभाव के कारण ये अपने स्वागतार्थ घोटुल की नर्तक मंडली को बुलाते उनसे नृत्य गान कराते और इस प्रकार के गीत सुनते जिसमें उनकी तारीफ के पूल बंधे हो एवं इसी से संबंधित निम्नलिखित प्रस्तुत लोकगीत है।

गीत १-

धन रे अंगरिच बाSSSS
तोरी अकल भारी भई

रे रे रेलो रे रेलो रे
अधरे चलाय रिलगारी रे
रिल गारी रे SSSS

अर्थ -

हे अंग्रेज तू धन्य है, तेरी बुद्धि प्रशंसनीय है, तूने रेलगाड़ी चलवायी, तूने हमें सुख दिया। वाह री रेलगाड़ी, रेलगाड़ी । जब मैंने उनसे कहा तुम अब क्यों गीत गाते हो, वे तो चले गए। तो भोले स्वभावानुसार वे चट बोल पड़े अभी तो उनका ही राज्य है। सुनकर मन दुःखित हुआ । सच तो है इसमें उन बेचारों का क्या कसूर, जिन्होंने मात्र गांव के गायता की सेवा की, जमींदार को माना, राजा को ईश्वर माना, उनके सामने चुनाव, मतदान, स्वतंत्रता की बातें करना सब व्यर्थ है। रोटी मिलती रही, घोटुल आबाद रहे, प्रणय लीला यथावत चलती रहे। यही उनकी वास्तविक स्वतंत्रता है।

२. वाद्य गीत :-

लोक वाद्य पर बजाये जानेवाले गीतों में जब घोटुल के प्रेमी नृत्यगान में देरी कर देते हैं तब निम्नलिखित वाद्य की ध्वनि पर संकेतों के माध्यम से घोटुल के रसिकों को आमंत्रित किया जाता है।

गीत २ -

टिमकी टिमक टिम टिम
टिम टिम टिम टिम
रे रे रेलों रेलों रे हो ओ ओ
होय होय, वाह वह रेलो
रेलो रे रेलो SSSS

अर्थ-

टिमकी की ध्वनि टिम टिम बज रही है, बज रही है। इस ध्वनि के साथ साथियो हम सब एकत्र हो ले नाच कूद कर मन बहला ले।

३. कर्तव्यनिष्ठता से संबंधित लोकगीत

घोटुल के प्रत्येक पदाधिकारी की अपनी अलग-अलग ड्यूटी है। और जिस पदाधिकारी की अपने काम के प्रति लापरवाही दिखाई देती है, तब उस काम को घोटुल का सरदार स्वयं पूरा करता, उसे पड़ा नहीं रहने देता ।यही इस लोकगीत में स्पष्ट किया है। साथ ही यदि कोई घोटुल का सदस्य समय पर उपस्थित नहीं होता तो सरदार से लेकर सिपाही तक सभी चिंतातुर हो उठते हैं इन्ही सब बातों का संकेत निम्नलिखित लोकगीत में वर्णित है।

गीत ३ -

पूना गीकी जोड़ी गीकी

सिंगार न गीकी ते दोए
जलिया गीकी ते दोए
बरा बरा झालरसिंह

अर्थ -

दो नई गिकी [१] ले आवो
सिंगार [२] लड़की की चटाई जो है
वह अभी तक क्यों नहीं उठाई ?
जलिया [३] की चटाई क्यों नहीं उठाई ?
बेदना [४] की चटाई क्यों नहीं उठाई ?
जलिया [५] की चटाई क्यों नहीं उठाई ?
आवो झालर सिंह [६] हम चटाई उठाकर उस ओर रख दे ।

प्रस्तुत गीत में जब घोटुल की आंगनबाड़ी में या पिछवाड़े की भूमि पर जब कोई साग सब्जी लगी हो तो उसे बेचने कौन जायेगा, कौन तोड़ेगा, और उसने किस चतुराई से माल बेच आना परन्तु यदि कोई घोटुल का सदस्य बाजार में ठगा जावे तो उसकी बड़ी हंसी होती है। ठगी विद्या से परे रहते, और कर्तव्यनिष्ठता का बोध इस लोकगीत में वर्णित है।

गीत ४

लिटो लिटो बांग परेला ।
काबर काबर कौन टोरेला।
काबर काबर जोलमा टोरेला।
छई छई बोरी को न बेचेला।
छई छई बोरी मनई बेचेला।
नकदी पैसा कौन झोकेला
नकटी पैसा जलाय झोकेला

अर्थ -

घोटुल में भटे तैयार हैं, भटे तैयार हैं। उन्हें झुक-झुककर कौन तौड़ रहा। उन्हे झुक-झुककर जोलमा तोड़ रही । उन्हें बाजार ले जाकर कौन बेचेगा। उन्हें बाजार में मनाई बेचेगा। यह खोटा पैसा किसने लिया । जलाय ने यह खोटा पैसा लिया ।

कर्तव्यनिष्ठता से संबंधित प्रस्तुत लोकगीत में जब घोटुल के चेलिक शिकार पर निकलते हैं, तब घोटुल की मोटियारियां भी अपना कर्तव्य निभाने में कम उत्साह नहीं दिखलाती। अपितु वे चेलिकों का उत्साह भी बढ़ाती है। प्रस्तुत गीत में

---

१. चटाईया २. नाम ३. नाम , ४. नाम , ५. नाम , ६. नाम

मोटियारियां प्रत्येक चेलिक के शिकार के औजारों, उपकरणों का नाम पूछ-पूछ कर उनकी बड़ी चतुराई से परीक्षा ले लेती हैं कि वास्तव में वे शिकारी बनकर जंगल में जा रहे या मात्र दर्शकरूप में।

४. शिकार गीत ५-

चीखल माटी करिया मामा ।
करीगिर कारीगिर शिकारी शिकारी।
कैना का गुलेल दाई।
कैना का कोरी वो।
दाई सुना, सुना कैना का गुलेल।
बांस के तो गुलेल बाबू।
सन सुतरी डोरिया बापू ।
हो कैना का गुलेल दाई।

अर्थ -

चिकनी मिट्टी मामा के काले रंग की तरह है। शिकारियों, शिकारियों उठो, अपनी बन्दूकें संभालो। गुलेल किसकी बनी है? रस्सी किस की बनी है? बांस की गुलेल है । जड़ की पाल की रस्सी है। यह गुलेल मेरी है।

कर्तव्यनिष्ठता से संबंधित प्रस्तुत लोकगीत[१] में जब घोटुल के सदस्य झूम खेती[२] तैयार करते हैं, तब मोटियारियां भी उनको साथ देने के लिए तत्पर हो जाती हैं। इसी अवसर पर वह अपने मन के उद्गार प्रगट करते हुए कहती हैं -

गीत ६

विर पोड़ों पन्ड़ों रोमो रोमों।
कोरक पहची वायकम सांगो ।
मिया वाय वाय पंचतोरक सांगो ।।
कोरक हाह वायकम सांगो ।
मिया वाय वाय हाय तोरर सांगो।
हुर्री तासी वायकम सांगो ।।
मिया वाय वाय हुर्री ।
तस तोरम सांगो ।।

१,२ - किसी भी स्थान या जंगल की भूमि को समतल करना। पेड़, पौधे जला देना, उसकी राख जमीन में बिछा देना और वर्षा होने पर बीजों को छिड़क देना झूम कृषि कहलाता है। इसमें घोटुल के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

अर्थ -

विरपोंड़ी के जंगल में, रोमों की पहाड़ी है। हम वहां झाड़ की डंगालें [१] काटने आएंगे। तुम्हारे आने के पहले, हम डाल काट डालेंगे। हम डंगालों को मैदानों में फैलाने आएंगे। तुम्हारे आने के पहले, हम डंगालें फैला देंगे। हम डंगालों को आग लगाने आएंगे। तुम्हारे आने के पहले हम उनमें आग लगा देंगे। [२]

जब घोटुल के चेलिक शिकार पर जाते हैं, तब वे सब शिकार करते समय समवेत स्वर में वन्य प्राणियों को आमंत्रित करते हैं, और यह दर्शाते हैं कि हम अकेले तुमसे झुझने नहीं आए हैं। हम सब मिलकर आए हैं। हमारी कर्तव्यनिष्ठता और एकता के आगे तुम्हें झुकना ही पड़ेगा।

गीत ७-

अरे तीना ना मुर नाना रे ना ना।
ना मुर नाना हो हो रे रे।
तीना ना मुर ओ नाना, ना मुर ना हो तीना ना मुर।
नाना हो ना मुर ना रे, हुर्रे हुर्रे हुर्रे हुर्रे।
ओ भालू केतो डेरो रे हो।
कहां ओकर डेरा रे।
हो भालू केतो डेरा हो ओ ओ।

अर्थ -

हे शेर तेरा डेरा कहां है? क्या किसी गुफा में है। अरे भालू तेरा डेरा कहाँ है? क्या तेरा डेरा जंगल में है। क्या तेरा डेरा झाड़ियों में है। [३]

घोटुल में कर्तव्य निष्ठता मात्र स्थानीय घोटुल के आधार पर नहीं होती, अपितु क्षेत्र के सभी घोटुलों में कर्तव्य निष्ठता की भावना पाई जाती है। इसी से संबंधित प्रस्तुत लोक गीत में जब "नुनानारे दाना पाण्डुम" का त्योहार आता है, तब एक गांव की

---

१. वृक्षों की टहनियां या शाखाएं।

२. उक्त गीत चेलिक मोटियारियां द्वारा, समवेत स्वर में ढ़ोल, बांसुरी, ढफली, टिमकी की ध्वनि पर गाया जाता है।

३. शिकार के समय वन्य प्राणियों को मारने, पकड़ने के लिए घोटुल के सभी युवक सामूहिक रूप से चारों दिशाओं में बंट जाते और हांका (आवाजें) लगाते-लगाते निर्दिष्ट स्थान पर आ जाते। और वन्य प्राणी घबराकर जब बाहर निकलते उस समय उन्हें विषैले तीरों से मारते हैं।

मोटियारियां दूसरे गांव जाती हैं तब वहां के चेलिक अतिथि मोटियारियों का किस प्रकार स्वागत करते हैं, यही इस गीत में वर्णित है।

गीत -

अग बागा परे गांव रोम देले।
डोंगर भूम तांब पारे गांव रोम देले।
अग बागा रैमा कंदा रोम देलें।
गायता दाद दुआर रे रोम देलें
किले रे कोस रचाय रोम देले।
अगाए इते रइतांग रोम देले।

अर्थ -

ये सुन्दरियाँ किस गांव से आई, ये सुन्दरियाँ उंचे[1] स्थान से आई। ये सुन्दरियाँ कहां ठहरी हैं भाई, यह सुन्दरियाँ गायता[2] के घर ठहरी हैं भाई। उसकी बाड़ी[3] में क्या है भाई, उसकी बाडी में सब्जी है भाई। वहीं उनका निवास है भाई, वहीं अब यह ठहर गई भाई।

८. प्रणय लोकगीत

जब दो साइगुतियाँ[4] आपस में मिलती हैं तब वे एक दूसरे पर कटाक्ष कर अपने प्रेमी का वर्णन करती हैं। इसी से संबंधित प्रस्तुत लोकगीत है। जिसमें एक प्रेमिका को उसकी सहेली चिढ़ा रही है ।

गीत १ -

तेर ना नी न ओ , तेर ना ना रे नांव रे।
ती ना ना मुर, ना ना रे नाना रे।
महुआ गीकी ते दोए, बरा बरा सुलकाए
गीकी तहेलाय रे रे रे....

---

१ दूसरे गांव

२ ग्राम का मुखिया या घोटुल का मुखिया

३ भोजन की व्यवस्था करना। ४. सहेलियां

अर्थ -

तेर ना नी ओ, तेर ना ना रे नांव रे हे महुवा गीकी [१] दे दे, हे गहुवा गीकी दे दे सुलकाए बार बार मांग रहा सुलकाए बार बार मांग रहा।

प्रणय संबंधी लोकगीतों में प्रस्तुत लोकगीत में जब घोटुल के चेलिक, मोटियारी का प्रेम पवित्र होकर चरम सीमा पर पहुंच जाता है, तब उन दोनों की दशा असहनीय-सी हो जाती हैं, वे दोनों एक दुसरे को देखने के लिए उन्मत से हो उठते हैं। दूसरे उनकी दशा उस मछली जैसी होती है जो एक क्षण भी पानी से अलग नहीं होना चाहती। ऐसी ही घोटुल की मोटियारी अपने प्रेमी को अपने पास से एक क्षण भी अलग नहीं करना चाहती । यही अर्थ इस लोकगीत में वर्णित है।

गीत १० -

पत्तर टोडली कारोरे झाकिली
संगाइली बाटो धाखे, तकला कोल्हे पर लुइंगी धरली।
कोनी बोट नोई बाखे हाट फिटी गेला हाट। रे दिन हेला झोंड़ी।
जाग फिटी गेला कांसे, सिरलिंगा, झिरलिंगा रा इकेर
खेलाकी टोक सागरी, गाड़ी बाइल पर बेसनी धेड़बी
कतक होईबी अला करी।

अर्थ-

हे प्रेमी तेरी याद में, मैं. प्रेमिका - पत्ते तोड़कर कांख [२] में भरती जाती हूँ। सड़क के किनारे, बंड़ल बना बनाकर रखे हैं। और मैं घर की ओर थके चरवाहे की तरह लौट रही हूँ। मैं किसी भी तरह, तेरे पास नहीं पहुंच पाई। हाट छूट गया, आठ दिन से भेंट नहीं हुई । एक माह से तेरा स्पर्श नहीं मिला । प्रेमी - रात की कौन कहे, प्रेयसी मैं दिन को चला आता तेरे दादल [३] का जो भय हैं । प्रेमिका - सिरलिंगा, झिरलिंगा, राइकेरा का नाला [४] मछली पकड़ने की बासी से गाडी के बैल के समान तुम्हें नाथ पहनायेंगे, उतावली क्यों दिखाते ।

प्रणय से संबंधी विरह लोकगीत भी घोटुल के चेलिक मोटियारियाँ गाते है। जब किसी मोटियारी का प्रेमी दूरस्थ स्थान पर काफी समय तक रहता है। तब वह अपने प्रेमी की याद में विह्वल हो उठती । और अपने मन की व्यथा अपनी साइगुती से कहती । यही निम्नलिखित लोकगीत में वर्णित है।

---

१. गिकी होने से घोटुल का अन्य सदस्य कभी भी अपने साथी की प्रेमिका पर बुरी दृष्टि नहीं रखता अपितु पवित्रता बनाये रखता।

२. टोकनी ३. परिवार के लोग

४. स्थानीय नाम

गीत ११ -

ओ साइगुती पियु गे परदेश।
न कोउ आवे न कोउ जबे।
न भेजे संदेश ओ साइगुती ।
मोर पियु गे परदेश।

अर्थ -

हे मेरी प्रिय संगिनि, सहेली मेरे प्रियतम परदेश गए किन्हें अपना संदेश कहूँ न कोई आता न कोई जाता। पिया गए परदेश रे ।

उक्त लोकगीत घोटुल की मोटियारी या तो अपनी सहेली को अपने खेत की मचान पर गुलेल से पक्षियों को उड़ाते समय कहती, या घोटुल के एकान्त स्थान में कहती। तब उसकी संगिनि उसे अनेकानेक लोकगीत गा-गाकर उसका मन बहलाती।

घोटुल में शाम होते ही युवक युवतियां आना आरम्भ कर देते हैं । परन्तु यदि किसी मोटियारी का प्रेमी किसी कारणवश देरी से आता है तो वह बहुत ही चिन्तित हो उठती और अपने मन की व्यथा प्रगट करते हुए कहती है।

गीत १२-

कोलकी ले भांक देखे
डांग भर बेला
लकर लकर आवत हो ही।
मोर अलबेला अलबेला। [१]

अर्थ

सूर्य डूबने वाला है। अंधेरा होना बाकी है। मेरा अलबेला प्रियतम झट झट आ रहा होगा।

जब घोटुल का चेलिक विवाह योग्य हो जाता हैं, तब वह अपने प्रेमिका का नाम अपने पिता को बताता है तब पिता सगाई संबंध लेकर वधू के पिता के पास जाता। उसी अवसर का प्रस्तुत लोकगीत है।

गीत १३ -

तुम्हर घर फूल फुटिस
ओकर सुगंध हमर घर पहुंचिस
ओला मांगे बर आए हन।

---

१. डा. एस.सी. दुबे : मानव और संस्कृति

अर्थ -

तुम्हारे घर में एक कली खिली, उसकी सुगंध मेरे घर पहुंची, हम उस कली को लेने आए हैं ।

प्रेम से संबंधित प्रस्तुत लोकगीतों की भाषा अत्यन्त ही क्लिष्ट होने के कारण अनुदित है। जब मुझे गीतों का अर्थ ज्ञात हुआ तो गीत की महत्ता दिखो जो निम्नप्रकार से एक प्रेमिका ने दर्शायी।

गीत

कलाल की लड़की ने माटी से ब्याह किया।
मेरे मन में तो ब्याहता बसी है।
हे मेरे प्रियतम तुम गाओ, तुम पीओ।
अब तुम नाज नखरे मत करो
अब तुम आग्रह न करवाओ।

गीत

जंगल में महुआ बीनते समय
किसी नाग ने डस लिया
अरे उस काले नाग की
बड़ी-बड़ी आंखें मुझे भा गई ।

गीत

मेरे घर वालों को आंखे दुखती
तो मुझसे सेर भर चटनी पिसाते
पर प्रेमी को देखकर लगता
जैसा मैंने मीठा भोजन किया हो।

गीत

नदी के पार हाट जुड़ी है।
मैं हाट जा रही हूँ।
ओ मेरे प्रियतम, तुम पीछे-पीछे आना ।
पर देखना मेरा भाई बड़ा क्रोधी है।
उसकी नजर बचाकर आना।
मेरे लिए एक आरसी खरीद देना।
आरसी में जब भी मैं देखूंगी
अपनी जगह मुझे तुम्हारी सूरत नजर आयेगी।

६. बिदा गीत :-

जब किसी घोटुल की मोटियारी का विवाह किसी कारणवश दूसरे घोटुल के किसी चेलिक से कर दिया जाता है। तब बिदा के अवसर पर दुखित मोटियारियाँ उसे बड़े ही भग्न हृदय से बिदा करते हुए यह कहती है कि इस घोटुल में जो तुम्हारा प्रेमी था उसे भूल जावो और नये सिरे से अपना जीवन बनाओ । यही बात इस लोकगीत में वर्णित है। होनेवाली संतान को घोटुल में भेजते जाना यह संकेत दिया है।

गीत -

नियराजोर तोर लयोर रोक हेलो।
जो दिये ओन दोय किति रोय हेलो।
संगी रे जारे तीर लयोर रोय हेलो ।
अदेरे राजो पुरी रोय हेलो।
डडेके वर पुंदकी रोय हेलो।

अर्थ

हे सखी यहां तुम्हारा एक प्रेमी था। अब तुम उसे छोड़कर जा रही हो। तुम अब इस घोटुल में मत आना। इसका तुम्हें दुख तो होगा पर तुम्हें यह शीघ्र पता लगेगा कि विवाह की जिन्दगी में कितना आनन्द है, कितना सुख है। जाओ अपनी संतान को भी इस घोटुल में भेजना ।

घोटुल की प्रत्येक मोटियारी का विवाह निश्चित है। इसी से संबंधित जब किसी मोटियारी का विवाह होता है तब घोटुल के सभी लोग उसे बहुत ही व्यथित हृदय लिए बिदा करते हैं। उसी अवसर का प्रस्तुत लोकगीत है जिसमें घोटुल का सरदार उदास होकर चुपचाप खड़ा होता है।

गीत -

सिरपुर हेलो डोरी डोरो।
निवेदेके दाकार रोय रोय।
सांगो निवेदेके काकट रोय।
बरग सरपार ते, उदीतन सिरदार
सरपार ताहे हनद, ताने इने पांय नदी
अयो अयो इनद, तुत ताने ओनदी सोइदार

अर्थ -

आज तुम कहां जा रही सखी । मेरी साइगुती[१] मेरी हम सहेली । देखो सरदार[२] उदास से हो गए। देखो साइगुती सब उदास बैठे हैं। तुम अब हमें छोड़ रही हो। तुम सुखी रहो, यही हमारी शुभकामना है।

---

१. घोटुल के सदस्य २. घोटुल का सरदार

बिदा गीत से संबंधित लोकगीत में भी जब घोटुल की मोटियारी का विवाह होता है तो सभी सदस्य नृत्यगान कर भावभीन हृदय से अपने साथियों को बिदा करते और अपने भाव व्यक्त करते हुए घोटुल में होनेवाली घटनाओं का एक एक कर याद दिलाते हैं।यही इस लोकगीत में वर्णित है।

गीत -

रे रेला रे रेला रे रेलो
नियरा मनदाना लोनी रोय हेलो।
लोनी गाजुर हिन्दू रोय हेलो
लयोर ततेल मदा री सांगो
मन्दो देरी कोकोती रे
वाकोती सोयबाड़ रे।

अर्थ-

यह तुम्हारा घर था, तुम्हारी बातें कितनी मजेदार थी , देखो लड़के डंगालें (टहनियां) ला रहे, शादी का खंबा गड़ रहा वह देखो एक लड़की खड़ी है जो थोड़ी झुकी सी शर्मायी सी है। अरी हो मां जरा इधर तो आवे। इस लड़की के दुख को भुला दो । देखो अब तो चावल (विवाह की रश्म पानी में चावल का मिलाना शुभ होता है।) भी मिल गए, अब तो शादी सफल होगी।

७. त्योहार गीत :-

घोटुल का प्रमुख देवता 'करदेंगल' है। इसकी पूजा वर्ष में एक बार घोटुल के सभी साथी मिल-जुलकर करते हैं। उसी अवसर का प्रस्तुत लोकगीत है। जिसमें पूजा के अवसर पर घोटुल के युवा-युवतियों की साज-सज्जा का वर्णन है।

गीत -

दादा ले दादा ले ।
ओरी ओरी सिंगार।
बानी बानी पुंगार
दादा ले दादा ले ।

अर्थ-

घोटुल में आज पूजा है भाई । करदेंगल देव की पूजा है। आवो हम चेलिक श्रृंगार करे आवो हम सब मोटियारियां श्रृंगार करे। अपने-अपने गले में माला पहने।

जब चैत पर्व आता है तब निम्नलिखित लोकगीत घोटुल में गाया जाता है। शब्द क्लिष्ट होने से यथावत अनुदित नहीं हो सका

गीत -

तैता नामुर ना मुर रे ना ना, तुभी नाका जोड़ा डोंगा
हामी ना सुन्दे खड़क सरवार वो, रैयत के दंड पड़ली रे।
दरभा ठाता चो सड़क है तै ना ना मुर SS
पकालु गोबर की पावली, तरास हुनाके बोल्दे छेना
सरकार चो रे रे, दुल्हर कुतीचो दुकान।
मड़ाला दुल्हा कुती चो छेना, हो तै नाना मुर SS
माय चो नाव हीपे हीपे, बेटी चो नाव हीपे हीपे।
पान टोडुक जो हीपे हीपे, तुलसी डोगरी चो हपे।
हो तै ना ना मुर SSS

८. गुदना लोकगीत

घोटुल की सभी साइगुती और मोटियारियाँ गुदना बड़े चाव से गुदवाती हैं। इनका ऐसा विश्वास है कि बिना गुदना के मुक्ति नहीं। क्योंकि मृत्यु के बाद जब आत्मा ईश्वर के पास पहुंचती है तो यमराज उस आत्मा को स्वर्ग की सीढ़ी पर ही रोक लेते हैं और प्रश्न करते हैं कि तूने पति का प्रेम तो पा लिया, तू गुदवाई नहीं जा फिर जन्म ले। दूसरे मतानुसार जब कोई जांगड़ी (शहरी) स्त्री चटक मटक अटकन लटकन के साथ फराटे से रूनझुन करती चलती तो थोड़ी देर के लिए उसका भी मन ललचा उठता है। परन्तु फिर अपने मन को यथावत स्थान पर ले आती, और मन को यह समझाती की ये कोई गहने हैं। क्षणिक, अस्थायी, गहने ऐसे पहनो जिसे कोई मिटा न सके, तोड़ न सके, चुरा न सके, जानलेवा न बन सके। तब वह दौड़कर ओझा स्त्री के पास पहुंचकर उससे मनमाफिक गहने शरीर पर गुदवा लेती। इस अवसर पर उसे दर्द भी होता। तब वह मन कड़ा कर लेती। और सहे... यों के गीत, प्रार्थना पर ध्यान बटोर लेती । इसी अवसर पर प्रस्तुत लोकगीत गाया जाता है। जिसमें उसकी सहेली को गुदना दर्द सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

गीत-

अरजी विनती मां हमार
उई दिनो बचन तुम्हार
सुजी का झारा उतार देउ
उ, उ, इ, इ, मां SSS उतार

अर्थ-

हे मां हमारी प्रार्थना सुन लो। उस दिन तुमने वचन दिया था। सुजी (सुई) की जलन उतार दो। हे मां, हे देवी, दुखहरणी इसकी पीड़ा दूर करो।

गुदना जिन स्थानों पर गुदा होता है उनमें हाथ, जंघा, कुहनी, कपाल, दाढ़ी, पीठ, ऐड़ी, कलाई, छाती मुख्य है। गोदने का काम ओझा जनजाति की स्त्रियाँ करती हैं। ये स्त्रियाँ चार सुईयों को बांधकर प्राकृतिक रस बनाकर उसमें सुइयों को डूबाती फिर शरीर पर चुभाती तथा गुदना आकृतियां बनाती हैं।

९. मृत्यु गीत -

जिसका जन्म है, उसकी मृत्यु भी आवश्यक है। इसी से संबंधित प्रचलित एक लोकगीत है। जिसमें किसी की मृत्यु होने पर घोटुल के लड़के तो दुखी परिवार की सहायता में जुट जाते और मृत देह को श्मशान तक ले जाने में अग्रणी होते। वहीं घोटुल की मोटियारियाँ भी दुखी परिवार को सांत्वना देती है। और विलाप करते हुए गाती हैं।

गीत-

चेलो दादरो रोले, अइ अइ अई।
ओरू बोरू रजाल रे, ए ए ए।
सोरा धारू धरती रोए देवता।
नव खण्डू पिरधीर एके रे ।
सिंगार मालोर दिपू रोए देवा ।
दगाल हाय बालोर र ऐले।

अर्थ-

भाईयो भाईयो आवो आवो। देखो यह कौन राजा है। देखो यह भला राजा है। जो आज संसार से उठ गया। यह राजा कहां जायेगा। यह राजा सोलह परत [१] धरती में नौखंड पृथ्वी [२] में जायेगा। जहां सबका कल्याण होता। यहां[३] सब चिरनिद्रा में सो जाते और उनकी स्मृति में ऐला[४] लगाते।

१०. विविध लोकगीत

घोटुल के सदस्यों को जब नृत्य के अवसर पर आमंत्रित किया जाता है। तब पीतल की बनी या भैंस सींग की बनी तुरही फूँककर निम्नलिखित गीत के माध्यम से बुलाते हैं।

गीत-

केरा लाटा मंगनाथ रे
खेलू खेलू काम लेकी मन
केरा चिम्म नाम रे।
केरा चिम्म नार रे ।

१, २, ३, - स्वर्ग ४. मृतक की समाधि पर लकड़ी पत्थर का चौकोना, तीकोना पत्थर या तख्ता गाड़ना।

अर्थ-

लड़के लड़कियां आओ रे आवो, लड़के लड़कियाँ आवो रे आवो। हम सब मिलकर खेले, हम खेले, हम सब खेले।

जब दूसरे ग्राम की मोटियारियों को आमंत्रित किया जाता है. तब ग्राम की मोटियारियाँ उनका स्वागत करते हुए निम्नलिखित गीत गाती हैं।

गीत

तिना ना मुर ना ना रे, ना ना ना मुर।
गायता ना लोन बेकेरा लयो रे।
ताना लोने वाला रो लयोरे रे।
ओना लोने मूंजरा लयोरे रे।

अर्थ-

गायता का घर किधर है भाई। गायता का घर पास है भाई, उसके घर में कौन है भाई।उसके घर बंदर है भाई।

प्रस्तुत गीत में जब किसी के यहाँ जन्म होता है। तब शिशु जन्म से संबंधित घोटुल की मोटियारियाँ वहां जाकर निम्नलिखित गीत गाती हैं।

गीत -

अंधेरी रात थी।
धीरे-धीरे चन्द्रमा निकला।
प्रतीक्षा और कष्ट के बाद
पुत्र का जन्म हुआ।[१]

तत्व ज्ञान से संबंधित प्रस्तुत लोकगीत में जीवन क्या है इसकी व्याख्या बड़े ही रोचक ढंग से घोटुल के साइगुतियों ने की है।

गीत-

जीयत जनम लेबो
हंसि लेबो, खेल लेबो
मरे ले दुलभ संसार
जिनगी के नई होय भरोसा।

अर्थ-

जन्म लिया है तो जी लो। जन्म लिया है तो हंस लो। मरने से संसार दुर्लभ हो जायेगा। जीवन का कोई भरोसा नहीं।

---

१. गीत अनुदित ही है।

१९. पशु से संबंधित लोकगीत

प्रस्तुत लोकगीत में जब एक बैल बूढ़ा हो जाता है और काम करने के योग्य नहीं रह पता, उस पर भी उसका मालिक उसे पीट रहा। तब मूक बूढ़ा बैल अपनी व्यथा कहता। मूक पशु के माध्यम से ही व्यक्ति के जीवन की तुलना प्रस्तुत लोकगीत में की गई है। गीत अनुदित ही है।

गीत-

जरा ठहर, मेरे किसान मित्र।
गर्मी से तू व्याकुल हो गया।
क्षण भर ठहर, विश्राम कर ले।
तू मुझे मारता है, पर मैं कैसे चलूं।
मैं तो अब बूढ़ा हो गया।
जब तरुण था, तब मैं बिना रुके चलता था।
तब धान के कैसे ऊंचे ढेर लगते थे।
मैं बूढ़ा बैल, तू ही कह, मैं कैसे चलूँ।
मार, मार, मार और मार ले।
जीर्ण हड्डियों का मात्र रक्त बहेगा.
पर मैं शक्तिहीन चलूँ कैसे।
मालिक, साहूकार, जमींदार तुझे मारते।
और तू चुपचाप सब सहन कर लेता
मार मार तू मुझे और मार ले ।
मैं चुपचाप सब सहन कर लूंगा।
मेरा जन्म ही तो बना है
दुख सहन करने का।
भार ढोने का, चलने का।
जरा ठहर मेरे किसान मित्र
जरा ठहर मेरे किसान मित्र।[१]

११. घोटुल के वाद्य

लोकगीतों के साथ वाद्य की संगत जुड़ी हुई है। बिना वाद्य के लोकगीत सुनने में मजा नहीं। इसी से संबंधित निम्नलिखित कुछ वाद्य है, जिनका प्रयोग घोटुल के

१. उक्त गीत नृतत्व शास्त्री एस.सी दुबे की पुस्तक 'मानव संस्कृति' से ।

सदस्य लोकगीतों को गाते समय करते।

केकरेगः- एक वाद्य जो बांस की लकड़ी का बना होता है। इस बांस की लकड़ी को बड़ी ही बारीकी से तराशा जाताहै । और मधुर आवाज से बजाया जाता है।

चिटकुल :- यह भी बांस का बना एक वाद्य है। जो मुंह से बजाया जाता है। यह माउथआर्गन से मिलता जुलता एक वाद्य है।

टिमकी :- टीन के कुंडे पर मृत बकरी के चमड़े को मढ़ा जाता है। इसे बांस की दो कमचियों (काड़ियों) से बजाया जाता है। नृत्य के अवसर पर नृत्य में गतिशीलता लाने के लिए काड़ियों से जोर-जोर से इस वाद्य को बजाया जाता है। वादक गोल घेरे में खड़ा होकर बजाता है।

किकिर :- बांस का बना बाजा जो मुंह से बजाया जाता है।

हातुर ढोल :- भैंस के सींग या पीतल का बना एक वाद्य । जिसे किसी की मृत्यु होने पर बजाया जाता है। जिसे सुनकर सब लोग शव यात्रा में सम्मीलित होते हैं।

मोहरी :- पीतल, कांसे की बनी धातु मिश्रित एक वाद्य । जब कोई विशिष्ट व्यक्ति घोटुल में आता है तब उसके स्वागतार्थ यह वाद्य बजाया जाता है।

थाली :- पीतल, टीन, या अल्युमिनियम की बनी एक थाली जिसे बांस की कमची से बजाते हैं।

तुरही :- पीतल का बना एक वाद्य। जिसे फूंककर बजाया जाता है। (शंख जैसे)।

ड्रम :- लकड़ी के गोल घेरे पर बकरी के चमड़े पर मढ़ा वाद्य।

निसान :- भैंस के सींग या पीतल का बना झेड़ आकार का या एस आकार का वाद्य।

बांसुरी :- बांस की, या स्टील की बनी लम्बी आकृति का वाद्य।

ढोल :- लकड़ी का बना गोलाकार वाद्य, जिसके सिरों पर बकरे का चमड़ा मढ़ा होता है।

ठिसकी :- यह बांस के एक हाथ लम्बे टुकड़े में काठ के दो चकत्ते पिरोकर बनायी जाती है।

उपरोक्त वाद्यों के अतिरिक्त सींग, मादर, छुकुमराई, घुसीर, कल्वकिंग, पुयांग, बेल आदि वाद्य भी हैं।

****

अध्याय ५

घोटुल के त्योहार

१. नुनानारे दाना पाण्डुम त्योहार
२. करापाण्डुम त्योहार
३. कोरता पण्डुम त्योहार
४. कोरे पण्डुम त्योहार
५. ईराऊ पण्डुम त्योहार
६. मार्का पण्डुम त्योहार
७. अन्य त्योहार

घोटुल के त्योहार

घोटुल में वैसे तो प्रतिदिन नृत्य गान, किस्से कहानियां चलते रहते हैं। परन्तु फिर भी पर्व त्योहारों पर घोटुल के साथियों में विशेष उमंग, आकर्षण, साज-सज्जा, श्रृंगार छा जाता है। तब इनकी अपनी शोभा देखने लायक होती है। घोटुल में जिन पर्व उत्सवों पर विशेष तैयारी की जाती हैं, उन पर्व उत्सवों, त्योहार में "नुनानारे दाना", कारापाण्डुम, कोरतापाण्डुम, कोरे पण्डुम, इराऊ पण्डुम, मर्का पण्डुम, वेतविज्जा पारद, हरेबी, नयारवानी, काडामारगा मुख्य हैं।

१. नुनानारे दाना पाण्डुम -

अक्टूम्बर माह में मनाया जाने वाला घोटुल का प्रसिद्ध त्योहार "नुनानारे दाना पाण्डुम" है। इस त्योहार पर सभी मोटियारियां दूसरे घोटुलों में जाती। जब ये मोटियारियां नाचते गाते दूसरे में जाती हैं, तब उस ग्राम के घोटुल के सरदार, चेलिक और ग्राम का गायता ग्राम की सीमा पर उनका स्वागत करता है। स्वागत के पश्चात् मोटियारियाँ "मातूल देव" की पूजा करतीं और घोटुल के सरदार और गायता का आशीर्वाद प्राप्त करतीं। आशीर्वाद के बाद सभी गायता के घर की ओर प्रस्थान करते। वहाँ पहुंचने पर काफी देर तक नृत्यगान होता। पश्चात् वे गायता के यहाँ भोजन करतीं व थोड़ी देर विश्राम करतीं। शाम होते ही इन मोटियारियां के पग घोटुल की ओर बढ़ने लगते। घोटुल में पहुंचकर ये अपना परिचय चेलिकों को देतीं। बदले में चेलिक भी अपना परिचय मोटियारियों को देते। तब मोटियारियों का खूब स्वागत सत्कार किया जाता, छक कर मद पिलाई जाती और नशे में धुत मोटियारियाँ नृत्य आरम्भ कर देतीं।

नृत्य पूरी रात मृदंग, ढोलक, चीमटा, चटकोरी, बांसुरी की ध्वनियों पर चलता रहता। तेर नातेर की धुन निकलती रहती, अलाव की लकड़ी एक एक कर समाप्त हो जाती। फिर भी इनका नृत्य समाप्त नहीं होता। अन्त में भोर के तारे के साथ, मुर्गे की बांग के साथ, पूरब में लालिमा निकलने के साथ इनकी नृत्य समाप्त होता और भोर होते ही चेलिक नृत्य छोड़कर उनकी सेवा में लग जाते।

घोटुल में चेलिक उन्हें अपने ग्राम का परिचय कराते, देवी देवताओं के दर्शन कराते और कुटमों, चावल, कोदो का स्वादिष्ट भोजन कराते। भोजन के बाद भेंट देने की रस्म अदा करते। इस रस्म में घोटुल के चेलिक पूरे गांव में एक झोली फिराते।[१] इस झोली में जितना भी अनाज मिलता वह सब भेंट स्वरूप इन मोटियारियों को दे दिया जाता। भेंट प्राप्त होने पर मोटियारियाँ घोटुल के सरदार को प्रणाम करतीं, आशीर्वाद लेतीं हैं।

---

१. फटा पुराना चौकर टुकडे के चारों कोनों को पकडकर झोली या थैली का रूप देना।

हम उम्र चेलिकों का अभिनंदन करतीं । बिदाई और मग्न हृदय लिए अपने घोटुल की ओर लौट आतीं। रास्ते में गांव के गेवड़े (सीमादेव) [१] की पूजा करतीं।

२. कारापण्डुम त्योहार

फरवरी माह में घोटुल के युवा साथी इस त्योहार को बड़ी ही धूमधाम से मनाते हैं । इस त्योहार के बाद ही जंगल से घास काटकर लाना, बांस लाने का कार्य, वन्य फसले लाना आदि कार्य प्रारम्भ किये जाते हैं। इस त्योहार पर करेदंगल की पूजा की जाती है। करदेंगल घोटुल के रक्ष्क माने जाते हैं। यह देवता जंगल का देवता कहलाता है। इस त्योहार के बाद ही जंगली चीजें जैसे घास, बांस, लकड़ी आदि काटी जाती है।

३. कोरता प्राण्डुम

सितम्बर - अक्टूबर में यह त्योहार मनाया जाता है। अभी तक घोटुल के सदस्य नृत्यगान का कार्यक्रम घोटुल के बरांडों या कमरों में करते हैं, परन्तु जब यह त्योहार मन जाता तो आसमान मैदान साफ हो जाता है। वर्षा समाप्त हो जाती है। तब खुले आकाश के तले अलाव की धूनी में देह को सेंकते, कहानी किस्से बतियाते, नृत्यगान करते। इस त्योहार को मनाने के पूर्व चौमासा में मैदान में ऐसे कार्यक्रमों का करना घोटुल के साथियों के लिए निषेध है।

इस त्योहार की रात पूरे घोटुल में चहल-पहल सी मच जाती। खुले मैदान में नाच होता, घोटुल में सभी जवान साथी अपने अपने जोड़ों में बंट जाते। तब उन्हें अपने मन की साध पूरी करने का अवसर मिलता, खूब छक कर "लांदा" (मद शराब) पीते और चन्द्रमा के साथ-साथ नृत्य करते। चांदनी रात उनके नृत्य को सहारा देती ।

४. कोरे पण्डुम

इस त्योहार पर "भूम" देवता की पूजा घोटुल के सदस्यों द्वारा की जाती है। यह त्योहार अप्रेल या मई के महिने में जब वर्षा की हल्की-सी फुहार या पानी की बूंदा-बांदी पड़ती है, तक मनाया जाता है। "भूम देवता" पुरुखों का प्रतीक माना जाता। इसकी पूजा घोटुल के सरदार के माध्यम से की जाती। पूजा के बाद घोटुल के सभी युवक युवतियाँ मद्यपान करते और रात भर नृत्य गान करते हैं। घोटुल का नियम है कि जब तक कोरेपण्डुम का त्योहार न मनाया जाये जब तक भूम देवता की पूजा न की जाये, तब तक वन की लकड़ी का उपयोग करना वर्जित है। अतः इस त्योहार को मनाने के बाद ही अन्य संबंधी कार्य घोटुल के सभी साथी प्रारम्भ करते हैं।

५. ईराऊ पण्डुम

यह त्योहार फरवरी से मार्च के महीने में मनाया जाता है। इस त्योहार पर पहूंचा पेड की पूजा घोटुल के सभी चेलिक, मोटियारी, साइगुती करते नृत्यगान के बाद दूसरे दिन से महुवा फूलें चुनना प्रारम्भ कर देते हैं। महुवा फूल ही इनका जीवन दाता है। यह फूल

---

१. पत्थरों की ढेरी का बना देवता, जिसे सिन्दूर करेल (ध्वजा) लगाकर सीमा देव का रूप दिया जाता। इस देवता की पूजा प्रतिवर्ष इसी त्योहार पर की जाती और शक्तिनुसार-अनाज के कुछ दाने चढ़ातीं।

वर्षा के समय जब अनाज की कमी रहती तब इसे खा कर भूखे पेट की ज्वाला शांत करते हैं। इसके अतिरिक्त इस फूल से मद बनाई जाती है जिसके नशे में मस्त होकर यह अपने दुख भूला लेते। जब मैंने एक चेलिक से पूछा भैय्या यह मद क्यों पीते? तो बड़ा ही सटीक सा उत्तर मिला। "हमें मिलती है, तो पीते हैं, हम भूखे जरूर हैं पर मद पीकर सुखी तो हैं।"

६. मर्का पण्डुम

यह मार्च और अप्रेल माह में मनाया जाने वाला त्योहार है। इस त्योहार को मनाने के बाद ही घोटुल के युवा साथी आम वृक्ष की कैरी, फल, तोड़ सकते हैं। चूंकि इनका ऐसा विश्वास है कि जब सब पशु पक्षी, प्राणी अपनी अपनी मर्यादा में रहते हैं, फिर हम क्यों पीछे रहे। हमें भी त्योहार मनाने के बाद फल प्राप्त करना चाहिए।

७. वेल विज्जा

यह त्योहार अप्रेल और मई माह में मनाया जाता। इस दिन घोटुल के साथी घोटुल के आसपास की जमीन साफ करते हैं और खेत तैयार करते हैं। इसके बाद वे अपने-अपने खेत को तैयार करते हैं। कठिन परिश्रम करने के बाद वर्षा होने पर खेत में बीज देते हैं।

८. पारंद

इस त्योहार पर घोटुल के सभी चेलिक सामूहिक रूप से जंगल में जाकर शिकार करते हैं। अपने विषैले तीरों से अनेकानेक वन्य प्राणियों को हताहत करते और शिकार लाते हैं। शिकार के बाद भोजन कर नृत्य गान करते हैं।

९. हरेली

यह त्योहार वर्षा ऋतु में जब खेतों की फसल लहलहाने लगती है, तब मनाया जाता है। शाम को नृत्यगान होता है, और भूमदवता से अच्छी फसल होने की प्रार्थना करते हैं।

१०. नयाखानी या दीयारी त्योहार

यह त्योहार सितम्बर से अक्टूबर माह के बीच जब धान की फसल आ जाती है तब मनाते हैं। इस दिन भूम देवता तथा घोटुल की देवी को नया धान चढ़ाते हैं, फिर पूजा करते हैं, और जो चावल का भोजन बनता उसे सब घोटुल के सदस्य खाते। नृत्यगान के साथ यह उत्सव भी समाप्त होता है।

११. काडामारगा त्योहार

यह त्योहार ग्रीष्म ऋतु के मई जून माह में मनाया जाता है। इस त्योहार पर घोटुल की सभी मोटियारियाँ अपने शरीर पर गुदना गुदवाती हैं।

इस प्रकार उपरोक्त त्योहार के अतिरिक्त चैत्र पूनों जैसा त्योहार भी मनाया जाता है, जिसमें घोटुल के चेलिकों, मोटियारियों, एवं नृतकों का तमाशा देखने पूरा गांव एकत्रित होता है। इस दिन नृत्य की होड़ में नृतक एक से एक अपनी नृत्य कलाएं प्रदर्शित करते हैं।

अध्याय ६

घोटुल की प्रथाएं

१. नारायण देव पूजा प्रथा
२. दूध लौटाने की प्रथा
३. लांदा प्रथा
४. एकदाना प्रथा
५. दीवारी प्रथा
६. कारापाण्डुम प्रथा
७. भगेला प्रथा
८. लमझेना प्रथा
९. मातुल प्रथा
१०. आखेट प्रथा
११. लगीर फिराई प्रथा

घोटुल की प्रथाएं

किसी सामाजिक व्यवस्था में उसके सांस्कृतिक संयुक्त का आधार उन व्यवस्था के लोगों के विश्वास प्रथाओं से ही होते हैं। इसलिये यदि किसी सामाजिक व्यवस्था के अन्तराल को देखना और पहचानना है तो उस व्यवस्था में प्रचलित प्रथाओं का अध्ययन करना अनिवार्य होता है। इसी कारण तो प्रथाएं लोकरीतियों के स्थायी स्वरूप का ही दूसरा नाम है। एक समाज में कुछ लोकरीतियों का "प्रथाओं" का रूप प्रथाओं का सामाजिक स्वरूप इतना सबल होता है कि लोग प्रथा का पालन बिना किसी प्रत्यक्ष अधिनियम के बिना किसी संगठित सत्ता के दबाव के स्वतः ही करते हैं और इसे अनिवार्यतः अगली पीढ़ी को सौंप देते हैं। इस प्रकार प्रथा एक आदत है, जो मनुष्य द्वारा समाज से सीखी जाती है और समाज द्वारा हस्तांतरित की जाती हैं।

घोटुल की भी ऐसी ही कुछ प्रथाएं हैं जिसे एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी के सदस्य बिना किसी झिझक के अपनाते रहते हैं। जिनके कारण इनमें सामाजिक पारिवारीक संगठन बना रहता है। एक सबके लिए होता है और सब एक के लिए होता है।

१. नारायण देव की पूजा प्रथा

घोटुल के अन्य देवों में नारायणदेव का स्थान भी महत्वपूर्ण है। इस देव की भी प्रति वर्ष पूजा की जाती है। इस देव की पूजा सिराहा [१] द्वारा की जाती। सिराहा ही प्रतिवर्ष पूजा की तिथि तय करता। निर्धारित तिथि पर सब लोग घोटुल में एकत्रित होते। और सिराहा द्वारा नारायण देव की पूजा आरम्भ की जाती है। पूजा में वह सबसे पहले नारायण देव के सामने चकमक पत्थर [२] से रुई जलाकर दीपक प्रज्वलित करता है। दीपक के जलने के बाद धूप दी जाती है। इस धूप में जलते कंडे पर तेल की बूंदें डाली जाती है, जिसका धुंआ दूप कहलाता है। दूप देते समय सिरहा मन ही मन कुछ मंत्र गुनगुनाता है। मंत्र गुनगुनाने के बाद वह कुछ चावल हाथ में लेता है और उन पर भी मंत्र गुनगुनाता है। अब इन मंत्र बिद्ध चावलों को सुअर की ओर फेंका जाता है । यदि मंत्र के प्रभाव से सुअर चावल के दानों की ओर मुंह कर खाने लगे तो यह समझा जाता है की देव को सुअर की बलि स्वीकार है।

बलि स्वीकार करने के बाद सुअर पर लांदा [३] चढ़ाई जाती है और नारियल चढ़ाया जाता है पश्चात् बलि देने की तैयारी की जाती है। सिरहा सुअर की आरती उतारता

१. जादू टोने का काम जानने वाला

२. दो पत्थरों को रगड़ने से चिनगारी के पास सेमल की रुई रखी जाती है जिससे रुई आग पकड़ लेती और जलने लगती है।

३. शराब

और बलि का संकेत देता है। संकेत मिलते ही घोटुल के युवक सुअर के पैर बांधकर खौलते हुए गर्म पानी के गढ़े में धकेलते हैं। गर्म पानी के लगने से सुअर चिंघाड़ने लगता है। सुअर के चिंघाड़ने से यह अनुमान लगाया जाता की नारायण देव प्रसन्न हो गए हैं। तब देव की प्रसन्नता और गांव में वर्ष भर सुख शांति का छा जाना है। गांव में भूतप्रेतादि बाधा से छुटकारा इत्यादि विचार उपस्थित समुदाय लगाता है। पश्चात् सुअर की फिर से बलि कर दी जाती है। बलि का सिर और अगले दो टांगे नारायण देव की प्रतिमा पर चढ़ाया जाता है। बाकी बलि को पकाकर प्रसाद के रूप में बांट दिया जाता है । और नृत्यगान के बाद यह उत्सव समाप्त होता है।

२. दूध लौटाने की प्रथा

इस प्रथा में जिस वंश की एक लड़की दूसरे वंश में ब्याही जाती। उसी वंश से एक लड़की लेने का अधिकार विवाह करने वाले वंश को होता। यही प्रथा "दूध लौटाने" की प्रथा कहलाती है।

३. लांदा प्रथा

इस प्रथा में जब किसी घोटुल की मोटियारी के विवाह के अवसर पर मोटियारी का पिता घोटुल में सभी सदस्यों को आमंत्रित करता है। उन्हें भोजन कराया जाता और लांदा प्रथा आरम्भ करते हैं। जिसमें दूल्हा दुल्हन को एक प्याला लांदा (शराब) पिलाता, प्रतिउत्तर में दुल्हन भी दूल्हे को एक प्याला लांदा पिलाती। पश्चात् घोटुल के सब साथी लांदा पीते। लांदा पीने के बाद सब नृत्य गान सामूहिक रूप से करते और विवाह की रस्म पूर्ण होती। नृत्य के अवसर पर दुल्हन की मां या सहेली हल्दी का घोल "करघुली" (कडछी) में भर भर कर नृर्तक दल और दूल्हा दुल्हन पर छिड़कती।

४. एक दाना प्रथा

यह प्रथा लांदा प्रथा से कुछ मिलती जुलती है। जब लांदा प्रथा में नृत्य के दौरान दुल्हन पक्ष की ओर से हल्दी का घोल नृतक दल पर डाला जाता है। तब दूल्हा दुल्हन नृर्तकों के गोल घेरे में नाचते नाचते आ जाते हैं। अब "एक दाना प्रथा" प्रारम्भ होती है जिसमें वधू पक्ष की ओर से दूल्हे पर तेल डाला जाता। तेल डालते समय इस बात का विशेष ध्यान दिया जाता की तेल दूल्हे पर ही गिरे किसी अन्य नृर्तक पर नहीं अन्यथा अशुभ समझा जाता । और नृत्य उत्सव स्थगित कर दिया जाता और यही एकदाना प्रथा दूसरे दिन की जाती है।

५. दीवारी प्रथा

इस प्रथा में गांव भर के लोग घोटुल में आते हैं और दूसरे गांव से आयी मोटियारियां के नृत्य गान देखते हैं ये मोटियारियां भी उस गांव के देवी देवताओं की पूजा करतीं और अपने से बड़े लोगों को नतमस्तक नवाती, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करतीं। पश्चात् नृत्य कार्यक्रम में भाग लेतीं।

६. कारापाण्डुम प्रथा

इस प्रथा में गांव के सब स्त्री , पुरुष घोटुल के पास जमा होते हैं, जहाँ घोटुल के सभी चेलिक मोटियारियां उनका स्वागत सत्कार करते हैं। पश्चात कुछ लोग तो नर्तकों का नृत्य देखने के लिए दर्शक बनकर बैठ जाते हैं और नवविवाहित जोड़े नृत्य में भाग लेते हैं। यह जोड़े भी घोटुल के सदस्यों के साथ नृत्य करते हैं।

इस प्रथा के तहत नवविवाहित लोगों को अपनी-अपनी पत्नी से अलग रहना पड़ता है। नव विवाहित जोड़ों के लिए यह एक कठिन परीक्षा रहती। फिर भी वे एक दूसरे को देखकर सारी रात नृत्य गान में व्यतीत करते हैं ।

प्रातःकाल होने पर गायता के निर्देशन में "नार" [१] की पूजा की जाती है। इस पूजा में मुर्गे और बकरे की बलि दी जाती है। पहली बलि मुर्गे की और दूसरी बलि बकरे की दी जाती है। मुर्गे की बलि धरती माता और बकरे की बलि पुरखों को दी जाती है।

७. भगेला प्रथा

दरिद्रता आदिवासियों के जीवन में अभिशाप बनकर व्याप्त हो गई है। इसी दरिद्रता के कारण आदिवासियों की पीढ़ी दर पीढ़ी साहूकार से कर्ज लेती और कर्ज न पटा पाने की स्थिति में आदिवासी साहूकार के यहां बेगार करता है, नौकर बनकर साहूकार के सब काम करता और जब आदिवासी युवक अपनी दिली तमन्नाओं को कुचलकर घोटुल में न जाते हुए साहूकार के यहाँ सेवक (भृत्य) के रूप में काम करने लगता है। तब यह कार्य "भगेला" प्रथा के अन्तर्गत आता है। जहाँ वह अपने अरमानों को कुचलकर कर्ज से मुक्त होने की कोशिश करता परन्तु साहूकार का कर्ज सुरसा के मुख के समान बढ़ता ही जाता है।

८. लमझेना प्रथा

इस प्रथा में जब कोई गरीब परिवार का पिता वधू मूल्य देने में अपनी असमर्थता बतलाता है तब वधू का पिता स्वंय उस लड़के को अपने यहाँ सेवक के रूप में कुछ वर्षों के लिये रख लेता है । यह अवधि जाति पंचायत या जाति नियमों के अनुसार तय की जाती है। अवधि समाप्त होने के बाद उस लड़के का विवाह पिता अपनी पुत्री के साथ कर देता है। इस अवधि के दौरान लमझेना रखे लड़के का आचरण, कार्य करने की क्षमता, स्वभाव आदि की भी परख कर ली जाती है। तथा लमझेना की सेवा अवधि तक अपनी होनेवाली पत्नी की ओर नाम मात्र के लिए भी नहीं देख सकता। न ही किसी प्रकार का संकेत कर सकता। उसकी भावी पत्नी भी नियमों का पालन करने में उसका साथ देती है। चूंकि उसे भी डर रहता की कहीं नियम का उल्लंघन हो गया तो फिर सेवा की अवधि बढ़ जावेगी और उसका भावी प्रेमी, प्रियतम, पति उससे दूर होता जायेगा।

---

१. नदी

९. करदेंगल या मातुल प्रथा

इस प्रथा में घोटुल के देवता करदेंगल की पूजा करते हैं। यह देवता घोटुल के पास ही स्थापित किया जाता है। छोटे-छोटे गोल, लम्बे आकार के पत्थरों की ढेरी होती है।जिसे सिन्दूर और तेल के घोल से पोता जाता है और देवता का रूप दिया जाता है। इस देवता की पूजा गांव के पेरमा (पुरोहित) द्वारा की जाती है। प्रेरमा द्वारा देव को धूप दी जाती, दीपक जलाया जाता और मुर्गे या बकरे की बलि दी जाती है। यदि किसी ग्राम का घोटुल बड़ा हो, या आबादी अधिक हो तो वहां भैंसे की बलि दी जाती है। उसके रक्त से देव को स्नान कराया जाता है, और बलि का प्रसाद सबको बांटा जाता है। इस पूजा के बाद जंगल के अन्य देवी-देवताओं की पूजा भी की जाती है। उन पर भी चूजे या मुर्गे की बलि चढ़ाते और महुवा के फूल बिनना आरम्भ करते हैं।

इस दिन घोटुल के सरदार (मुखिया) का चुनाव भी किया जाता है। करदेंगल और अन्य देवी-देवताओं की पूजा के बाद ग्राम का गायता घोटुल के सरदार का चुनाव घोटुल के सदस्यों की राय से करता है। पश्चात चुने गए सदस्य के सिर पर कुंकुम का तिलक लगाकर घोटुल के नए सरदार होने की घोषणा करता है। फिर नया सरदार अपनी इच्छा से घोटुल के अन्य पदाधिकारियों का चुनाव करता और सबके मस्तक पर तिलक लगाता और अपने से बड़ों के पैर छूता, आशीर्वाद प्राप्त करता है। नया सरदार और अन्य पदाधिकारियों के चुनने की खुशी में नृत्यगान प्रारम्भ होता है। घोटुल के चेलिक, मोटियारियाँ विशेष रूप से सजे धजे होते हैं, हर मोटियारी के गले में रंग बिरंगी मालाएं, प्रेमियों द्वारा दी गई चुड़ियां, बालों में फूलों का गुच्छा होता है। घोटुल के चेलकों की वेशभूषा में पीठ पर तीर तरकस बंधे हुए, गले में प्रेमिकाओं द्वारा दी गई डगरपोल (मालाएं), कानों में पीतल के कुण्डल, घुटनों तक किसी वृक्ष की छाल लपेटे हुए होते हैं। पूरी रात नृत्यगान का कार्यक्रम चलता रहता है।

१०. आखेट प्रथा

करदेंगल की पूजा और नृत्यगान के बाद घोटुल-के सभी चेलिक वन में जाकर आखेट करते हैं। यह प्रथा फाल्गुन मास में की जाती है। घोटुल के सभी साथी (केवल चेलिक) जंगल में जाकर छोटे से बड़े तक के प्राणी का शिकार करते। इसके लिए उन्हें जंगल जंगल भटकना पड़ता है और शाम को वापस आते हैं। भोजन करने के बाद सभी चेलिक शिकार की कहानी शाम को घोटुल में अपनी अपनी मोटियारियों को कहते हैं। परिणाम स्वरूप दूसरे दिन सभी मोटियारियाँ अपने अपने प्रेमी की शौर्य गाथा का वर्णन अपनी अपनी सहेलियों के सामने प्रगट करतीं, और अपने भाग्य को धन्य मानती की उन्होंने जिन चेलिकों का चुनाव किया है, वह चुनाव सार्थक रहा। इस प्रकार इस प्रथा में आखेट करने की प्रथा सम्मेलित रहती है।

११.लगीर फिराई प्रथा

इस प्रथा में विवाह के समय दूल्हा दुल्हन को मंडप के समीप लाया जाता है और यह देखा जाता कि होनेवाली दम्पति का भावी जीवन किस प्रकार होगा। इसके लिए गायता (पुरोहित) चावल के दानों को जल से भरे एल्युमोनियम के कलश में छोड़ता

है। अब चावल के दाने तैरने लगते हैं। यदि यही दाने तैरते-तैरते एक दूसरे के पास दो, चार, छै, आठ की जोड़ी में मिल जावे तो दूल्हा, दुल्हन का भावी जीवन सफल माना जाता है। यदि पहले प्रयास में ही चावल के दानों की जोड़ी नहीं बनती तो लगातार तीन बार प्रयास किये जाते हैं। तब किसी न किसी स्थिति में चावल के दानों की जोड़ियाँ बन ही जाती है। बन जाने के बाद दूल्हा दुल्हन को मद पिलाई जाती है, घोटुल के जोड़ी में सदस्य भी मद पीते और नृत्यगान में भाग लेते सारी रात नृत्यगान चलता है। पश्चात प्रातःकाल होने पर दुल्हन को बिदा किया जाता है। दुल्हन प्रत्येक साथी सहेली से बड़े रोते गाते मिलती, अन्त में अपने घोटुल के प्रेमी से मिलती जिसके साथ वह गीकी पर सोती थी उसे कहती प्रेमी तुम अब मुझे भूल जा, मैं तो राही की मंजिल हूँ मेरा ठिकाना क्या मिलूं या न मिलूं बस मेरी यही तमन्ना है, यह नई सुबह तुम्हें मुबारक हो। शीघ्र ही कोई मेरे जैसी अच्छी-सी मोटियारी ढूंढ़ लेना। मेरी किस्मत खराब कि मेरा विवाह तेरे साथ नहीं हुआ। बड़ी ही हृदय विदारक स्थिति घोटुल में बन जाती है।

****

परिशिष्ट

१. घोटुल की शब्दावली

२. संदर्भ ग्रन्थ हिन्दी अंग्रेजी

३. चित्रावली

घोटुल की शब्दावली

अमी -	धवा का पेड़
अरूआ -	उल्लू
अटासारे -	एक विशेष वृक्ष या मार्ग
अलबेतू -	सुबह
अलवा-जलवा -	व्यर्थ की बातें (अपशब्द)
अकडाल -	जंगली सुअर
अजील -	रीछ
अर्री -	धूप या शान
आंचुलू -	गोंडी धोती (साड़ी)
आवा -	मां
आयापेकी -	जवान लड़की
आकी-	सूखे पत्ते
आंधरा -	अंधा
इंगे -	हाँ
इंगेयापो -	हाँ मां
ईतुमरा -	कुरूल का वृक्ष
ईपुर -	पसीना
उरई -	घास
एकदाना -	नाच या प्रथा
ऐटा -	केकड़ा
ओझा -	गुदने का काम करनेवाली एक जाति
कटकुल -	खटिया
कंटवक -	लकड़ी के जूते
करधनी -	कौड़ी निर्मित कमर में पहनने की माला
कक रास -	बड़ी तीतर
क[illegible]तेली -	शहद की मक्खी
कक[illegible]ना -	गाना
कारापाण्डुम -	फरवरी माह में मनाया जानेवाला मुड़िया त्योहार
कारा[illegible]ा -	फसल आने के समय मनाया जानेवाला त्योहार

किकिर-	बांस निर्मित वाद्य जिसे मुंह से बजाते।
कुन्हाल -	गली
कुदई /कुटकी -	स्थानीय मोटा अनाज
केकरेंग -	बांस निर्मित किकिर जैसा वाद्य
कोंसेसाल -	दो वर्ष पहले
कंघी मांगना -	प्रेम की शुरूवात करना
खरहरा -	झाड़ू
गायता -	ग्राम का मुखिया
गिकी -	चटाई, जिसे घोटुल की मोटियारी, अपने प्रेमी को भेंट स्वरूप देती है। या घोटुल में इसे बिछाकर प्रेमी के साथ सोती
गुदेगोर -	तम्बाकू की डिबिया
गेवेड़ू -	ग्राम की सीमा या शमशान
गेवडे -	देवता का चबूतरा
गेवड़ा -	सरहद
घटेबा -	एक गली या मृतशिशु
घोटुल -	युवागृह, कुमार गृह, मनोरंजन गृह जिसमें अविवाहित लड़के लड़कियां रात्रि में नृत्यगान, किस्से कहानियां और आराम करते हैं ।
घोंसना -	राख फैलाने का एक उपकरण
चपुड़े -	लाल चींटे
चक्रकोट -	बस्तर का पुराना नाम या चहरदीवारी
चार -	एक जंगली गोल आकार का काला फल। चिरौंजी
चिचोरी -	विनती
चिटकुल -	एक बांसनिर्मित वाद्य जो मुंह से बजाया जाता है
चैलिक -	घोटुल की लड़की का प्रेमी
छपिला -	स्थानीय लाल फूलों वाला एक वृक्ष
छानी -	बगल से
छित्ती -	इमली
छिन्दा -	गोंडी/मुरिया प्रेमकथा
जीवाल -	प्रेमी
जुहार -	घोटुल की मोटियारियों के प्रणाम करने का एक तरीका जिसमें मोटियारियाँ अपने चैलिक (प्रेमी) को चटाई देकर प्रणाम् करती

जगतीगाड़ा -	जगदलपुर का पुराना नाम
जोंदरा -	ज्वार
जोत -	लौ (दीपक या चिमनी की)
झोरिया -	घोटुल का एक पदाधिकारी जिसके जिम्मे घोटुल की सफाई सदस्यों से कराने की होती है।
टुंरा -	छोटा शिशु
टिगस्ते -	टेकड़ी
डगरपोल -	मोती, गुरियों, मूंगा या घास के बीजों की बनी माला, जिसे मोटियारियाँ अपने प्रेमी को भेंट स्वरूप देती हैं।
डागधर -	डाक्टर शब्द का अपभ्रंश रूप
डोगर या डोगुरू -	जंगल
ढढुआ -	काले मुंह का बंदर
तुमड़ा -	छोटा भाई
तम्बाकू मांगना -	बुरा इरादा करना
तापे -	पिता के लिए उपयोग में होनेवाला शब्द
ताती -	मित्र के लिए संबोधित शब्द
तिरतिखेरा -	सुबह का वक्त
तंगे -	भौजाई के लिए उपयुक्त होनेवाला शब्द
थानागुडी -	विश्राम गृह (रेस्ट हाऊस)
थोंड़ी -	बांस की बनी सुराही, जिसमें शराब लेकर लड़का, लड़की के दरवाजे पर जाकर अपना प्रेम प्रदर्शित करता।
दवार -	जंगल में लगनेवाली आग
दादाल -	दादा (सम्माननीय शब्द जो किसी वयस्क के प्रति कहा जाता
दायनी -	रस्सी
दीवा -	अस्थाई कृषि (शिफ्ट कल्टीवेशन का ढंग)
देपूड़ -	स्वर्ग
दोरसाया -	दफनाने की क्रिया
दोरीला -	एक प्रकार की सजा
धुईगा -	प्रेम जताने के लिए पहली बार तम्बाकू प्रेमी द्वारा मांगने पर
धुमकुरिया -	उराव जनजाति के घोटुलों के नाम

मडुमनरकी -	आधीरात
नरवा -	नदी
नरकोम -	सुबह
नकांग -	चावल
नचेड़ा-	छोटा
नेतनवार-	विवाह
नार-	गांव
नार-	स्त्री
नारायणदेव-	बिमारियों को दूर भगानेवाला देव इसकी प्रति वर्ष पूजा कर भैंसे या सुअर की बलि दी जाती
नियार-	पानी
नितमंद-	एक पैर पर खड़ी होना।
निकुनलेवाल वातोर नूनी-	हम तुम्हे लेने आए हैं
नुका -	चावल
नेर्लेज -	चन्द्रमा
पठिया -	सुअर का बच्चा
पन्ने -	मेंढक या कल, परोस या बड़ा पेटवाला
पड़िया -	घोटुल के चेलिक (प्रेमी) द्वारा घांस या लकड़ी की बनी कंघी जिसे चेलिक अपनी मोटियारी (प्रेमिका) को भेंट स्वरूप देते हैं।
पायल -	दोपहर
परगना मांझी -	दूसरे क्षेत्र का मुखिया
परगौनी-	गोंडों के विवाह
पाण्डुम -	जंगल का देवता
पाण्डुम -	मार्च में मनाया जानेवाला त्योहार, इसके पूर्व महुआ फूल बिनना निषेध है।
पिनरे -	नरसो या आनेवाला कल
पियाल -	दिन
पीहू -	एक पक्षी का नाम
पेंड़गी -	जवान लड़की जिसने घोटुल में प्रवेश लिया
पेंड़गा -	जवान लड़का जिसने घोटुल में प्रवेश लिया
पेरमा -	ग्राम के धार्मिक कार्य करानेवाला

पेडगी -	नवजात शिशु या कन्या
पेन्डुल -	विवाह
पेदा.-	गांव का मुखिया
पेरंगा -	चुगी
पैंढू -	रखैल
पैकीमन -	लड़की
पोरद -	सूर्य
पोड़द -	सूर्य
पोंयार -	सास
पोरोभूम -	आकाश
पोरोभूम -	क्षितिज
पुंगार -	जंगली फूल
पंचतौर -	जाति पंचायत का मुखिया या जाति सरपंच
बगरा-	गिरा
बरियापेन -	एकदेवता
बामटा -	एक प्रकार की गोंडों की प्रचलित गली
कीर -	भाई
बोदाल -	भैंस
बौरा	पागल हो जाना
भगेला	कर्ज पटाने के बतौर रखा गया नौकर
भूमकाल	विद्रोह
मर्का	आम
मलगा	घोटुल की छत का तखता जिस पर घुडस्वार, हाथी, सेना, स्त्री पुरुषों के चित्र खुदे रहते ।
महल	घोटुल
मातुल	गांव की देवी जिसकी पूजा प्रति वर्ष की जाती
माटा	लाल चींटा
माहूर	जहर
मुरगुल	प्रातःकाल का नाश्ता जिसमें बासी चावल एवं इमली की चटनी सम्मिलित होती
मुलावे	शाम
मुरदार	नपुंसक आदमी

मूंदी मांगा	यात्रा, बाजार के समय गाया जानेवाला प्रचलित लोकगीत
मेटा	जंगल
मोईदो	दूल्हा या पति के अर्थ में संबोधित होनावाला शब्द
मोटियारी	घोटुल की लड़की के लिए उपयुक्त होनेवाला शब्द जिसका अर्थ है प्रेमिकाएं ।
याप्ते	मां के लिए उपयुक्त होनेवाला शब्द
याप्ते	घोटुल में एक ही चटाई पर प्रेम के साथ सोने वाली मोटियारी (प्रेमिका)
येंदमा	क्रोध में उपयोग में होनेवाला शब्द जिसका अर्थ है "बंद करो" ।
रूख	स्थानीय एक पेड़ का नाम।
लमझेना	लड़की के घर नौकर के रूप में रहकर सेवा करना व वधू मूल्य चुकाना पश्चात वही दामाद बन जाता।
लइकी लइका	लड़की लड़का
लहकोरी	सियार
लांदा	शराब
लोन	घर
सर्री	रास्ता
सलदारी	हत्यारी
साईगुती	घोटुल के साथी या घोटुल के सदस्य
सारीजापा -	अन्न का पतला पेज जो वर्षाकाल या भूखमरी के समय भूख शांत करने के लिए पिया जाता है।
सिरहा	जादू टोने का काम करनेवाला
सिरदार	घोटुल का मुखिया
सिल्वी	होंठ
सिट्टी	कुत्तिया
सिटी	लाल रंग का एक फूल
सुरजाल	सूअर
सोरी	बाघ
सेतो	बूढ़ी
हनगुण्डा	मृतक संबंधी कर्म करनेवाला
हरपूज	सांभर के चमड़े का बना हाथ में पहनने का मोजा
हातुरढोल	मृत्यु होने पर बजनेवला संस्कार वाद्य, जिसे सुनकर मृतक में सब उपस्थित होते
हेलाड़	बटन

संदर्भ ग्रंथ सूची
हिन्दी

१.	अवस्थी आर.	" जंगल के फूल " राजपाल एन्ड सन्स दिल्ली १९७९ ।
२.	उपाध्याय रामनारायण	निमाड़ी और उसका लोक साहित्य, उषा प्रकाशन घर ललितपुर, झांसी, उत्तरप्रदेश ।
३.	केला बी.डी.	" हमारी आदिम जातियां " १९५० भारतीय ग्रन्थ माला, दारागंज, इलाहाबाद।
४.	कौशल कुमार राय	"वन्य समाज में अपराध और प्रथा "म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल १९७१।
५.	कौशिक विश्वम्भरनाथ शर्मा	"संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियां"
६.	दीक्षित ब्रह्मदत्त	"वनवासी भारत" पृष्ठ २३ पर्ण कुटीर प्रकाशन, नागदा
७.	दीक्षित प्रकाशचन्द्र	" भारतीय सामाजिक संस्थाएं " रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा , १९६३।
८.	डा. एस. सी. दुबे	" मानव और संस्कृति" राजकमल प्रकाशन, दिल्ली , १९६०
९.	नेहरू जवाहरलाल	" आदिवासी " १९५२ में दिया गया भाषण का अंश, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, १९५९ ।
१०.	नायक टी.बी.	" बारह भाई बिंझवार" म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल १९७२।
११.	परमार एस .	" भारत के लोक नृत्य " राजपाल एन्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली , १९७८।
१२.	मजूमदार डी.एन	" भारतीय संस्कृति के उपादान" १९५८,एशिया पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली, १९५८।
१३.		"बस्तर के बदलते स्वरूप" सूचना प्रकाशन विभाग, म. प्र. शासन, १९६३ ।

अंग्रेजी ग्रन्थ

१.	ए. सी. हडन	"नाईट कल्ब्स आफ ट्राईब्ल पीपुल"
२.	आयर. एल. के.	"सेक्स मेरेज इन ट्राईब" १९४६, यूनिवर्सिटी ऑफ, कलकत्ता।
३.	एल्विन बेरियर	"ए न्यू डील फार ट्राइबल इंडिया" पृष्ठ ३८४, आक्सफोर्ड युनिवरसिटी, प्रेस, लंदन ।
४.	एल्विन बेरियर	"दी मूरिया एन्ड़ देयर घोटुल", आक्सफोर्ड यूनिवरसिटी प्रेस, लंदन १९४७।
५.	ग्रिर्यसन डब्लू. व्ही.	"दी मोरिया गोन्ड ऑफ बस्तर" १९३८।
६.	होबॅल ई, एडसन्स	"मैन इन प्रिमेटिव वर्ड, एस.सी.जी २१३ हिल्स बक कम्पनी लंदन।
७.	पटेल.एम. एल	"गोटूल फार्म कापरेटीव" पीपुल पब्लिर्शिग हाऊस, दिल्ली १९६९ ।
८.	रसल एन्ड़ हीरालाल	"ट्राइब कास्ट आफ सेन्ट्रल इंडिया", मेकमिलन कम्पनी लंदन १९१६.

***

मोटियारियां घोटुल की सफाई करते हुए

गले में मूंगा मनका की माला, गहने पहने हुए

सिर पर पड़िया (कंघी) फूल लगाये हुए

घोटुल की मोटियारी का केश विन्यास

शृंगार और लज्जा

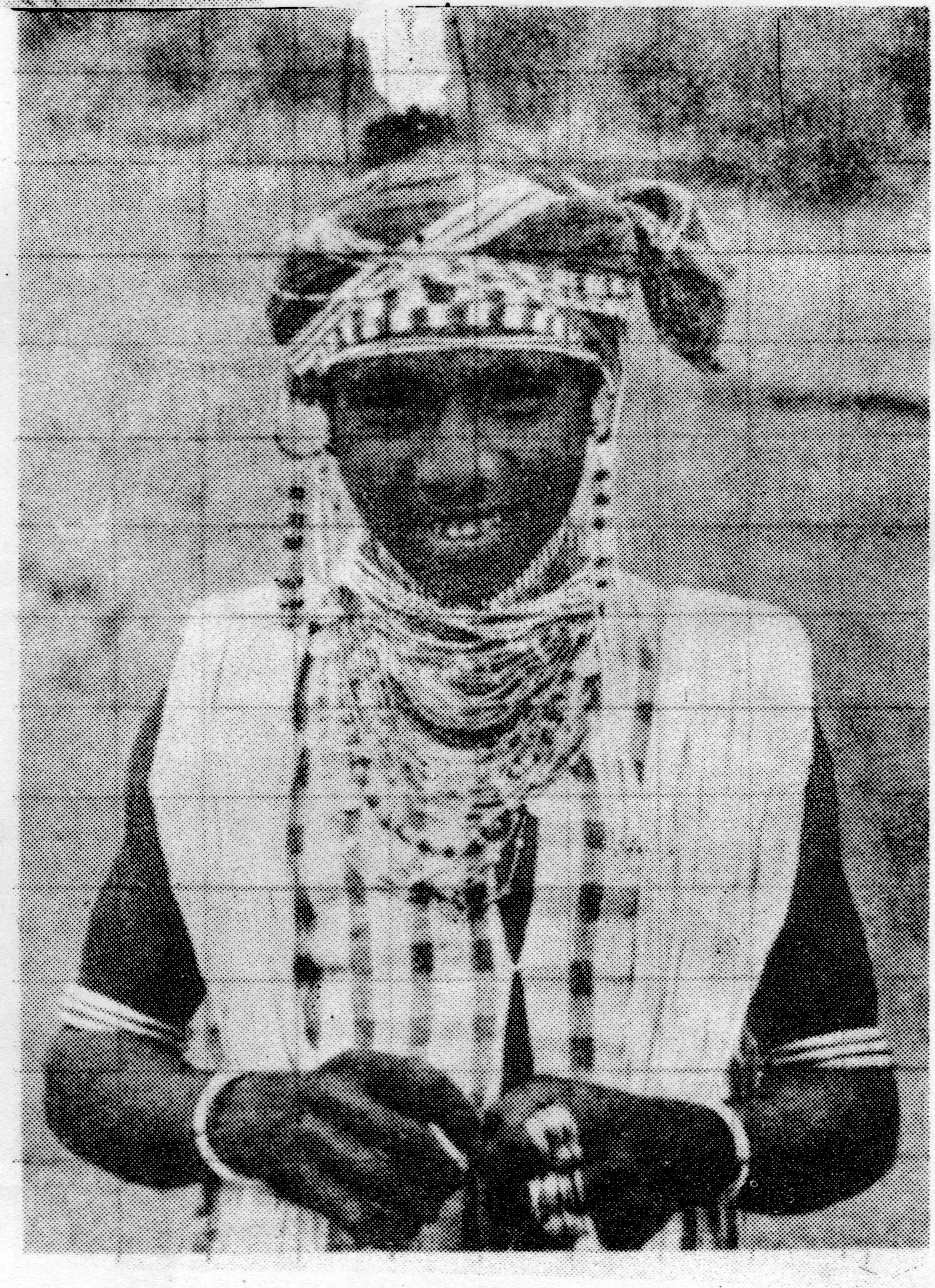

शृंगार और प्रतीक्षा

दूल्हे को गोदी में उठाकर एक बालिका
कन्यापक्ष के घर ले जाते हुए

घोटुल के चेलिक हाट जाते हुए

घोटुल केदो प्रेमी चेलिक-मोटियारी (मुड़िया जनजाति)

दम्पत्ति-विवाह के वेष में

शिकार का लक्ष्य

नृत्य को तैयारी
घोटुल का आदिवासी नृर्तक

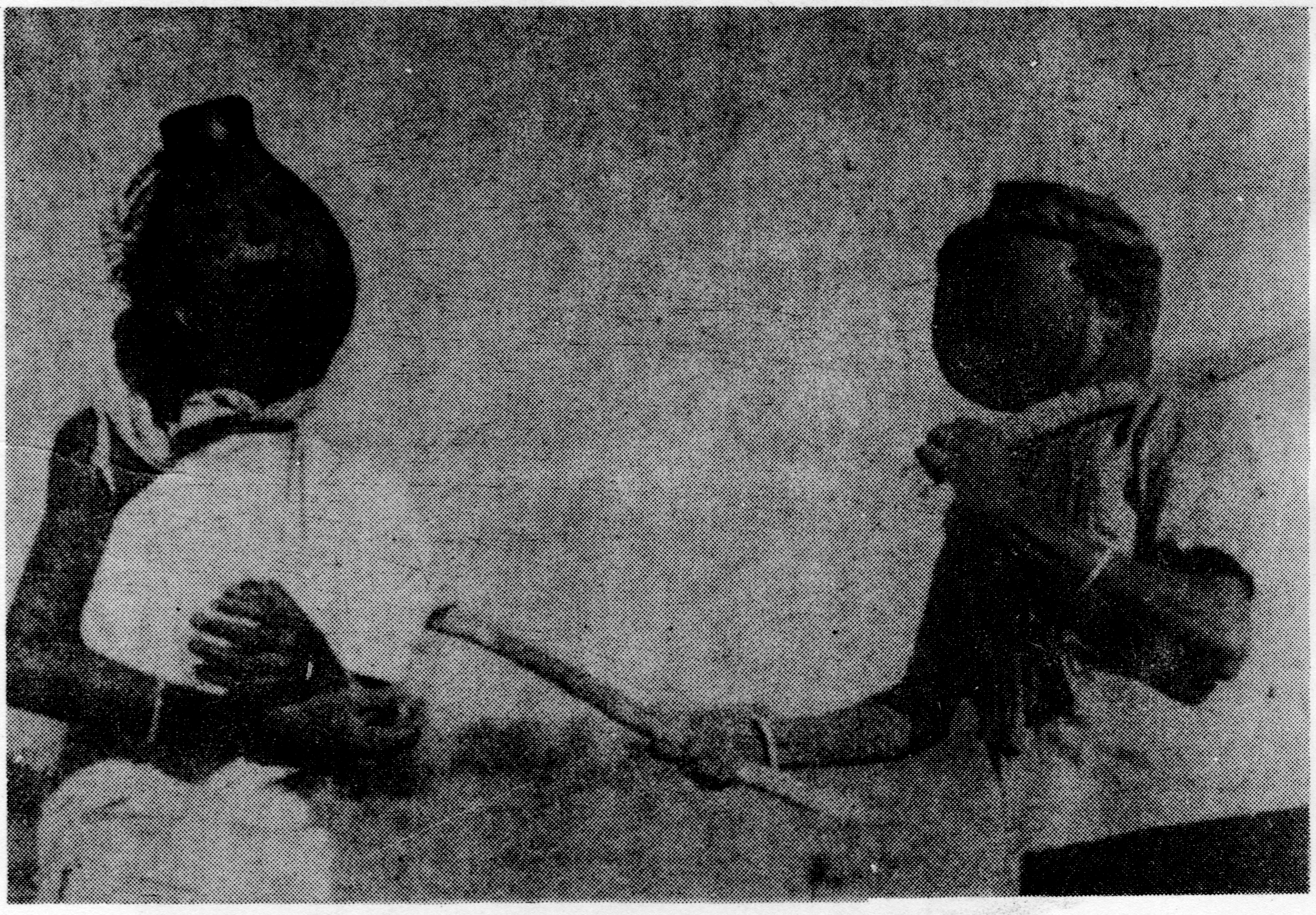

डंडा नृत्य के पूर्व में

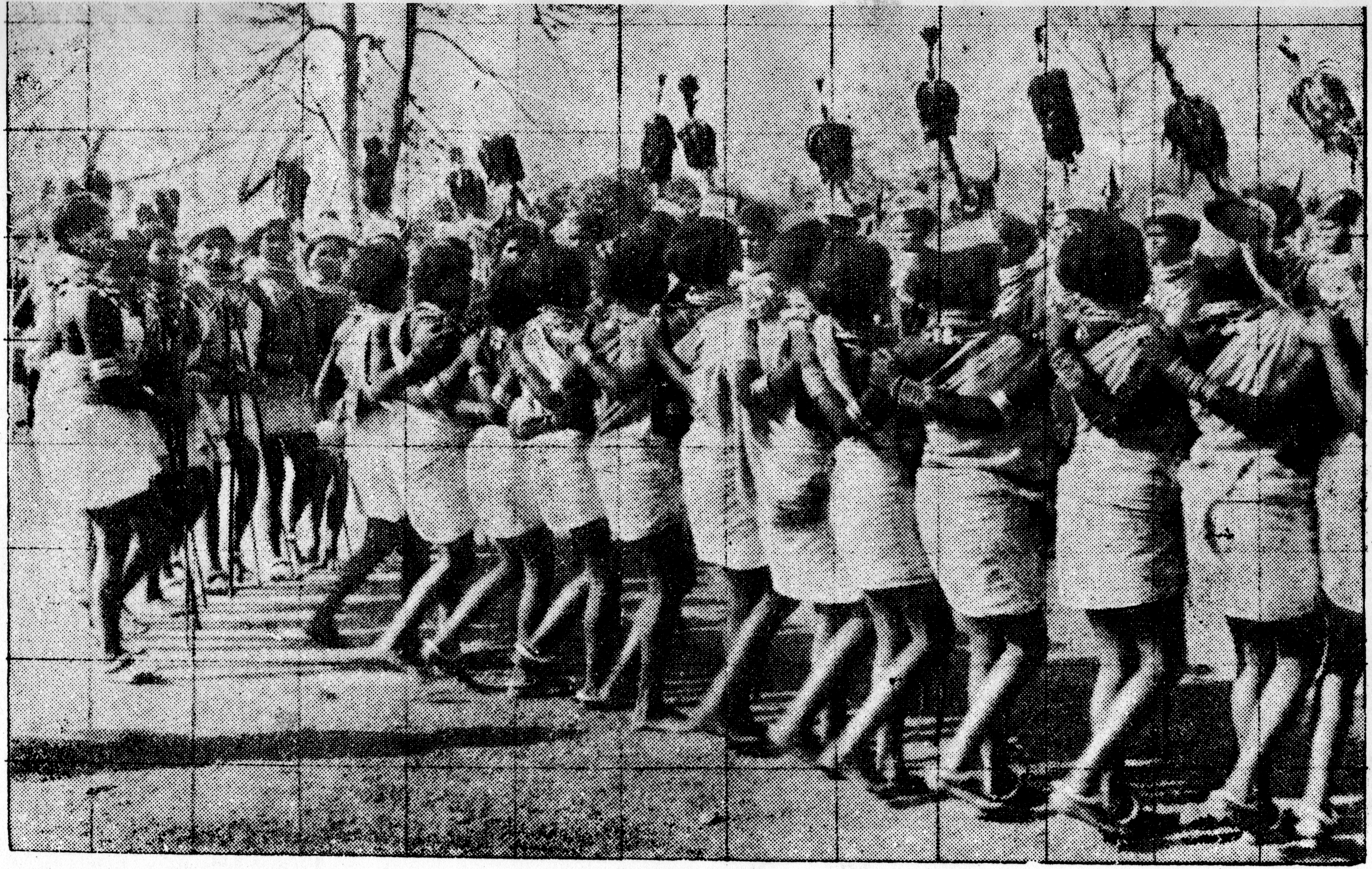

करमा-नृत्य

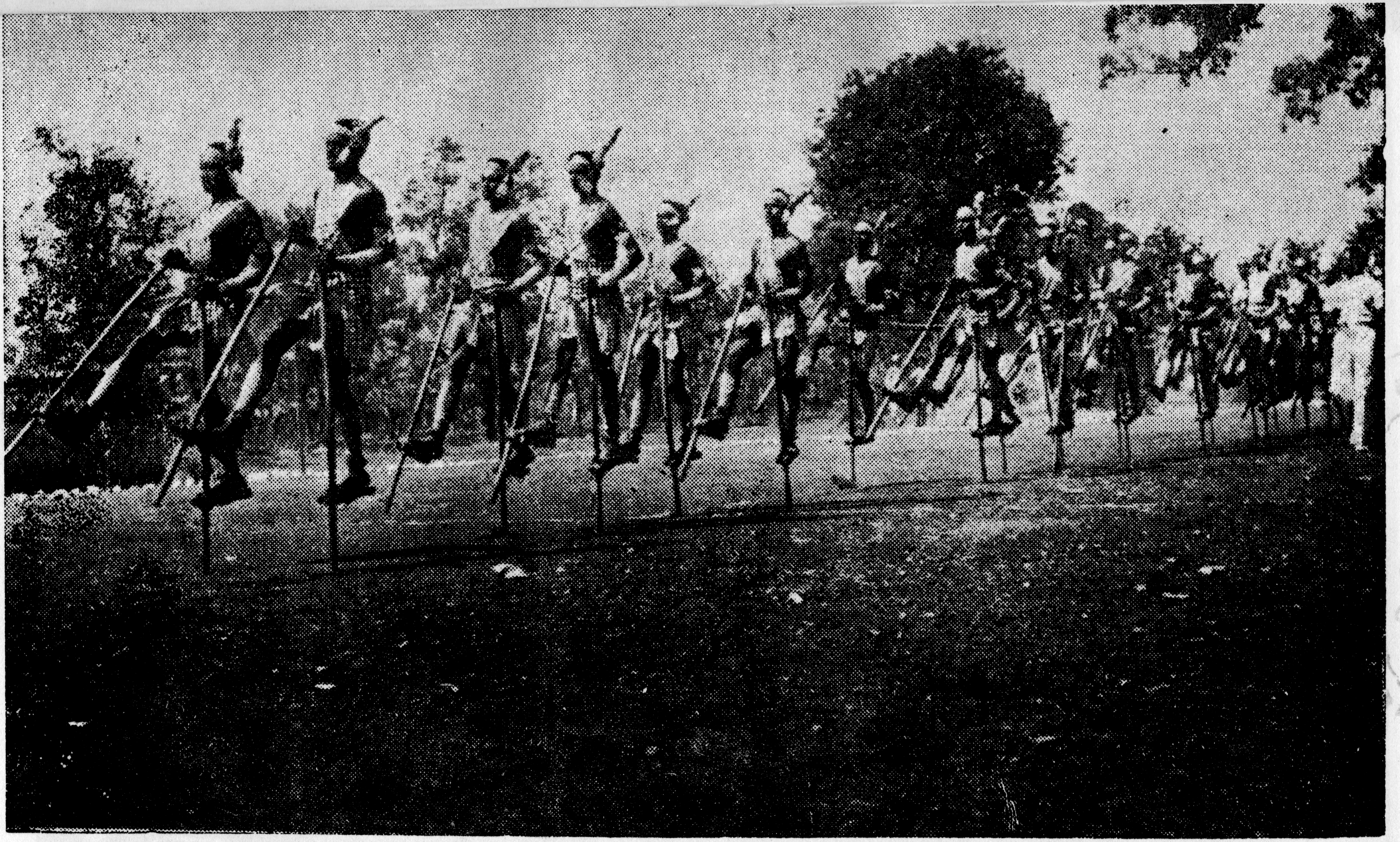

गेंडी खेल